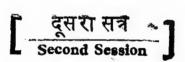
लोक-सभा वाद-विवाद का संक्षिप्त अनूदित संस्करण

SUMMARISED TRANSLATED VERSION OF 6th LOK SABHA DEBATES







बिंड 4 में श्रंक 21 से 30 तक हैं] Vol. IV contains Nes. 21 to 30

> लोक-सभा सचिवालय नई दिल्ली

LOK SABHA SECRETARIAT
NEW DELHI

मृत्य । चार रुपये

Price : Four Rupees

विषय-सूची CONTENTS

श्रंक 11, सोमवार, 11 जुलाई, 1977/20 ग्राषाढ़, 1899(शक)

No. 11, Monday, July 11, 1977 Asadha 20, 1899 (Saka)

विषय Subject प् ^{रुठ} ा	ages
सदस्य द्वारा शपथ ग्रहण Member Sworn	ı
प्रश्नों के मौखिक उत्तर Oral Answers to Questions	
तारांकित प्रश्न संख्या 405 से 407, *Starred Questions Nos. 405 to 407, 409 and 409 स्रौर 410	-14
ग्रन्प सूचना प्रश्न संख्या 15 Short Notice Question No. 15 14-	.20
प्रश्नों के लिखित उत्तर— Written Answers to Questions—	
तारांकित प्रश्न संख्या 408 ग्रीर 411 से 424 ग्रतारांकित प्रश्न संख्या 3013 से 3047, 3049 से 3077, 3079 से 3089, 3091 ग्रीर 3093 से Starred Questions Nos. 408 and 411 to 424	
3146 सभा पटल पर रखे गये पत्र Papers laid on the Table	12
जमना दास माधवजी एण्ड कम्पनी, Question of Privilege against Shri Kishore बम्बई के श्री किशोर जे० तन्ना के विरुद्ध विशेषाधिकार का प्रश्न Company, Bombay	2
श्रनुदानों की मांगें, 1977-78 Demands for Grants, 1977-78	
उद्योग मंत्रालय Ministry of Industry—	
श्री जार्ज फर्नान्डिज Shri George Fernardes . 113—19) .
श्रम मंत्रालय Ministry of Labour—	
श्री वसंत साठे Shri Vasant Sathe 120—22	:
श्री रामधारी शास्त्री Shri Ram Dhari Shastri 128—29	

^{*ि}कसी नाम पर श्रंकित यह + इस बात का द्योतक है कि प्रश्न को सभा में उस सदस्य ने वास्तव में पूछा था।

^{*}The Sign+ marked above the name of a Member indicates that the question was actually asked on the floor of the House by him.

विषय	Subject		पृष्ठ, Pages		
श्री उग्रसेन	Shri Ugrasen .		. 129-30		
श्रीमती ग्रहिल्या पी० रांगनेकर	Shrimati Ahilya P. Rangneka	r .	. 130-31		
श्री जी० नरसिम्हा रेडडी	Shri G. Narsimha Reddy		. 131—32		
श्रीमती चन्द्रावती	Shrimati Chandravati .		132		
श्री पी० त्यागराजन	Shri P. Thiagarajan .		132-33		
श्री वाई० पी० शास्त्री	Shri Y. P. Shastri .		133 —34		
श्री वयालार रवि	Shri Vayalar Ravi .		134—36		
प्रो० शिब्बनलाल सक्सेना	Prof. Shibban Lal Saksena		136-37		
श्री ग्रहसान जाफरी	Shri Ahsan Jafri .		. 137—3 8		
श्री मनोहर लाल	Shri Manohar Lal		138—3 9		
श्री के० ए० राजन	Shri K. A. Rajan .		. 139—40		
श्री चित्त बसु	Shri Chitta Basu .		. 140-41		
श्री राम ग्रवधे्श सिंह	Shri Ram Awadhesh Singh		142		
श्री के० राममूर्ति	Shri K. Ramamurty .		142-43		
श्री हरिकेश बहादुर	Shri Harikesh Bahadur .		143		
श्री एन० श्रीकान्तन नायर	Shri N. Sreekantan Nair	٠	. 143-44		

लोक सभा वाद-विवाद (संक्षिप्त ग्रनूदित संस्करण)

LOK SABHA DEBATES (SUMMARISED TRANSLATED VERSION)

लोक सभा

LOK SABHA

सोमवार, 11 जुलाई, 1977/20 श्राषाढ़, 1899 (शक)

Monday, July 11, 1977/20, Asadha 1899 (Saka)

लोक सभा ग्यारह बजे समवेत हुई।

The Lok Sabha met at Eleventh of the Clock

ग्रध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए

MR. SPEAKER in the Chair

सदस्य द्वारा शपथ-ग्रहण

MEMBER SWORN

श्री निरंजन प्रसाद केशवानी (बिलासपुर)

प्रश्नों के मौखिक उत्तर

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Foreign Aid to check Rajasthan Desert

- *405. Shri Lalji Bhai: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:
- (a) whether any assistance from other countries or from U.N.O. has been made available to implement the scheme to contain the march of desert of Rajasthan; and
 - (b) if so, the facts in this regard?

The Minister of Agriculture & Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala): (a) No, Sir.

(b) Does not arise.

Shri Lalji Bhai: Has government formulated any scheme for checking the advance of desert in Rajasthan? I do not say whether foreign aid may be procured or not but whether government are going to formulate such a scheme?

Shri Surjit Singh Barnala: There are a number of schemes in this regard. A drought prone programme is already under was in nine districts. Rs. 17 lakhs were spent during Fourth Plan, Rs. 14:47 crores were spent thereafter and another sum of Rs. 39.90 lakhs is likely to be spent thereon.

Shri Lalji Bhai: May I know whether government would seek assistance from U.N.O. or any foreign agency for the purpose and if not, the reasons therefor?

Shri Surjit Singh Barnala: Many schemes are in progress for reclamation of desert land in Rajasthan. Some schemes are being implemented jointly by Government of India and the State Government and assistance is being taken from I. D. A. for some of the schemes. One of these schemes is Canal Development Project for which an amount of Rs. 83 million has been earmarked by the I. D. A.

Shri Jagdish Prasad Mathur: May I know whether there is any coordination between the arid zone development scheme being taken up by the ministry of Defence at Jodhpur and the other schemes being implemented by you?

Shri Surjit Singh Barnala: I require notice for it so that I may collect the required information.

Shri Om Prakash Tyagi: There is only one country in the world, viz., Israel which has succeeded in solving the problem of desert. Have any efforts been made to obtain. information regarding checking the desert and making it cultivable in Israel through U. N.O. since we do not have direct relations with Isarel?

Shri Surjit Singh Barnala: In view of our relations with Israel direct efforts have not been possible but information is eventually passes on to the other countries. Efforts are being made to utilise the information available to us, particularly regarding reclamation of desert area.

Shri Chaturbhuj: You have spent crores of rupees on checking the desert. May I know the area which has been saved from the advance of desert with this expenditure?

Shri Surjit Singh Barnala: Many areas have been covered. Work is in progress in canal areas, catchment areas. Afforestation work is being done and new forests are being planned. It has helped in checking the desert.

Shri Balbir Singh: What is the report of the Government? Is the area where desert has advanced more or less than the area protected? Was any offer made by Israel to help India in this regard and did government made efforts to get their assistance?

Shri Surjit Singh Barnala: As already stated efforts are afoot to check the advance of desert. As regards the offer by Israel I do not have any information with me at the moment.

Shri Vinayak Prasad Yadav: Is there any special scheme of Government to bring under the plough cultivable land lying vacant now?

Shri Surjit Singh Barnala: It is covered under the drought prone areas, canal command area development projects, desert project etc. All these are aimed at this very purpose.

नई दिल्ली स्थित इंडियन ऋष्टस सोसाइटी द्वारा समझौते का उल्लंघन

- *406. श्री कंवर लाल गुप्त : क्या निर्माण ग्रीर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रीर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) इंडियन काफ्ट्स सोसायटी के जिसने 1975-76 में विन्डसर प्लेस, नई दिल्ली में एक प्रदर्शनी आयोजित की थी, पदाधिकारी कौन कौन हैं ;
- (ख) सोसायटी द्वारा लाइसेंस फीस ग्रदा न करते ग्रौर बैंक प्रत्याभूति न देने के कारण उस पर क्या कार्यवाही की गई है;
- (ग) लेखा-परीक्षित लेखे न दिखाने सिहत समझौते के उल्लंघन के कारण सरकार द्वारा सिमिति के विरुद्ध क्या कार्यवाही की गई है;
- (घ) कितनी धनराणि एकद्र की गई थी श्रौर कितनी राणि प्रधान मंत्रीं कोष में जमाः की गई है; श्रौर

(ङ) वह कौन से विशिष्ट व्यक्ति हैं जिन्होंने सिमिति को जमीन आवंटित करने की सिफारिश की ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) सोसायटी ने 1973 की गवर्निंग काउन्सिल के सदस्यों के नामों की एक सूची दिल्ली के सोसायटी रिजिस्ट्रार को प्रस्तुत की । 1975-76 की पदाधिकारियों की सूची प्रस्तुत नहीं की गई थी। सोसायटी के नाम के छिपे पत्न पर, इसने 16 ग्रक्तूबर, 1975 को भूमि ग्रावंटन के लिए ग्रनुरोध किया था।

निम्नलिखित पदाधिकारियों के नाम दिए गए थे:--

- 1. श्रीमती कैलाश कपूर-- ग्रध्यक्षा
- 2. मेजर कपिल मोहन रू_ उपाध्यक्ष
- 3. श्री राधारमण
- 4. श्री एच० एन० राठी-- महासचिव
- 5. श्री एम० एल० गोयल रू__
- 6. श्री सागर सूरी \int सचिव
- 7. श्री सुधीर सरीन--

कोषाध्यक्ष

- (ख) तथा (ग). चूंकि सोसायटी ने ग्रावंटन की शतों का पालन नहीं किया, ग्रतः सोसायटी द्वारा स्थान पर कब्जा करना ग्रवंध था। सोसायटी के खिलाफ ग्रावश्यक कार्यवाही की जा रही है।
- (घ) सोसायटी ने प्रधान मंत्री राहत कोप में कोई राशि जमा नहीं की है। सोसा-यटी ने कितनी राशि एकत्र की, इसकी जानकारी सरकार को नहीं है।
 - (ङ) इस सम्बन्ध में बताने के लिए रिकार्ड में कुछ भी नहीं है।

श्री कंवर लाल गुप्त: सूची में दिए गए नामों में हैं— भूतपूर्व मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री राधारमण, मारुति के निदेशक श्री कपिल मोहन, मारुति के एक अन्य निदेशक श्री सागर सूरी, श्री कैलाश कपूर का हो सकता है श्री यशपाल कपूर से कोई रिस्ता हो, मुझे मालूम नहीं है। यह लाखों रुपयों के गवन अगैर धांधली का मामला है। चूंकि यह एक आपराधिक मामला है, वया उनका विचार पुलिस में मामला दर्ज करने का है ताकि उनके विरुद्ध कार्यवाही की जा सके। जब सोसायटी ने अवैध रूप से कब्जा किया था, तो सरकार ने उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही क्यों नहीं की ?

श्री सिकन्दर बस्त: विधि मंत्रालय से परामर्श किया गया है। उन्होंने इस बात की पुष्टि की है कि समिति का कब्जा अवैध था। इस अपराध के लिए सोसायटी के विरुद्ध कार्य-वाही की जा रही है। सोसायटीज के पंजीकरण सम्बन्धी अधिनियम के अन्तर्गत कोई दाण्डिक कार्यवाही करना सम्भव नहीं है। सोसायटी को 1 रुपया प्रति मास के लाइसेंस शुल्क पर जमीन दी गई थी, जो उसने जमानहीं की।

But regular rent for allotment of land for an exhibition is Rs. 1.88 per sq. yd. per month which will be recovered from them. If they do not fulfil certain other conditions, they would

be charged at the rate of Rs. 5 per month. The total amount recoverable from them on these two counts works out to Rs. 2,19,184.

Shri Kunwar Lal Gupta: The hon. Minister has not replied to my question. I think that one of the conditions stipulated was that the entire sale proceeds of tickets would be deposited into the P. M.'s relief Fund. You have not stated the amount received to-date.

Shri Sikandar Bakht: I have said that we did not know.

Shri Kunwar Lal Gupta: You have said that you were not aware of the amount received, although more than a year has passed since the exhibition was out. They have misappropriated the money which they were required to deposit into the Prime Minister's relief Fund in accordance with the terms of the agreement and they have also submitted no account. They did not comply with the other conditions as well. The opinion of the Ministry of Law might have been obtained at a time when they were a privileged class. When did you initiate action either on receipt of notice of this question or some action was taken before your assumption of office as Minister? May I know the rules regulating the allotment of land to such societies? Why no action was taken against the officers who allotted the land to the society without a bank guarantee?

श्री सिकन्दर बर्तः माननीय सदस्य ने अनेक प्रश्न पूछे हैं। मैं उनका एक-एक करके जवाब द्गा। सबसे पहले यह पूछा गया है कि वह कौन-सी परिस्थितियां थीं जिनके अन्तर्गत भूमि दी गई थी, वह अनेक थीं,

The major condition was that licence fee should be Re. 1/- per month and the other major condition was that they would submit bank guarantee on the entire amount at the rate of Rs. 5/- per square yard. The third condition was that they would submit the accounts within one month after the closing of exhibition and this sum would be deposited in the Prime Minister's Relief Fund.

There are other minor conditions and they have not fulfilled even a single condition out of them. Every type of action is being initiated against them.

I would like to tell them that this entire land was given to D. D. A. for care and maintenance by the Land and Development Officer in 1974. They applied for land for organising an exhibition on 16th October, 1975. They were not given any kind of authority on behalf of D. D. A., or L. & D. O. They took possession of the land, but a letter was sent to D. D. A. from the Ministry on 11th Nov. 1975 that they have no objection to the land being given to them on certain conditions from 20th October, 1975 to 15th January, 1976. In a way, this was meant to regularise the possession of land. It is a fact that this was done after they took possession of the land. So they continued to be in possession of the land and we presume that exhibition ended on the 30th April and the letter of its regularisation was received on the 7th May which was for regularising the possession.

I would like to say that different aspects such as unauthorised possession of the land and the action taken against the officers are being looked into.

Shri Kanwar Lal Gupta: You have said that the possession was taken without permission. I would like to know the reasons for which action is not being taken against those officers who did not take action in the matter. The second point is that from which date action has been initiated against those officers, whether it was initiated before or after you assumed charge of the Ministry.

Sari Sikandar Bakht: I can only say that action is being taken. I do not remember the date in this regard.

एक माननीय सदस्य: वह प्रश्न का उत्तर देने से बच रहे हैं।

श्री सिकन्दर बख्त : नहीं, ऐसी बात नहीं है । वास्तव में मुझे तिथि के बारे में जान-कारी नहीं है । श्री ज्योतिर्मय बसु: माननीय मंत्री ने श्रीमती कपूर का जिक्र किया है। क्या वह सभा को बतायेंगे कि श्रीमती कपूर क्या यशपाल कपूर की पत्नी हैं जो कि देश की भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के बहुत ही विश्वासपात्र थे ?

श्री सिकन्दर बख्त : मैं यशपाल कपूर का पता लगा रहा हूं ग्रीर यह पता लगाऊंगा क्या श्रीमती कपूर उनकी पत्नी हैं ?

Shri Ugrasen: The honourable Minister has said that he did not know the amount of money that was to be deposited in the Prime Minister's Fund. I want to know the amount of profit earned from the exhibition, the profit which was to be distributed. What was the total amount earned from the exhibition?

Shri Sikandar Bakht: I have told you that I am not aware. But Government is trying to ascertain the information in regard to that money.

Shri Ugarsen: Have they been asked to submit accounts?

Shri Sikandar Bakht: They have been asked to submit accounts which have not been submitted so far.

Shri Ugrasen: If accounts have not been submitted, why action is not being taken against them?

Shri Sikandar Bakht: Action is being taken.

श्री के० सूर्यनारायण: जहां तक भूमि हिश्याने का सम्बन्ध है, मैं जानना चाहता हूं कि क्या इस सम्बन्ध में किसी ग्रिधकारी ने कोई ग्रापित्त उठाई है ग्रगर उठाई है तो उस सम्बन्धित मंत्री की इसके प्रति क्या प्रतिक्रिया थी जो उन दिनों इस मंत्रालय के प्रभारी थे?

श्री सिकन्दर बख्त: तब बहुत देर हो चुकी थी जबिक 2 जनवरी, 1976 को दिल्ली विकास प्राधिकरण ने सोसायटी को पत्न लिखा कि उन्होंने भूमि ग्रावंटन के लिए निर्धारित किसी भी शर्त का पालन नहीं किया है ग्रौर ग्रब उन्हें उन शर्तों का पालन करना चाहिये। तब भी सोसायटी ने कुछ नहीं किया।

Shri D. N. Tiwari: It is very surprising and matter of regret that a minister of the Government of India is saying that somebody occupied public land without its being duly allotted to him and continues to be in possession of that for months together and that place is also not an unknown place but it is situated on the Windsor Place, where the bungalows of Ministers and Officers are located. I want to know whether the power of the Government is confined only to demolition of the Jhuggi-Jhonpries and whether Government have no powers over the persons who are considered to be influential and occupy the land without its being allotted to them. Whether efforts have been made to evict them; if not, the reasons therefor?

Shri Sikandar Bakht: As far as the Government concract, it is a continuous process. With the permission of the House, I would submit that myself and this Government were not in power at that time. It is difficult for me to own responsibility for this on behalf of the previous Government. I have placed the facts of the case before you. Action would be taken against the persons responsible for this lapse.

श्री शम्भुनाथ चतुर्वेदी: वया मैं जान सकता हूं कि अगर नियमों के अनुसार यह कब्जा अवैध था तो सोसायटी को अतिकामक माना जाये और आपराधिक अतिकमण के लिए उस पर मुकदमा चलाया जाये ।

श्री सिकन्दर बख्त : ग्रब उन्हें ग्रितिकामक नहीं समझा जा सकता है क्योंकि यद्यपि विलम्ब से ही सही, 20 श्रक्तूबर से 30 श्रश्रैल, 1976 तक के उनके कब्जे के बारे में उसे एक पत्न लिखा जा चुका है।

Shri Ram Naresh Kushwaha: I want to know whether the liberal attitude adopted in regard to allotment of land i.e. regularising of unauthorised possession of land and not conducting investigations into the irregulatities committed in this regard, would also be adopted in the case of places which are in possession of poor people and whether Jhuggi-Jhonpries of the poor dwellers would also be regularised?

श्री सिकन्दर बख्त: इसका प्रश्न के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।

Shri Yagya Datt Sharma: There are about so members in the House who do not have residential accommodation because the houses meant for them are under unauthorised possession. Whether the honourable Minister would take interest in getting these houses vacated by terminating the unauthorised possession thereof.

श्री सिकन्दर बख्त : इसका प्रश्न के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है ।

Shri Yagya Datt Sharma: Mr. Deputy Speaker Sir, I seek protection. The question is about unauthorised possession and my question is about it.

उपाध्यक्ष महोदय है इसका प्रश्न से सीधा सम्बन्ध नहीं है किन्तु माननीय सदस्य का प्रश्न नोट कर लिया गया है ।

युरोपीय म्राथिक समुदाय पिश्चमी देशों से "बटर म्रायल"

- 407. डा॰ मुरली मनोहर जोशी: क्या कृषि श्रीर सिवाई मंत्री यह बताने की कृषा करेंगे कि:
- (क) क्या यह सच है कि भारतीय डेरी निगम को यूरोपीय द्राधिक समुदाय ग्रथवा कुछ पश्चिमी देशों से उपहार के रूप में भारी माता में 'बटर ग्रायल' प्राप्त हुग्रा है ;
- (ख) यदि हां, तो उन देशों के नाम क्या हैं ग्रौर प्रत्येक देश में से 1975, 1976 ग्रौर 1977 में कितनी माला में बटर ग्रायल प्राप्त हुग्रा ग्रौर यह बटर ग्रायल किन शर्तों पर प्राप्त हुग्रा;
- (ग) क्या मदर डेरी द्वारा पहले 'बटर ग्रायल' का पांच किलो का डिब्बा 70 रुपये में बेचा जाता था ग्रीर ग्रब इसका मूल्य बढ़ा कर 85 रुपये कर दिया गया है ; ग्रीर
 - (घ) यदि हां, तो मूल्य बढ़ाये जाने के क्या कारण हैं ?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला) : (क) भारतीय डेरी निगम को यूरोपीय ग्राधिक समुदाय से बटर ग्रायल की एक खेप उपहार-स्वरूप प्राप्त हुई है ।

(ख) बटर श्रायल की सप्लाई यूरोपीय श्रार्थिक समुदाय से हुई थी न कि यूरोपीय श्रार्थिक समुदाय के अन्तर्गत श्रलग श्रलग देशों से। यूरोपीय श्रार्थिक समुदाय से वर्ष 1974-75 में 2590 मीटरी टन बटर श्रायल उपहार स्वरूप प्राप्त हुआ था। श्रन्य 3,000 मीटरी टन बटर श्रायल शीघ्र ही प्राप्त होने की श्राशा है।

इसे यूरोपीय आर्थिक समुदाय के खाद्य सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत सरकार को उपहार के रूप में दे दिया गया है तथा बटर आयल की बिक्री से होने वाली आय को डेरी विकास सिरयोजनाओं के लिये काम में लाया जायेगा।

(ग) जी हां।

(घ) इस नए उत्पाद के लिए उपभोक्ता की रुचि का पता लगाने के लिए बटर म्रायल का मूल्य शुरू में कम रखा गया था। बाद में गोदामों में भर लेने तथा घी में मिलावट करने की कु-प्रवृत्तियों से बचने के लिये खाद्य तेल म्रौर घी के प्रचलित मूल्य को ध्यान में रखते हुए मूल्य में वृद्धि कर दी गई थी।

डा० मुरली मनोहर जोशी: माननीय मंत्री ने जो वक्तव्य दिया है, उससे सम्बन्धित बड़े ही महत्वपूर्ण प्रश्न उभरते हैं। पहली बात यह है कि वह कहते हैं कि यह बटर आयल उपहार स्वरूप प्राप्त हुआ है। क्या मैं यह जान सकता हूं कि जब यूरोपीय आर्थिक समुदाय ने इसे हमें उपहार स्वरूप दिया है तो क्या इस पाउडर का रासायनिक प्रयोग करके यह पता लगाया गया कि यह खाने के योग्य है ? दूसरी बात यह है कि इसे समुद्री मार्ग से मंगाया गया, तो इसे मंगाने के लिये भाड़ा किसने दिया और यदि हमने दिया है तो क्या इसका भुगतान विदेशी मुद्रा में किया गया है ?

तीसरी बात यह है कि ग्रापने कहा है कि उपभोक्ता की रुचि का पता लगाने के लिये खटर ग्रायल का मूल्य शुरू में कम रखा गया। इसका ग्रिभिग्राय यह हुग्रा कि ग्राप इसे भारत में हमेशा के लिये उपभोग की वस्तु बनाना चाहते हैं। ग्राप हमें बटर ग्रायल खाने के लिये कहते हैं क्योंकि यह फालतू है ग्रीर पश्चिम देशों में इसे मानव उपभोग के योग्य नहीं समझा जाता है। क्या भारत सरकार यूरोपीय ग्राधिक समुदाय के देशों की एक मात्र विक्रय एजेन्ट बनना चाहती है जो भारत के बाजारों में इसे खपाने के लिये प्रयोग कर रही है ?

दूसरी बात यह है कि जब शुरू में बटर आयल की कीमत 14 रुपये प्रति किलो तय की गई थी तो देश में खाने के तेल की कमी नहीं थी। तब इस प्रकार की कीमत क्यों तय की गई थी?

श्री सुरजीत सिंह बरनाला: मेरे माननीय मिल्ल ने श्रनेक प्रश्न पूछ लिये हैं। पहली बात यह है कि उन्होंने बटर श्रायल पाउडर का जिक्र किया है। यह पाउडर नहीं है। इसे स्किमड दूध के साथ मिलाकर इसे पुनः दूध के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। जैसा कि पहले बताया गया है। यह हमें उपहार स्वरूप मिला है जो कि यूरोपीय श्राधिक समुदाय खाद्य सहायता कार्यक्रम के श्रन्तर्गत देता है। हम इसके लिये भीख नहीं मांगते। खाद्य सहायता कार्यक्रम के श्रन्तर्गत यह श्रनेक देशों को दिया जाता है श्रीर हमें भी उस में से कुछ मिलता है।

उसका काफी स्टाक हमारे पास पड़ा था और उसे दुग्ध के रूप में सप्लाई करना सम्भव नहीं था क्योंकि वह मिलाए जाने के लिए अनुपयुक्त हो गया था और उसे खाना पकाने के माध्यम के रूप में सीधे प्रयोग में लाया जा सकता था । इसी कारण से ही उसे बाजार में बेचा गया । मिलाये जाने के लिये अनुपयुक्त हो जाने का यह अर्थ नहीं है कि वह मानव उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं रहा । इसी कारण से उसे बाजार में बेचा गया । वह हमें यूरोप के बन्दरगाह तक निःशुल्क मिलता है और वहां से यहां तक स्वयं लाना पड़ता है । डा॰ मुरली मनोहर जोशी: क्या यह सच है कि करोड़ों रुपयों की खेप बम्बई स्थित गोदाम में नष्ट हो गई; ग्रीर यदि हां, तो इस बारे में कोई जांच की गई है ?

दूसरे इस मामले की स्रोर प्रैस द्वारा विभिन्न संसद सदस्यों का ध्यान स्राक्षित किया गया है कि बिगड़े हुए बटल स्रायल को कभी कभी दूध के साथ मिलाकर दिल्ली दुग्ध योजना के माध्यम से उपभोक्तास्रों में वितरित किया गया, स्रर्थात् खराब हुए बटर स्रायल को, जो उपभोग के उपयुक्त नहीं था दूध में मिलाकर बेचा गया।

श्री सुरजीत सिंह बरनाला: जहां तक प्रश्न के ग्रन्तिम भाग का सम्बन्ध है, यह सच नहीं है कि वह सप्रेटा दूध में मिलाकर लोगों में वितरित करते समय मानव उपभोग के लिये ग्रनुपयुक्त हो चुका था।

प्रश्न के पहले भाग के सम्बन्ध में मुझे अलग से सूचना भेजनी होगी ताकि मैं यह पता लगा सकूं कि क्या कोई ऐसी घटना घटी थी ।

Shri Vijay Kumar Malhotra: May I know from the hon. Minister whether it is proper to earn profit by selling the butter oil which we get as a free gift. If it is used in preparation of milk for distribution among the poor children, then it is alright. But is it proper that the Delhi Milk Scheme prepare milk by adding water in it more than ten times and mint money by supplying such milk to the people?

Shri Surjit Singh Barnala: As I have already stated, we had some surplus butter oil, so some of it was sold in market. The rest of it is being mixed in skimmed milk.

इस बिकी से प्राप्त हुई धनराशि मवेशी तथा दुग्धशाला विकास पर खर्च की जाती है, ग्रन्य किसी कार्यक्रम पर नहीं।

श्री ग्रन्ना साहेब पी० शिन्दे: हमारा राष्ट्र महान ग्रौर स्वाभिमानी है। भारत सरकार कुछ समय तक के लिये बटर ग्रायल का ग्रायात करने की जो ग्रावश्यकता समझती है उसे मैं मानता हूं। परन्तु मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या सरकार इस प्रकार के उपहार स्वीकार करने की समूची नीति पर पुर्निवचार करना चाहेगी क्यों कि इन उपहारों के पीछे हमेशा कुछ मन्तव्य रहता है। स्वाभिमानी राष्ट्र होने के नाते हमें ऐसे उपहार नहीं स्वीकार करने चाहिए। जैसा कि माननीय सदस्यों तथा मंत्री महोदय को ज्ञात है, जब चीन में भूकम्प की विनाशकारी द्र्यटना घटी तो उसने एक स्वाभिमानी राष्ट्र के नाते किसी भी देश से कोई उपहार स्वीकार नहीं किया। क्या भारत सरकार ग्रन्य देशों से निःशुल्क उपहार लेने की समुची नीति पर पूर्निवचार करेगी?

श्री सुरजीत सिंह बरनाला: जहां तक मुझे मालूम है इस सहायता का प्रस्ताव उस समय ग्राया था जब माननीय सदस्य स्वयं मंत्रालय में थे। हम उत्तराधिकार में मिली परम्परा को निभाते हुए ग्रस्थायी तौर पर उसी नीति पर चल रहे हैं।

श्री कृष्ण चन्द्र हाल्दर: मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि बटर ग्रायल देने का प्रस्ताव हमारे देश को कब मिला, ग्रौर कितना बटर ग्रायल किस समय मिला ग्रौर नि:शुल्क उपहार होते हुए भी यह देश की विभिन्न खैराती संस्थाग्रों के माध्यम से वितरित क्यों नहीं किया गया ?

' श्री सुरजीत सिंह बरनाला : हमें 1974-75 में योरोपीय ग्रार्थिक समुदाय से 2590 मीटरी टन और विश्व खाद्य कार्यक्रम से 8212 मीटरी टन बटर ग्रायल मिला । 1975-76 में योरोपीय ग्रार्थिक समुदाय में कुछ भी बटर ग्रायल नहीं मिला परन्तु विश्व खाद्य कार्यक्रम से 1975-76 में 7165 मीटरी टन ग्रौर 1976-77 में 1782 मीटरी टन बटर ग्रायल मिला । यह खैराती संस्थाग्रों

के माध्यम से वितरित नहीं किया गया क्योंकि यह केवल देश में दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए ही था स्रोर यही किया जा रहा है ।

Shrimati Mrinal Gore: Is the hon. Minister aware of the fact that the import of butter oil and the operation flood scheme has given a set back to dairy industry and on the other hand the consumers have to use such milk which gives had odour. In view of these factors, will the government take any action in this matter?

Shri Surjit Singh Barnala: The milk production has not come down as a result of using butter oil. The milk producers have also not suffered any loss due to this. It is also not a fact that the butter oil giving bad odour is mixed with the milk. It is mixed only when it is in good condition.

श्री पी० राजगोपाल नायडू: हमें बटर-ग्रायल उपहार के रूप में मिला है । ऐसा स्थिति में ग्राप उसकी कीमत क्यों लेते हैं।

श्री सुरजीत सिंह बरनाला : हम दूध के धंधे ग्रीर दुधारी पशुग्रों की दशा सुधारने के लिए उससे धन प्राप्त करना चाहते हैं।

Institutions for Promotion of Hindi

*409. Shri Nawab Singh Chauhan: Will the Minister of Education, Social Welfare and Culture be pleased to state the number of the institutions directly working for the promotion of Hindi under the Ministry and the status of their Heads and Chairman?

The Minister of Education, Social Welfare and Culture (Dr. Pratap Chandra Chunder): Central Hindi Directorate, New Delhi, and Kendriya Hindi Sansthan, Agra, are the two institutions working for the promotion of Hindi directly under the Ministry. Director, Central Hindi Directorate, is also the Chairman of Commission for Scientific and Technical Terminology. The post of Chairman, Commission for Scientific and Technical Terminology carries a scale of Rs. 2250-2500. The pay scale of Director, Kendriya Hindi Sansthan, is Rs. 1500-2500+Rs. 250/- as Special pay.

Shri Nawab Singh Chauhan: Mr. Deputy Speaker, this Commission was set up in 1960 under a Persidential order and at that time it was envisaged that it would be converted into an autonomous body and its Chairman would be given the status of a Secretary, but it has not been done. For some time there had been a proposal to give to its members full time membership. But this proposal has not been translated into action. Once the Commission was merged into the Directorate and later on the Directorate was merged into the Commission. I want to know whether government are contemplating to make it an autonomous body and to give to its chairman the status of a Secretary and if not, what are the alternative proposals of the Government?

Shri Pratap Chandra Chunder: I have already stated that his post and pay scale are equal to that of a Secretary. At this moment I can not say more than this.

Shri Nawab Singh Chauhan: Does the hon. Minister think that the work of Hindi is scattered in various Ministries and there is no cohesion and coordination in it. Hindi has become the official language as well as the link language and it is to be promoted in a well planned way. Has the hon. Minister any scheme to entrust entire Hindi work to this organisation but making it an autonomous body and giving to its chairman the status of a Secretary.

Shri Pratap Chandra Chunder: I will get it examined.

डा० हेनरी ग्रास्टिन: क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि जिन राज्यों में तिभाषा सूत्र के ग्रन्तर्गत हिन्दी प्रचलित है वहां प्रादेशिक भाषाग्रों के संवर्द्धन के लिए क्या प्रयत्न किये जा रहे हैं। ऐसा ग्रनुभव किया जा रहा है कि तिभाषा सूत्र के ग्रन्तर्गत प्रादेशिक भाषाग्रों को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठाये जा रहे।

श्री प्रताप चन्द्र चन्दर: यह ग्रारोप सत्य नहीं है क्योंकि प्रादेशिक भाषाग्रों की पुस्तकों के प्रकाशन के लिए राज्य सरकारों को 1 करोड़ रुपये देने का प्रस्ताव किया गया है। इसके ग्रतिरिक्त प्रादेशिक भाषाग्रों के संवर्द्धन के लिए ग्रन्य संस्थाएं भी हैं। ग्राधुनिक भारतीय भाषाग्रों के संवर्द्धन के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रेरित एक संस्था कार्य कर रही है।

श्री ज्योतिर्मय बसुः मैं इसका स्पष्टीकरण चाहता हूं कि क्या पूरे देश भर के लिए 1 करोड़ रुपये रखे गये हैं।

उपाध्यक्ष महोदय: ग्राप कृपया ग्रपने स्थान पर बैठ जायें।

श्री सी० एन० विश्वनाथन : हिन्दी प्रचार शाखा के लिये तिमलनाडु में कितनी संस्थायें चल रही हैं ग्रीर उनपर कितना धन खर्च किया जा रहा है ?

डा० प्रताप चन्द्र चन्दर: ब्यौरे के लिये मुझे नोटिस चाहिये। इस सभा की जानकारी के लिए मैं कह सकता हूं कि केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय तिमल के माध्यम से हिन्दी सिखाने के लिये पताचार पाठ्यकम चला रहा है। ग्रारम्भ में 500 छात्रों के लिये व्यवस्था की गई थी। ग्रब तिमल के माध्यम से पताचार पाठ्यकम के अन्तर्गत हिन्दी सीखने वाले छात्रों की संख्या 4000 हो गई है।

श्री ज्योतिर्मय बसुः मंत्री महोदय ने एक करोड़ रुपए की राशि बताई । यह राशि समूचे देश के लिये है या एक राज्य विशेष के लिये ? यदि एक राज्य के लिये है, तो वह कौनसा राज्य है ? 60 करोड़ लोगों के लिये प्रादेशिक भाषाग्रों के विकास के लिये एक करोड़ की राशि बहुत ही कम है ।

उपाध्यक्ष महोदय: इसके लिये उन्हें नोटिस देना होगा।

श्री समर गृह: संविधान के अनुसार हिन्दी की दोहरी स्थिति है। यह राष्ट्रभाषा होने के साथ-साथ राजभाषा भी है। सभी भाषाएं राष्ट्रभाषा हैं। चूंकि हिन्दी हमारे देश की अधिकृत राजभाषा है, उसके विकास के लिये जो भी राशि खर्च की जाये, मुझे कोई आपित्त नहीं है। क्या मंत्री महोदय हमारे देश में अन्य राष्ट्रीय भाषाओं को समृद्ध बनाने और उनके विकास पर किये गये व्यय का ब्यौर देंगे ?

डा० प्रताप चन्द्र चन्दर: ईसके लिये नोटिस देना होगा।

श्री समर गुह: मंत्री महोदय कह सकते हैं कि वे इसकी जानकारी बाद में देंगे। क्या ग्राप उनसे कहेंगे कि वे बाद में जानकारी दें?

उपाध्यक्ष महोदय: वे बाद में जानकारी देंगे । वे स्वयं कह चुके हैं ।

Shri Hukam Chand Kachwai: May I know the member and names or institutions engaged in teaching Hindi in the country and the amount being spent on each or them? Is it a fact that officers in Government Offices continue to be prejudiced against Hindi? Is it also a fact that correspondence with Hindi speaking States is also made in English? With this attitude towards Hindi at the centre how can you say that Hindi will be promoted in the country?

Dr. Pratap Chandra Chunder: As already stated these are two institutions on behalf of the Centre and some institutions under the State Governments engaged in promotion of Hindi. I am not in a position to give the figures of expenditure. I require notice for that. Correspondence with state governments is carried sometimes in Hindi and sometimes in English also. During my visit to Bangalore people complained that correspondence is done in Kannada. You can realise how can we function like that.

श्री के० लकप्पा: यह एक भावना प्रधान प्रश्न है। हमारे मित्रों ने कहा कि सभी भाषाश्रों का समान में ग्रादर किया जाना चाहिये ग्रीर सरकार को सभी भाषाश्रों को समान रूप से प्रोत्साहन देना चाहिये। वर्तमान सरकार इससे कुछ हट रही है। ग्रभी हाल में श्री राज नारायण ने कुछ कहा था। मुझे प्रसन्नता है कि प्रधान मंत्री ने ठीक ही बीच में हस्तक्षेप किया ग्रीर स्थिति साफ कर दी। कोई भी भाषा लादने के प्रयत्न का दक्षिण में घोर विरोध होगा। यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है क्या राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ-साथ वे सभी माधाग्रों के विकास की ग्रोर ध्यान देंगे? क्या इन सभी प्रादेशिक भाषाग्रों के विकास के लिये धन भी खर्च करेंगे? इस बारे में सरकार की क्या प्रतिक्रिया है।

डा० प्रताप चन्द्र चन्दर: इस प्रश्न के उत्तर से श्री ज्योतिर्भय बसु द्वारा उठाई गई कुछ बातों का भी समाधान हो जायेगा। प्रत्येक प्रादेशिक भाषा के लिये 1 करोड़ रुपया दिया जाता है। यह प्रादेशिक भाषा के क्षेत्र में स्थापित स्वायत्तशासी राज्य पाठ्यपुस्तक बोर्ड के माध्या से किया जाता है

श्री एम० कल्याणमुन्दरमः क्या प्रादेशिक भाषाओं के विकास के लि नियत राशि प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद पर खर्च की जाती है ? उत्तर में दक्षिण भारतीय प्रादेशिक भाषाओं (तिमल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ के प्रचार के लिये क्या कार्यवादी की गई है ?

श्री प्रताप चन्द्र चन्दर: इसके लिये ग्राधुनिक भारतीय भाषा विकास संस्था है, जो भारत सरकार के पर्यवेक्षाधीन है। इसके ग्रतिरिक्त प्रादेशिक भाषाग्रों में पाठ्यपुस्त हैं लिखे हें लिये प्रत्ये ह प्रादेशिक भाषा को सहायता दी जाती है। तिभाषा सूत्र के ग्रन्तर्गत राज्य सरकारों को सुन्नान दिया गया है कि वे हिन्दी-भाषी क्षेत्रों में दक्षिण भारतीय भाषात्रों का प्रचार करें। इस निदेश ा पालन करना राज्य सरकारों का दायित्व है। जहां तक प्रादेशिक भाषा त्रों का सम्बन्ध है, केन्द्रीय सरका द्वारा सीचे चलाई जाने वाली संस्थाग्रों के ग्रतिरिक्त साहित्य ग्रकादन भी त्रादेशिक भाषा त्रों में ग्रच्छी रवनाग्रों के लेखकों को पुरस्कार देकर प्रादेशिक भाषाग्रों को प्रोत्साहन देती है। इसके ग्रलावा ग्रपनी मातृभाषा में लिख ने वाले लोगों को भी पुरस्कार दिये जा रहे हैं। वे हिन्दी में भी लिखते रहे हैं। इस प्रकार भारत की विभिन्न ग्राधुनिक भाषाग्रों को काफो प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

Shri Hukmdeo Narain Yadav: Is there any schme of Government to bring a change of heart in the people and arouse their feelings towards their mother tongue and pursuade them to suse their mother tongue so that regional languages are developed?

Dr. Pratap Chandra Chunder: There is no such proposal before me.

कृषि का यन्त्रिकरण

410. श्री पी० के० कोडियन: क्या कृषि श्रीर सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) सरकार ने कृषि का ग्रौर ग्रधिक यन्त्रीकरण करने के निये क्या कार्यवाही की है;
- (ख) क्या सरकार ने कृषि में निवेश की वृद्धि करने के लिये ठोस कदम उठाये हैं; ग्रीर
- (ग) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी ब्यौरा वया है ?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) से (ग) एक विवरण सभा-पटल पर रख दिया गया है।

विवरण

- (क) सरकार ने यंत्रीकरण की चयनात्मक नीति अपनाई है, जिससे कि कृषि में रोजगार के अवसरों पर गम्भीर प्रभाव डाले बिना उसी भूमि से अधिक उत्पादन करके सघन खेती के लिये कृषकों की सहायता की जा सके। कृषकों की जरूरतों के लिये अधिकांश कृषि मशीनरी का देश में ही निर्माण हो रहा है। छोटे कृषकों के लिए ऐसी कई मशीनें खरीदना संभव नहीं है, अतः ऐसी मशीनों को भाड़े पर देने के लिये कृषि सेवा केन्द्रों और मरम्मत भाड़ा केन्द्रों की स्थापना की जा रही है। छोटे तथा सीमांत कृषकों को चुनीदा क्षेत्रों में लघु कृषक विकास एजेन्सी कार्यक्रम, सूखाग्रस्त क्षेत्र कार्यक्रम और आदिवासी एवं पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत उन्नत उपस्करों पर राज-सहायता दी जाती है।
- (ख) तथ। (ग): सरकार ने प्रमुख श्रादानों श्रर्थात् बीजों, उर्वरकों एवं क्रुमिनाशी श्रौषधियों तथा सिचाई के जल की उपलब्धि एवं खपत बढ़ाने के लिये जो महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं, वे निम्नलिखित हैं:—

बीज

ग्रागामी वर्षा में ग्रनाज की प्रमुख फसलों के ग्रच्छी कोटि के बीजों की मांग में सम्भावित वृद्धि होने की बात को दृष्टिकोण गत रखते हुए सरकार ने एक राष्ट्रीय कार्यक्रम तैयार किया है, जिसमें ग्रनुसंधान संस्थाग्रों से किसानों के खेतों तक विभिन्न ग्रवस्थाग्रों में बीज उत्पादन को समेकित करने ग्रीर बीज परिसंस्करण, भंडारण, गुणा नियंत्रण एवं उनके विपणन की मांग पूरी करने के लिये ग्रावश्यक ग्रवस्थापनात्मक सुविधाएं प्रदान करने का विचार है। इस कार्यक्रम के ग्रंतर्गत ग्रच्छी कोटि के बीजों के उत्पादन को व्यापक ग्राधार प्रदान करने ग्रीर बीजों की ग्रपर्याप्त उपलब्धि की ग्रवधियों के दौरान उपयोग के लिये बीजों का ग्रारक्षित स्टाक तैयार करने का विचार है। सब्जी के बीजों ग्रीर वाणिज्यक फसलों के बीजों के उत्पादन के लिये ग्रधिक सुविधा प्रदान करने के लिये भी कार्यक्रम तैयार किए जा रहे हैं।

उर्वरक

उर्वरकों की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिये देश में उत्पादन का स्तर बढ़ा करके तथा आवश्यक आयात की व्यवस्था करके उर्वरकों की कुल उपलब्धि बढ़ाई जा रही है। आयातित उर्वरकों को देश के 600 से अधिक बफर केन्द्रों में जमा किया जाता है। अंतरंग क्षेत्रों में अतिरिक्त खुदरा केन्द्र (जिनकी संख्या अब लगभग एक लाख है) खोलने के लिये प्रयास किए जा रहे हैं, ताकि कृषकों को सुगमता से उर्वरक उपलब्ध किए जा सकें। राज्य सरकारों को मिश्रित आदान वितरण केन्द्रों की स्थामना करने के लिये भी प्रोत्साहन दिया जा रहा है, जिससे कि यथासम्भव कृषक एक ही जगह से बीज, उर्वरक एवं कृमिनाशी औषधियां प्राप्त कर सकें। चालू खरीफ के मौसम के दौरान 68 चुनीदा जिलों में (जहां इस समय उर्वरकों की खपत का स्तर कम है लेकिन उर्वरकों की खपत बढ़ाने की अच्छी संभावना है) एक गहन उर्वरक संवर्धन अभियान शुरू किया गया है।

कृमिनाञी ग्रौषधियां

गत वर्षों के दौरान कृमिनाशी उद्योग की उत्पादन क्षमता तथा कृमिनाशी स्रौषधियों की खपत काफी बढ़ गई है। देश के भीतर लगभग 52000 विकय केन्द्रों के जिरये सब वनस्पति-रक्षण सामग्री प्रायः सुगमता से उपलब्ध हो जाती है। वनस्पति-रक्षण उपकरणों की खरीद के लिये छोटे तथा सीमांत कृषकों की विभिन्न योजनाम्नों के म्रंतर्गत राज-सहायता दी जा रही है । कृषकों को वाणिज्यिक फसलों के कृमियों तथा रोगों के विरुद्ध सतही तथा हवाई छिड़काव करने के लिए भी वित्तीय सहायता दी जा रही है ।

सिंचाई

सिंचाई के कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका को महसूस करते हुए उनके कियान्वयन को ग्रधिकतम सम्भव सीमा तक बढ़ाने के लिये प्रयास किए जा रहे हैं। लघु सिंचाई के मामले में सार्वजिनक क्षेत्र के परिव्यय संस्थागत निधियों से पूरे किये जा रहे हैं। ग्राशा है कि वर्ष 1977-78 के लिये लघु सिंचाई से 17.9 लाख हैक्टार ग्रौर बड़ी तथा मध्यम सिंचाई से 13 लाख हैक्टार की ग्रतिरिक्त सिंचाई क्षमता स्जित हो जायेगी।

श्री पी० के० कोडियन: विवरण देखने से पता चलता है कि सरकार ने यंतीकरण की चयनात्मक नीति अपनाई है, जिससे कि कृषि में रोजगार के अवसरों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना उसी भूमि पर सघन खेती के द्वारा अधिक उत्पादन कर ने में कृषकों की सहायता की जा सके । हमने यह देखा है कि यंतीकरण कुछ ग्रामीण किसानों तक ही सीमित हैं। जहां तक साधारण किसानों का सम्बन्ध है, उन्हें उन्नत उपकरण भी नहीं मिल रहे हैं; उनकी विकीय स्थिति भी अच्छी नहीं है। यद्यपि विवरण में कहा गया है कि छोटे किसानों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये कृषि सेवा केन्द्र स्थापित किये जा रहे हैं, सचाई यह है कि हमारे देश में बहुत से छोटे सीमान्त किसान इन आधुनिक कृषि उपकरणों के लाभ से वंचित हैं। दूसरी ओर यंतीकरण के परिणामस्वरूप, जो कुछ चुने हुए क्षेत्रों तक ही सीमित है, कृषि कर्म कार बेरोजगार हुए हैं। पंजाब और हरियाणा में हावेंस्टर कम्बाइन जैसी मशीनों के प्रयोग से प्राय कृषि कर्म कार बेरोजगार हुए हैं। यह एक पहलु है। इस दूसरा पहलू यह है कि छोटे साधारण और सीमान्तक किसान एवं समाज के अन्य ग्रामीण वर्ग उन्नत कृषि उपकरणों का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। क्या सरकार यथासंभव बेरोजगारी को दूर करने के लिये कोई ठोस कदम उठा रही है?

श्री सुरजीत सिंह बरनाला: जैसा मेरे माननीय मित्र ने बताया, मैं कह चुका हूं कि सारे देश में खेत निरन्तर छोटे होते जा रहे हैं; पहले ही 1-2 हैक्टेयर के लगभग 1.30 करोड़ खेत है और 1.30 करोड़ खेत 2-5 हैक्टेयर के हैं। इसलिये किसान बड़ी मशीन खरीद ग्रौर प्रयोग नहीं कर सकते हैं। इसलिये हमने कृषि सेवा केन्द्र खोले हैं। इस समय 2900 कृषि सेवा केन्द्र हैं जहां से वे मशीने किराये पर ले सकते हैं। इसी प्रकार राज्य कृषि उद्योग निगम के 310 केन्द्र काम कर रहे हैं। मेरे माननीय मित्र का यह कथन ग्रसत्य है कि पंजाब ग्रौर हरियाणा में फसल काटने की मशीनों के प्रयोग से कृषि श्रमिक बेरोजगार हुए हैं। मशीनों का प्रयोग खेतों को खाली करने के लिये किया जाता है ताकि ग्रगली फसल बोई जा सके ग्रन्थश सीजन निकल जायेगा। लोगों को जल्दी होती है।

श्री पी० फे० कोडियन: कृषि के लिये ग्रावश्यक वस्तुग्रों के बारे में उठाये जा रहे ग्रनेक कदमों का मंत्री महोदय ने उल्लेख किया। क्या उर्वरकों की की भतें बटाने के त्रिये कोई कार्यवाही की जा रहो है ग्रीर ग्रागामी वर्ष में बड़ी सिंवाई योजनाग्रों द्वारा कृषि क्षतता में लगभग 13 लाख हैक्टेयर की वृद्धि करने का प्रस्ताव है ग्रीर क्या कितान इस ग्रतिरिक्त क्षता का पूर्ण उपयोग कर सकेंगे?

श्री सुरजीत सिंह बरनाला: जहां तक पहले प्रश्त का सम्बन्ध है, सभा में मांगों पर बहस का उत्तर देते हुए मैंने कहा था कि हम इस फसल, ग्रर्थात् खरी क, के लि । उर्वरकों की की नत कम न हीं कर सकेंगे। तथापि हम मूल्यों पर नजर रख रहे हैं। दूसरे प्रश्न के बारे में मैं बता चुका हूं कि लघु, मध्यम श्रीर बड़ी सिचाई के अन्तर्गत 30 लाख हैक्टेयर भूमि में सिचाई की व्यवस्था की जा रही है। मेरा यह प्रयास होगा कि इसका अधिकतम उपयोग हो। हमारा प्रयास है कि सभी विद्यमान सिचाई सुविधाओं का यथासंभव उपयोग हो।

Shri Sheo Narain: The former Government in U. P. had increased the rate from Rs. 3 to Rs. 15 and later on brought it down to Rs. 12, which is still on the higher side. Will the hon. Minister take steps to reduce it so that small farmers may also avail of the benefits?

Shri Surjit Singh Barnala: I would not follow to which rate the hon, member is referring.

Shri Sheo Narain: The rate of electricity.

Shri Daulat Ram Saran: The agro service centres have been opened at a number of places by state Governments. Will the hon. Minister tell us whether it is a fact that the price of agricultural implements charged on these agro service centres is higher than that charged by the private dealers as a result of which it is not beneficial to the farmers to purchase implements from there? Moreover, implements are not available there at the proper time?

Shri Surjit Singh Barnala: I shall look into it, if it is so.

ग्रल्प सूचना प्रश्न SHORT NOTICE QUESTION

हिन्द महासागर में सैनिक गतिविधियां सीमित करने के बारे में ग्रमरीका ग्रौर रूस के बीच विचार-विमर्श

श्रत्प सूचना प्रश्न सं० 15. डा० मुरली मनोहर जोशी: † श्री वयालार रवि: श्री किशोर चन्द्र एस० देव: श्री चित्त बसु:

क्या विदेश मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि ।

- (क) वया सरकार का ध्यान 29 जून, 1977 के 'स्टेट्समैन' में प्रकाशित इस समाचार की श्रोर दिलाया गया है कि हिन्द महासागर में सैनिक गतिविधियों को सीमित करने के प्रश्न पर श्रम रीका श्रीर रूस के बीच चर्चा हुई है; श्रीर
 - (ख) यदि हां, तो इस बारे में भारत सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

विदेश मंत्री (श्री श्रटल बिहारी वाजपेयी): (क) जी, हां।

(ख) भारत सरकार को ग्राशा है कि यह बातचीत ग्रागे बढ़ेगी ग्रीर इसमें भाग लेने वाले पक्ष संबद्ध समस्या के प्रति रचनात्मक ग्रीर ठोस रवैया ग्रपनायेंगे ग्रीर ऐसे परिणामों तक पहुंचेंगे जिनसे संयुवत राष्ट्र के प्रस्तावों के ग्रनुरूप हिन्द महासागर में शान्ति के क्षेत्र की स्थापना का काम सुगम हो सके

डा॰ मुरली मनोहर जोशी: यह भारतीय सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। क्या मंत्री महोदय सभा को बतायेंगे कि क्या इस महत्वपूर्ण विषय के बारे में इन दो बड़ी शक्तियों में से किसी ने किसी अवस्था पर किसी स्तर पर भारत सरकार की राय मांगी थी और यदि हां, तो भारत सरकार हिन्द महासागर को शांति क्षेत्र बनाये रखने के लिये स्वयं अवेले या हिन्द महासागर से सीधे संबंधित तटवर्ती देशों के साथ संयुक्त रूप से क्या कार्य-वाही कर रही है?

श्री श्रटल बिहारी वाजपेयी: श्रीमन्, किसी समझौते पर पहुंचना दो बड़ी शक्तियों ग्रर्थात् अमरीका और सोवियत संघ पर निर्भर करता है ताकि हिन्द महासागर को शान्ति क्षेत्र बनाया जा सके। भारत के साथ ग्रनौपचारिक रूप से परामर्श किया जा रहा है। हमारे विचार सर्वविदित है ग्रौर जब भी ग्रवसर ग्राया है हमने दोनों ही बड़ी शक्तियों से ग्राग्रह किया है कि इस बारे में बातचीत को शीघ्र पूर्ण किया जाये।

डा० मुरली मनोहर जोशी: न्यूट्रॉन बम, लेजर किरण, ग्रर्थात् मृत्यु-किरण, जैसे ग्रत्यन्त खतरनाक हथियारों के विकास को ध्यान में रखते हुए हिन्द महासागर में स्थित सैनिक ग्रड्डों से इन हथियारों के प्रयोग किये जाने के विरुद्ध भारत सरकार ने क्या रक्षोपाय किये हैं?

श्री श्रटल बिहारी वाजपेयी : यह इस प्रश्न से सम्बद्ध नहीं है यदि हिन्द महासागर का विसैन्यीकरण होता है ग्रौर हिन्द महासागर में शस्त्रास्त्रों के सीमित किये जाने के बारे में दोनों बड़ी शक्तियों में समझौता हो जाता है, तो मैं ग्राशा करता हूं कि मेरे मित्र द्वारा बताया गया खतरा उत्पन्न नहीं होगा।

श्री वयालार रिव : यह ग्राश्चर्य की बात है कि मंत्री महोदय हिन्द महासागर में शांति का प्रश्न बड़ी शक्तियों, ग्रर्थात्, ग्रमरीका ग्रीर सोवियत संघ पर छोड़ रहे हैं। इस विषय का मुख्य रूप से भीर मूलत : तटवर्ती देशों विशेष रूप से भारत से सम्बद्ध है। इथोपिया से लेकर ग्रास्ट्रेलिया तक ग्रमरीका के 8 सैनिक ग्रड्डे हैं। इन सैनिक ग्रड्डों से तटवर्ती देशों को वास्तिवक खतरा है। सोवियत संघ ने संयुक्त राष्ट्र सभा के 31वें ग्रधिवेशन में घोषित किया था कि हिन्द महासागर में उसका कोई सैनिक ग्रड्डा नहीं है। इसकी जांच पड़ताल करना ग्रापका काम है। ग्रमरीका के भारत के बहुत निकट, जैसे डियागो गासिया में, 8 सैनिक ग्रड्डों हैं जहां धावन-पथ 12000 फुट तक लंबा कर दिया गया है। उसने नविकसित न्यूट्रॉन हथियार प्रयोग करने की भी धमकी दी है। ग्राप इस मामले को दो देशों पर कैसे छोड़ सकते हैं? क्या मंत्री महोदय बताने की हथा करेंगे कि क्या यह सच है कि ग्रमरीका सेंट मार्टिन द्वीप में एक नौसैनिक ग्रड्डा बनाने के लिये बंगलादेश से बातचीत कर रहा है? इस प्रकार भारत के बहुत निकट ग्रमरीका के लिये बंगलादेश से बातचीत कर रहा है? इस प्रकार भारत के बहुत निकट ग्रमरीका के दो नौसैनिक ग्रड्डों होंगे ग्रार यह शांति के लिये वास्तिवक खतरा है। इस बारे में भारत सरकार की क्या प्रतिक्रिया है? क्या हिन्द महासागर में पूर्ण विसैन्यीकरण ग्रीर सैनिक ग्रड्डों का समाप्त किया जाना मुनिध्चित करने के लिये भारत निरन्तर पहल करता ग्रीर नेतृत्व प्रदान करता रहेगा।

श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी: में माननीय सदस्य से पूर्णतः सहमत हूं कि हिन्द महासागर को शांति क्षेत्र बनाने के प्रश्न से मुख्य रूप से तटवर्ती देश ग्रीर उनके साथ लगने वाले देशों का सम्बद्ध है। ग्रधिकांश तटवर्ती देश संयुक्त राष्ट्र संघ ग्रीर गुटिनरपेक्ष राष्ट्रों के फोरम के जिरये ग्रपने विचार स्पष्ट कर चुके हैं। हम तो चाहते हैं कि हिन्द महासागर में जितने भी ग्राहुं हैं उन्हें हटा दिया जायें ग्रीर बड़ी शिक्तयां ग्रपनी ग्रपनी सेनायें भी हटा लें। यह तो बड़ी शिक्तयों पर निर्भर करता है कि वे इस प्रश्न पर कोई समझौता करें। जहां तक तटवर्ती तथा तटदूर देशों के दबाब का संबन्ध है, इसका प्रभाव पड़ रहा है। मेरे विचार में तटस्थ तथा ग्रन्य देशों के दबाव के कारण ही तो हिन्द महासागर के प्रश्न पर बड़ी शिक्तयों के वीच बातचीत हो रही है। मुझे ग्राशा है कि उन्हें इसमें सफलता मिलेगी

ग्रौर हिन्द महासागर शांति क्षेत्र बन जायेगा। जहां तक ग्रमरीका द्वारा बंगाल की खाड़ी में एक ग्रड्डा बनाने का सम्बन्ध है, मुझे खेद है कि इस समय इस बारे में मेरे पास कोई जानकारी नहीं है।

श्री वयालार रिव : यह बातचीत सैनिक ग्रड्डों के बारे में नहीं हो रही है। यह तो इसे शांति क्षेत्र बनाये रखने के संबंध में हो रही है। ग्राप इस बातचीत पर कैसे निर्भर कर रहे हैं?

श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी : मैं किसी चीज पर निर्भर नहीं कर रहा हूं ; मैं तो केवल ग्रपने देश की शक्ति पर ही निर्भर करता हूं।

श्री वयालार रिव : मैंने ऐसा कोई संकेत नहीं दिया है, मुझे खेद है कि कुछ गलत-फहमी हो गई है। मैं एक स्पष्टीकरण चाहता हूं...

उपाध्यक्ष महोदय : श्री चित्त बसु ।

श्री चित्त बसु : क्या मंत्री महोदय को इस बात का ता है कि (क) डियागो गार्सिया में अमरीकी निर्माण कार्य फिर से होने लगा है ; (ख) अमरीकी नौसेना जिस परमाणु शक्ति से चालित विमान वाहक बेड़ा और पी-3 बेड़ा भी शामिल हैं, यहां की यात्रा करती रही है; अौर (ग) हिन्द महासागर में से सेना के हटाये जाने के बारे में श्री कार्टर की घोषणा के किये जाने के पश्चात् भी मिसराह में अमरीका ने नये अड्डों का अर्जन किया है? इस संदर्भ में, क्या भारत सरकार इस सम्बद्ध में अपनी राय बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में अभिव्यक्त करने पर विचार करेगी कि अमरीका हिन्द महासागर में सभी अड्डों को समाप्त कर दे और वहां पर सेना भेजना भी बंद कर दे जिससे हिन्द महासागर से सेनाये हटाई जा सके और अमरीका तथा रूस के बीच जो बातचीत चल रही है वह सफल हो सके ? दूसरे क्या सरकार का ध्यान 2 फरवरी के 'ट्रिब्यून' में प्रकाशित हुए श्री जे० पी० आनन्द के लेख में हमारे देश की इन्स्टीट्यूट फार डिफेंस स्टडीज एंड अनलेसिस की राय की ओ दिलाया गया है जो इस प्रकार है:

"ग्रमरीकी नौसेना द्वारा प्रति वर्ष ग्रौसतन तीन बेड़ों की तुलना में "सोवियत संघ की नौसेना सर्दियों में एक संगठित दल भेजती है कुछ पिश्चमी विश्लेषकों के ग्रनुसार सोवियत संघ का उद्देश्य सैनिक न हो कर राजनैतिक है। सोवियत संघ की उपस्थिति मूलतः प्रतिक्रियात्मक ग्रौर रक्षात्मक स्वरूप की है।" इन्स्टीट्यूट फार डिफेंस स्टडीज एंड ग्रनैलेसिस द्वारा ग्रिभिव्यक्त की गयी राय के सम्बन्ध में सरकार की क्या प्रतिक्रिया है?

श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी: श्रीमन्, माननीय सदस्य ने जो जानकारी दी है, मैं उसका ग्राभारी हूं। मैंने भी "ट्रिब्यून" में यह लेख पढ़ा था। जहां तक डियागो गासिया में सुविधाग्रों का विकास करने का सम्बन्ध है भारत सरकार को विदित है कि डियागो गासिया का विस्तार करने के लिये ग्रमरीकी सरकार ने हाल ही में 70 लाख डालर की राश की व्यवस्था की है।

मानमीय सदस्य ने मिसराह का उल्लेख किया है। यह ग्रोमान में एक हवाई ग्रहा है जिसका निर्माण यूनाइटिड किंगडम ने किया था। समाचार यह है कि ग्रमरीका ग्रपने विमान के लिये इसका प्रयोग करने के लिये बातचीत कर रहा है। जहां तक भारत की स्थित को स्पष्ट करने का सम्बन्ध है, मेरे विचार में भारत की स्थित के बारे में विश्व में कोई संदेह नहीं है ग्रौर मुझे ग्राशा है कि माननीय सदस्य को भी इस बारे में कोई संदेह नहीं होना चाहिये।

श्री ज्योतिर्भय बसु : क्या मंत्री महोदय यह बताएंगे कि इस बात के बावजूद कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने एक संकल्य में यह स्पष्ट कर दिया है कि हिन्द महासागर को शांति क्षेत्र बनाये रखा जाये, अमरीका डियागो गार्सिया और कई अन्य स्थानों पर बिना किसी रोक-टोक निर्माण कार्य कर रहा है? यदि आप विश्व रक्षा संबंधी नक्शा देखें, तो आपको मालूम होगा कि वे क्या क्या कर रहे हैं। इस संदर्भ में, क्या मंत्री महोदय यह बताएंगे कि भारत सरकार ने अमरीका पर इस बात के लिए क्या दबाव डाला है कि हिन्द महासागर को शांति क्षेत्र बनाए रखने के बारे में हो रही बातचीत में चीन को भी शामिल किया जाए ?

श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी: श्रीमन् भारत ग्रन्तर्राष्ट्रीय मामलों में दबाब डालने की बजाए समझाने बुझाने का रास्ता ग्रपनायेगा। जहां तक चीन का संबन्ध है, भारत को प्रसन्नता होगी यदि सभी बड़ी शक्तियां ग्रीर प्रमुख समुद्रवर्ती शक्तियां, जिन में चीन भी शामिल है, मिलकर हिन्द महासागर को शांति क्षेत्र बनाएं।

श्रीमती पार्वती कृष्णन् : मंत्री महोदय ने कहा कि दोनों शक्तियां मिलकर कोई हल निकालेंगी। जब संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में श्री ज्योतिमंय बसु द्वारा निर्दिष्ट संकल्प पर चर्चा हुई थी, तब सोबियत संघ ने यह स्पष्ट कर दिया था कि उनका हिन्द महासागर में सैनिक ग्राड्डे बनाने का न कोई पहले इरादा था ग्रौर न ही ग्रब है ग्रौर कि वे तो केवल ग्रपने यूरोपीय भागों के लिए इस मार्ग का उपयोग करना चाहते हैं जिससे यह भाग उनके सूद्र-पूर्व भागों के साथ समुद्री संपर्क स्थापित कर सके, इस सम्बन्ध में मंत्री महोदय ने यह कैंसे कहा कि ग्रनौपचारिक रूप से बातचीत हुई है जबिक ग्रप्रैल, 1977 में श्री ग्रोमोको की यात्रा के दौरान जारी की गई संयुक्त विज्ञिष्त में हिन्द महासागर का हवाला था ग्रौर उसमें यह कहा गया था:—

"दोनों देश इस बात की पुष्टि करते हैं कि वे समता के आधार पर और ग्रन्तर्राष्ट्रीय विधि के सामान्यतया मान्यताप्राप्त नियमों के ग्रनुरूप सभी संबंधित राज्यों के साथ मिल कर हिन्द महासागर को शांति क्षेत्र बनाये रखने के लिये प्रयत्न करने में साथ देने के हेतु तत्पर हैं।"

उपाध्यक्ष महोदर्य : मैं माननीय सदस्यों से अपील करता हूं कि वे उद्धरण ही न देते। जाया करें।

श्रीमती पार्वती कृष्णन् : यह ग्रावश्यक था क्योंकि उन्होंने 'ग्रनौपचारिक बातचीत'की वात कही थी ।

उपाध्यक्ष महोदय : यदि श्राप प्रश्न काल में उद्धरण देने लगेंगी, तो इससे कठिनाई होगी।

श्रीमती पार्वती कृष्णन् : उद्धरण तो इसलिये देना पड़ा क्यों कि उन्होंने ग्रनौपचारिक बातचीत का हवाला दिया था। चूकि विज्ञाप्ति जारी होने से पूर्व बातचीत हो चुकी थी, इसलिये मैं जानना चाहती हूं कि इस विज्ञाप्ति में दिये गये इस बचन को पूरा करने के लिए क्या कार्यवाही की गई है कि कोई हल निकालने के लिए समता के ग्राधार पर तटवर्ती राज्यों के साथ मिलकर सम्मेलन बुलाने का प्रयत्न किया जायेगा? यह केवल बड़ी शक्तियों का ही नहीं ग्रपितु संबंधित शक्तियों के साथ मिलकर सम्मेलन बुलाना चाहिये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: डा० मुरली ममोहर जोशी को दिये गये उत्तर में, जो अमरीका और सोवियत संघ के बीच हाल ही में हुई बातचीत के संदर्भ में था, कोई प्रस्पर विरोधी बात नहीं है। जो भी बातचीत हुई हैं उसके बारे में हमें अनौपचारिक रूप से जानकारी मिलती रही है, परन्तु सदस्यों ने संयुक्त विज्ञाप्त का हवाला दिया है, जो सोवियत संघ के विदेश मंत्री की यात्रा के पश्चात जारी की गई हैं। हिन्द महासागर के प्रश्न पर हमारे विचार एक जैसे हैं। सोवियत संघ और भारत इस पर सहमत हैं कि वहां पर विदेशी अइडों को समाप्त कर दिया जाए और वहां से विदेशी सैनिकों को भी हटा लिया जाए। जहां तक तटवर्ती देशों का सम्मेलन बुलाने का सम्बन्ध हैं, मुझे खेद हैं कि इससे तब तक कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा जब तक कि इस मार्ग का प्रयोग करने वाली सभी सम्बन्धित शक्तियां इस सम्मेलन में शामिल न हों। संयुक्त राष्ट्र संघ की एक समिति इस दिशा में कार्य कर रही है। मुझे आशा है, प्रयत्न सफल होंगे और ऐसा सम्मेलन होगा।

डा० हेनरी ग्रास्टिन : क्या सरकार को ग्रमरीकी प्रेजीडेंट के साथ ग्रपनी मुलाकात के बाद हाल ही में ग्रास्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री, श्री फ्रेसर के इस बयान का पर्ता है कि डियागो गासिया में जो सैनिक तैयारियां हो रही है वे जारी रहेंगी? हम जानते हैं कि अपना पद ग्रहण करने के थोड़ा समय पश्चात, ग्रमरीका के प्रेजीडेंट ने यह कहा था, जो ग्रभिलेख में है, कि डियागो गासिया में जितनी स्थापनाएं हैं उन्हें हटा दिया जायेगा। परन्तु ग्रास्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री के साथ हुए इस साक्षातकार से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी है ग्रीर उनका यह कहना ग्रभिलेख में विद्यमान है कि उन स्थापनाग्रों को बनाये रखा जायेगा। मास्को में बातचीत हो रही है। उसका प्रयोजन इन स्थापनाम्रों को खत्म करने का नहीं है बल्क पूर्व स्थिति को बनाये रखने या शायद अन्य शक्तियों के साथ कोई समझौता करने का है । यह कोई ग्रलग ग्रलग प्रकृत नहीं है। जिस साथ कोई समझौता करने का है। यह कोई ग्रलग श्रलग प्रश्न नहीं है। जिबौती संबंधी घोषणा तथा फांस की घोषणा में इस बात का उल्लेख है कि वे वहां पर सेना रखेंगे। (स्रन्तर्वाधा) । ईरान से भी ऐसे समाचार मिले हैं कि उन्होंने 7 वायु-वाहित रडार तंत्र प्राप्त करने के लिये ग्रमरीका से बातचीत की है। इन सब का डियागो गासिया के साथ सम्बन्ध है। पाकिस्तान में भी यह कहा गया है कि एक कमबद्ध कार्यक्रम के एक भाग के रूप में 25 परमाणु स्थापनाएं स्थापित कर ली गई हैं।

उपाध्यक्ष महोदय: ग्रापका प्रकृत क्या है ?

डा॰ हेनरी क्रास्टिन: क्या सरकार को इस बात का पता है कि डियागो गार्सिया में हो रही सैनिक तैयारियों से ऐसा लगता है कि हिन्द महासागर को शांति क्षेत्र बनाये रखने के संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्णय की पूर्णतया उपेक्षा की गई है?

श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी: माननीय सदस्य ने ग्रास्ट्रेलिया के माननीय प्रधान मंत्री के जिस बयान का हवाला दिया है वह मैंने पढ़ा है। मैं यह कहना चाहूंगा कि प्रेजीडेंट कार्टर ने डियगो गासिया को हटाने का कभी कोई वचन नहीं दिया है। जिस बात का उन्होंने बचन दिया है वह यह है कि हिन्द महासागर में से सेनायें हटा ली जायें ग्रौर वहां पर बड़ी शक्तियों की सेनाग्रों की संख्या सीमित कर दी जाये।

श्री ज्योतिर्मय बसु : इन सभी बातों को कौन देखेगा ?

श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी: जहां तक तदवर्ती देशों का सम्बन्ध है, संयुक्त राष्ट्र संघ का संकल्प विद्यमान है ग्रीर हम इस बात का स्वागत करेंगे यदि सभी ग्रहुं खतम कर दिये जाते हैं।

श्री क्यामनन्दन मिश्र: मैं इस मामले के तीन पहलुग्रों पर जानकारी चाहता हूं। पहला यह कि क्या मास्को ग्रौर वाशिगटन द्वारा स्थापित कार्यकारी दल का उद्देश्य हिन्द महासागर क्षेत्र का पूर्णरूपेण विसैनीकरण करना है, जैसा कि प्रेजीडेंट कार्टर ने घोषणा की है, या यह ग्रब पूर्व स्थिति को स्थिर करने तक ही सीमित है या हिन्द महासागर में जो संतुलन है उसे बनाये रखना है? दूसरा यह कि क्या सरकार की यह राय है कि ग्रब हिन्द महासागर क्षेत्र में प्रतियोगिता में कमी ग्रा गई है? तीसरा मैं यह जानना चाहता हूं कि दो बड़ी शक्तियों ने इस मामले पर भारत के साथ ग्रलग से बातचीत करने की कोई इच्छा व्यक्त की है?

श्री ग्रटल बिहारी वाजपेथी: ग्रारम्भ में प्रेजीडेंट कार्टर ने 9 मार्च, 1977 के ग्रपने बयान में यह संकेत दिया था कि वह चाहते हैं कि हिन्द महासागर से सेनायें हटाली जायें ग्रीर इस प्रश्न को मास्को में गये हुए ग्रपने सेकेटरी ग्राफ स्टेट द्वारा वहां पर उठाये जाने वाले प्रश्नों में ग्रामिल किया था। बातचीत 22 ग्रीर 27 जून के बीच हुई थी किन्तु बातचीत के पश्चात् ग्रभी तक कोई ग्रीपचारिक बयान नहीं दिया गया है। तथापि सोवियत त्यूज एजेंसी 'तास' ने एक बयान जारी किया था जिसमें कहा गया था कि दोनों पक्षों ने हिन्द महासागर में हथियारों को सीमित करने संबंधी प्रश्न पर विचार किया ग्रीर वे सहमत हो गये कि वे फिर मिलेंगे।

श्री स्यामनन्दन मिश्रः इससे तो इसका दर्जा कम हो गया।

श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी: जी, हां। ऐसा ही प्रतीत होता है। दूसरे पहलू के बारे में कोई निश्चित बात नहीं कही जा सकती।

श्री क्यामान दन मिश्र : मेरे तीसरे प्रश्न का ग्रभी उत्तर नहीं मिला है। क्या प्रमुख ताकतों ने इस विषय पर भारत के साथ ग्रलग ग्रलग बातचीत करने के लिये कोई इच्छा व्यक्त की है?

श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी: दोनों बड़ी शक्तियों ने भारत के साथ ग्रलग ग्रलग बातचीत की है। श्री कंवर लाल गुप्त: मेरे प्रश्न के दो भाग हैं। हमारी सरकार की जानकारी के अनुसार हिन्द महासागर में अमरीका और सोवियत संघ की सेना और नौसैनिक अड्डों की संख्या कितनी कितनी है? दूसरे, मंत्री महोदय ने अभी कहा कि यदि कोई समझौता हो जाता है तो उन्हें प्रसन्नता होगी। इस बारे में मैं उनसे सहमत नहीं हूं क्योंकि वे नौसैनिक अड़ें की सीमा के संबंध में ही सहमत हो सकते हैं; ऐसा संभव है। इसलिये क्या वह सभा को यह आश्वासन दे सकते हैं कि सरकार तब तक संतुष्ट नहीं होगी जब तक कि इस क्षेत्र को पूर्णतया शांति क्षेत्र नहीं बना दिया जाता?

श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी: यदि इजाजत हो तो मैं प्रश्न के दूसरे भाग का उत्तर पहले दे दूं ग्रीर वह यह है कि भारत तब तक संतुष्ट नहीं होगा जब तक कि हिन्द महासागर को शांति क्षेत्र नहीं बना दिया जाता। परन्तु जहां तक हिन्द महासागर में जलपोतों या बड़े देशों की सेनाग्रों की संख्या का सम्बन्ध है, मुझे खेद है कि यह ब्योरा ग्रभी मेरे पास नहीं है।

प्रश्नों के लिखित उत्तर

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

कच्छ का रेगिस्तान

*408. श्री पी० जी० मावलंकर: क्या कि श्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या कच्छ का रेगिस्तान गुजरात के सौराष्ट्र प्रदेश में दक्षिण की ग्रोर निरन्तर बढ़ रहा है;
 - (ख) यदि हां, तो तत्संबंधी तथ्य क्या हैं ;
- (ग) क्या गुजरात राज्य सरकार ने रेगिस्तान के इस प्रकार फैलाव को रोकने के लिए कुछ योजनाएं तथा परियोजनाएं तैयार की हैं ग्रौर क्या राज्य सरकार ने प्रस्ताव शीधतापूर्वक विचार करने, ग्रनुमित तथा वित्तीय सहायता के लिए केन्द्र सरकार को भेजे हैं ; ग्रौर
 - (घ) यदि हां, तो सरकार की उस पर क्या प्रतिकिया है?

कृषि ग्रीर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) व (ख) कच्छ के रेगिस्तानी इलाकों की ग्राम भू-भाग परिस्थितियों के मूल्यांकन तथा उपलब्ध सूचना के ग्राधार पर यह महसूस किया जाता है कि कच्छ के रेगिस्तान के सौराष्ट्र प्रदेश में दक्षिण की ग्रोर बढ़ने के कोई प्रत्यक्ष संकेत दिखाई नहीं देते हैं। तथापि, रून्न बोर्डर के साथ-साथ लवणता प्रवेश की समस्याएं हैं। गर्मी के मौसम में, रेगिस्तान से हवाएं नमक मिश्रित धूल तथा मिट्टी के कण ले जाती हैं ग्रीर उन्हें उपजाऊ भीतरी कृषि इलाकों में जमा कर देती हैं।

(ग) राज्य का वन विभाग कच्छ के रुन्न बोर्डरों के साथ-साथ वनरोपण का कार्यक्रम कार्यान्वित कर रहा है। वृक्षारोपण प्रथम पंचवर्षीय योजना के ग्रारम्भ से किया जा रहा है। चौथी योजना के ग्रंत तक 28697 हेक्टेयर क्षेत्र में वृक्षाररोपण किया गया है जिससे कि तेज हवाग्रों द्वारा रून्न से उठाए गए बारीक लवण मिश्रित धूल के कणों के जमा होने से सीमाँत क्षेत्रों को बचाने के लिए एक हरा-भरा प्रतिरोधक कटिबंध बनाया जा सके। पांचवीं योजना का लक्ष्य 41.29 लाख रुपये की लागत से 5000 हैक्टेयर के अतिरिक्त क्षेत्र में वृक्षारोपण करने का है। रुन्न के भीतरी इलाकों में वन रोपण की कोई योजना नहीं है क्योंकि ग्रब तक किए गए प्रयोगों में रुन्न में प्रचलित परिस्थितियों के ग्रन्तर्गत सफलता प्राप्त नहीं हुई है।

गुजरात राज्य सरकार ने निम्नलिखित प्रस्ताव भेजे हैं:---

- (i) कच्छ, सौराष्ट्र तथा उत्तरी गुजरात के बड़े इलाकों में सिचाई की सुविधाम्रों की व्यवस्था,
- (ii) प्रोसोपिस-जुली फ्लोरा का गहन वृक्षारोपण जो लवणता को कम करता है श्रीर फलस्वरूप कृषि फसलें उगाने के लिए उपयुक्त क्षेत्र तैयार होता है।
- (घ) राज्य सरकार के प्रस्ताव विचाराधीन हैं।

कृषि सेवा भर्ती बोर्ड

- * 411. श्री धर्मवीर विशिष्ठ: क्या कृषि श्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
 - (क) कृषि सेवा भर्ती बोर्ड का गठन किस तिथि को तथा किसकी सलाह पर किया गया था;
 - (ख) इस बोर्ड के क्या कार्य है;
- (ग) कृषि वैज्ञानिकों की प्रतिभाको जांचने का क्या तारीका है तथा गत तीन वर्षों में कितने प्रधिकारी चुने गये; ग्रौर
- (घ) क्या बोर्ड द्वारा किये गये चयन को सरकार के प्रायः स्वीकार कर लिया ग्रौर यदि नहीं तो इसके क्या कारण हैं ?

कृषि श्रीर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल की स्थापना कृषि मंत्री स्वर्गीय श्री फखरुद्दीन ग्रली ग्रहमद की ग्रध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल द्वारा नियुक्त मंत्रियों के एक दल की सिफारिश पर हुए एक निर्णय के परिणाम-स्वरूप की गयी थी। यह मण्डल 7 दिसम्बर, 1973 को ग्रस्तित्व में ग्राया।

- (ख) मण्डल, जो भारतीय कृषि ग्रनुसंधान परिषद के लिए एक स्वतंत्र भर्ती एजेंसी है, के कार्य निम्न प्रकार हैं:--
 - (i) कृषि ग्रनुसंधान सेवा तथा कुछ इस प्रकार के पदों व सेवाग्रों के लिए भर्ती करना जिनका उल्लेख समय-समय पर विशेष रूप से परिषद् के ग्रध्यक्ष द्वारा किया जाय;
 - (ii) पदोन्नतियों सहित कार्मिक मामलों में परिषद को कुछ इस प्रकार की सहायता प्रदान करना जिनकी अपेक्षा श्रध्यक्ष द्वारा की जाय; तथा
 - (iii) स्वयं परिषद द्वारा अथवा मण्डल से परामर्श करके भर्ती नियुक्ति किए गए कार्मिकों से संबंधित अनुशासनात्मक मामलों में परिषद् को परामर्श देना।

- (ग) अपेक्षित सूचना देते हुए एक वक्तव्य सदन के पटल पर रखा जा रहा है।
- (घ) जी हां, श्रीमान । भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष ने, जो कि कृषि अनुसंधान सेवा के नियंत्रण करने वाले अधिकारी हैं, कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल की सिफा-रिशों को स्वीकार कर लिया है।

विवरण

कृषि अनुसंधान सेवा में (निम्न प्रकार) नियुक्तियां की जाती हैं :--

- (क) 700-1300 रु० के वेतनमान में सेवा के वर्ग 'एस-1' की खुली प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से सीधी भर्ती;
- (ख) विज्ञापन एवं साक्षात्कार द्वारा पाश्वीय भर्ती; श्रौर
- (ग) वर्तमान विज्ञानियों के कार्य-कौशल के पांच वर्षीय मूल्यांकन की प्रणाली द्वारा योग्यता के प्राधार पर पदोन्नति, भले ही रिक्त स्थान हो प्रथवा न हो ।
- (2) अब तक कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल ने दो प्रतियोगी परीक्षायें ली है और जिनमें सेवा के एस-1 वर्ग के लिए 897 विज्ञानियों को चुना है । मण्डल ने विज्ञापन तथा साक्षात्कार द्वारा सेवा के विभिन्न उच्चतर पदों के लिए 510 विज्ञानियों को भी चुना है। चुंकि ये चुनाव एक-एक पद के लिए अलग-अलग किए गए थे, अतः केवल उन विज्ञानियों की, जो सबसे उपयुक्त पाये गए, नियुक्ति की सिफारिश कृषि विज्ञानिक नियुक्ति मण्डल द्वारा परिषद् को की गई।
- (3) जहां तक पदोन्नित द्वारा नियुक्तियों का प्रश्न हैं, भले जगह खाली हो या न हो, कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल ने सेवा के सभी पावता प्राप्त विज्ञानियों का पहला पंच-वर्षीय मूल्यांकन किया था। ग्रब तक मण्डल ने लगभग 450 विज्ञानियों की पदौन्नित की सिफारिश की है ग्रौर सैंकड़ों ग्रन्य विज्ञानियों को मामले विचाराधीन हैं। यह मूल्यांकन विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के प्रमुख विज्ञानियों की समिति द्वारा किया जाता है। जिस पद के लिए कोई व्यक्ति भर्ती किया जाता है, उस पद के कार्यों ग्रौर ग्रपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन में जो उस व्यक्ति के योगदान ग्रौर उपलब्धियों पर दिया जाता है मूल्यांकन करते समय जिन दस्तावेजों को ध्यान में रखा जाता है वे हैं:—
 - (i) पंचवर्षीय मूल्यांकन प्रोफार्मा को संबंधित विज्ञानी भरता है ग्रौर वरिष्ठ विज्ञानी जिसके नीचे वह विज्ञानी काम करता है, उसका पुनरीक्षण करता है;
 - (ii) विज्ञानी द्वारा रखी जाने वाली अनुसंघान प्रायोजना फाईल;
 - (iii) विज्ञानी का जीवन-वृत्तं तथा कैरियर संबंधी सूचना; ग्रौर
 - (iv) पिछले पांच वर्षों की गोपनीय चरित्र पंजियां। यदि कोई विज्ञानी चाहे तो उसे व्यक्तिगत विचार-विमर्श के लिए मूल्यांकन समिति के सामने पेश होने का अवसर भी दिया जाता है। यह विचार-विमर्श, विज्ञानी की शैक्षणिक

योग्यता तथा सँद्धांतिक ज्ञान को ग्रांकने के लिए ग्रोंपचारिक या सामान्य प्रकार का साक्षात्कार नहीं होता । बल्कि इसका उद्देश्य उसे एक ग्रवसर प्रदान करना होता है ताकि वह मूल्यांकन की ग्रवधि के दौरान किए ग्रपने काम व उपलब्धियों को प्रकाश में ला सके ग्रौर साथ ही ग्रपने काम के किन्हीं विशेष पहलुग्रों की व्याख्या या स्पष्टीकरण कर सकें।

महाराष्ट्र के इंजीनियरिंग कालेजों में स्थानों की संख्या में वृद्धि

- *412 डा० वसन्त कुमार पंडित: क्या शिक्षा, समाज कल्याण ग्रीर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या वर्ष 1977-78 के दौरान महाराष्ट्र में इन्टर साइन्स ग्रीर बारहवीं श्रेणी की परीक्षाग्रों में उतीर्ण होने वाले छात्रों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है;
- (ख) क्या महाराष्ट्र के इंजीनियरिंग कॉलैजों में स्थानों की स्वीकृत संख्या बढ़ी हुई मांग को पूरी करने के लिए अपर्याप्त है; श्रीर
- (ग) सरकार ने इंजीनियरिंग कालेजों में स्थानों की संख्या में वृद्धि करने के बारे में महाराष्ट्र सरकार के प्रस्ताव पर क्या निर्णय लिया है?

शिक्षा, समाज कल्याण श्रीर संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्दर)ः (क) श्रीर (ख). जी, हां।

(ग) इस मामले पर राज्य सरकार से विचार विमर्श किया गया था, जिसे कुछ सुझाव दिये गये थे । इन विचार विमर्शों को ध्यान में रखते हुए, राज्य सरकार इस वर्ष के लिए दाखिले को बढ़ाने के ब्यौरे तैयार कर रही है।

बदल बदल कर फसल उगाना

- *413. श्री के ० लकप्पा: क्या कृषि श्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करें के
- (क) क्या हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों का विचार है कि यदि उर्वरकों का सन्तुलित प्रयोग नहीं किया जाता तो निरन्तर बदल बदल कर फसल उगाने से भूमि की उर्वरता को हानि होती है; श्रीर
 - (ख) यदि हाँ, तो तत्सम्बन्धी तथ्य क्या हैं?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) जी हां, श्रीमान।

(ख) हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विज्ञानियों द्वारा किए गए उन खेतों के परि-क्षणों में जिनमें केवल नाइट्रोजन एवं पोटाश लगाया गया, गेहूं की उपज का झुकाव 1971— 72 में 29.3 प्रति हेक्टर से घटकर 1975—76 में 13.4 प्रति हेक्टर ग्रर्थात् नीचे की श्रीर होता दिखाई दिया । जिन खेतों में तीनों प्रमुख पोषक पदार्थ—नाइट्रोजन , पोटाश एवं फास्फोरस डाले गए उनमें उपज 32.3 प्रति हेक्टर से ऊपर थी । इसी प्रकार एनं पीक कैं॰ की पूरी माला देने की तुलना में एन॰ पी॰ के॰ के साथ 25 किलोग्राम प्रति हेक्टरा जिंक सल्फेट डालने पर उपज 3 से 5 किंवटल प्रति हेक्टर ग्रधिक रही।

उपरोक्त म्रांकड़े फसलों में विवेकपूर्ण तथा संतुलित उर्वरकों के प्रमोग की म्रावश्यकताः को स्पष्ट करते हैं।

श्रपने मकान रखने वाले कर्मचारियों के लिए सरकारी श्रावास

* 414. चौ० बलवीर सिंह:

श्री मीठा लाल पटेल :

क्या निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे

- (क) क्या सरकार ने उन कर्मचारियों को जिनके ,ग्रपने मकान हैं, सरकारी ग्रावास ग्रपने पास रखने की ग्रनुमित दे दी है;
- (ख) क्या केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों की कुछ संस्थाग्रों ने इस निर्णय का विरोध किया है; ग्रौर
- (ग) क्या सरकार का विचार इस निर्णय पर पुर्निवचार करने का है?

 निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) ग्रपने

 निजी मकान वाले ग्रिधकारी कुछ शर्ती पर सरकारी वास के ग्रांवटन के पाल हैं।
 - (ख) जी, हां।
 - (ग) जी, नहीं ।

अदमान श्रौर निकोबार द्वीप समुहों में शरणाथियों का पुनर्वास

- *415 श्री समर गुह: क्या निर्माण श्रीर श्रावास तथा पूर्ति श्रीर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या भूतपूर्व पूर्वी पाकिस्तान के ग्रनेक शरणार्थियों ने, जो विभिन्न शरणार्थी शिविरों में रखे गए थे सरकार से ग्रनेक बार ग्रपील की है कि उन्हें ग्रंडमान ग्रौर निकोबार द्वीप समूहों में बसाया जाये;
- (ख) क्या केन्द्रीय सरकार ने अंडमान द्वीप समूहों में भूतपूर्व पूर्वी पाकिस्तान के जरणार्थियों का पुनर्वास करने के मामले का गम्भीरता से अध्ययन करने हेतु एक उच्च शक्तिः प्राप्त समिति का गठन किया था ;
- (ग) क्या उक्त समिति ने सरकार से यह सिफारिश की थी कि अंदमान द्वीप समूहः मैं 1972 तक 1,50,000 शरणार्थियों के पुनर्वास की कार्यवाही की जाये;
- (घ) यदि हां, तो केन्द्रीय उच्च शक्ति प्राप्त समिति की सिफारिशों के तक्ष्य क्याः हैं तथा उनकी सिफारिशों को कहां तक कियान्वित किया गया है; श्रीर

(ङ) ग्रंदमान द्वीप समूह में पूर्वी पाकिस्तान के शरणार्थियों का पुनर्वास करने की वर्तमान नीति तथा कार्यक्रम क्या हैं ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त) : (क) जी, हां ग्रण्डमान द्वीप समूह में पुनर्वास के लिए दो शिविर ग्रर्थात् देवली तथा तावा परियोजनाग्रों के शरणार्थियों से कुछ ग्रम्यावेदन प्राप्त हुए थे।

- (ख) जी, हां । एक ग्रन्तिवभागीय सिमिति 1964 में गठित की गई थी।
- (ग) जी, नहीं । इस समिति ने चौथी योजना के ग्रन्त तक प्रवासियों प्रत्यावासियों के लगभग 6250 परिवारों को पुनर्वास देने के लिए ग्रण्डमान द्वीप समूह में भूमि उद्धार की सिफारिश की थी।
- (घ) सिमिति ने लगभग 10,000 प्रवासी/प्रत्यावासी परिवारों के पुनर्वास के लिए भावी योजनास्रों में भी भूमि उद्धार की सिफारिश की थी।

न्त्राज तक जिस सीमा तक कार्यान्वयन किया गया है उसका स्यौरा निम्न है :---

द्वीप का नाम	उद्घार किया गया क्षे त	बसाए गए परिवार
(i) मिडिल ग्रण्डमान	2050 एकड़	339 भूतपूर्व पूर्वी पाकि- स्तान से ग्राए प्रवासी परिवार
(ii) नील	1090 एकड़	100 भूतपूर्व पूर्वी पाकि- स्तान से म्राए प्रवासी परिवार
(iii) लिटिल ग्रण्डमान	2284 एकड़	381 परिवार (भूतपूर्व पूर्वी पाकिस्तान से ग्राये 366 प्रवासी परिवार तथा श्री लंका से ग्राए 15 प्रत्यावासी परिवार)
योग	 5424 एकड़	820 परिवार

⁽ङ) वर्तमान नीति यह है कि पुनर्वास कार्य केवल उस सीमा तक ही हाथ में लिया जाता है जितनी कि इस प्रयोजन के सम्बन्ध में वन साफ करने के लिए भूमि दी जाती है जो कि पारिस्थिक तथ्यों पर विचार करके विनियमित की जाती है। साठ प्रवासी प्रत्या-वासी परिवारों को लिटिल अण्डमान में पुनव स देने के लिए 415 एकड़ भूमि चालू वित्तीय वर्ष के दौरान दी गई है।

श्रिबल भारतीय कांग्रेस समिति को आबंटित किए गए अथवा बचे गए स्थल

- *416. श्री शिव सम्पति राम: क्या निर्माण श्रीर श्रावास तथा पूर्ति श्रीर पुनर्वास मंद्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) ग्रखिल भारतीय कांग्रेस समिति ग्रौर उसके विभिन्न विजों को ग्रांवटित किए गए ग्रथवा बेचे गए विभिन्न स्थलों की संख्या ग्रौर ग्रन्य ब्यौरे क्या हैं;
- (ख) इस प्रकार ब्रावेटित किए गए ब्रथवा बेचे गये स्थलों को कितने मूल्य पर बेचा गया है ब्रथवा कितना किराया वसूल किया जा रहा है;
- (ग) क्या सरकार ने सुनिश्चित किया है कि यह मूल्य ग्रथवा किराया ग्रेल्यधिक कम नहीं है;
- (घ) म्रखिल भारतीय कांग्रेस समिति भ्रथवा उसके विभिन्न विगो पर किंतना किराया बकाया है ग्रथवा बिकी की कितनी राशि का भ्रब तक भुगतान नहीं किया है ग्रौर उसे वसूल करने के लिए क्या कार्यवाही की गई है; ग्रौर
- (ङ) क्या सरकार का विचार बिकी ग्रंथवा ग्रांबटन के ऐसे प्रत्येक मामूलें की जांच करने ग्रीर उस पर उपयुक्त कार्यवाही करने का है ग्रीर यदि हां, तो तत्सम्बन्धी ब्यौरा क्या है ?
- निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बख्त) । (क), (ख), (ग), (घ) तथा (ङ). एक विवरण सभा पटल पर रखा है। [ग्रंथालय में रखा गया। देखिए संख्या एकं टीं 660/77]

विश्वविद्यालयों के कर्मचारियों की एक समान सेवा शतें

- *417. श्रीमिति श्रहिल्या पी० रांगनेंकर: क्या शिक्षा, समाज केल्याण श्रीर संस्कृति
- (क) क्या सरकार देश भर के विश्वविद्यालयों के गैर-शिक्षक कर्मचारियों की एक समान सेवाशर्ते, नियम बनाने पर विचार कर रही हैं; ग्रौर
 - (ख) यदि हां, तो कब ग्रीर तत्सम्बन्धी ब्यौरा क्या है?

शिक्षा, समाज कल्याण श्रौर संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र) : (क) जी नहीं।

(ख) प्रश्न नहीं उठता ।

Auditing of Accounts of M.P. Hindi Granth Akademi

- †*418. Shri Raghubir Singh Machhand: Will the Minister of Education, Social Welfare and Culture be pleased to state:
- (a) whether the accounts of the grants given to Madhya Pradesh Hindi Granth Akademi have not been audited for the last four years;
 - (b) whether despite that, grants have been given or are being given to the Akademi, and
 - (c) if so, the reasons thereof?

The Minister of Education, Social Welfare and Culture (Dr. Pratap Chandra Chunder): (a) to (c). Accounts of the Madhya Pradesh Hindi Granth Akademi, Bhopal have been duly audited by a Chartered Accountant upto 1974-75 and the audit for the year 1975-76 is in progress. The Accountant General, Madhya Pradesh has also test audited the accounts of the Akademi upto 1973-74.

Under the Centrally Sponsored Scheme of book production at University level in Hindi and regional languages, Central assistance is made available to the State Governments. The State Government releases the grants to the Madhya Pradesh Hindi Granth Akademi.

Scarcity of Water due to Construction of Kalagarh, Tumaria and Other Dams

†*419. Shri Mahi Lal: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:

- (a) whether Government are aware that as a result of the construction of Kalagarh, Tumaria and other dams there has been a scarcity of drinking and irrigation water in the rural areas adjacent to these dams and the supply of water for irrigation in the agricultural land in those areas is not being met as also a serious drinking water crisis for human beings and cattle has been created; and
 - (b) if so, the measures being taken to overcome this crisis in those areas?

The Minister of Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala): (a) and (b) A statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) and (b) So far as areas below the Ram Ganga Dam at Kalagarh are concerned, no water for irrigation could be supplied May and June, 1977 due to taking up of construction work in the river bed below the dam. So far as areas benefiting from Tumaria Dam are concerned, the natural in flows received this year were poor owing to low rainfall. Thus available waters could meet the needs of only rabi irrigation. The irrigation systems from both these dams do not specifically cater to drinking water requirements. However, as a result of irrigation supplies the water supplies from wells and tanks get augmented. The situation which arose in case of Kalagarh Dam is due to the special requirements of the construction work in the river bed. Such a situation is not normal and hence no special measures are called for to remedy the situation. So far as Tumaria Dam is concerned, the availability of water depends on the natural flow. However, in order to improve the situation, the Uttar Pradesh Government has taken up the Kosi Irrigation Scheme which would supplement the storage in Tumaria Dam by diversion of Kosi waters.

Rehabilitation of Sind Refugees in Indo-Pak War 1971

- *420. Shri Bhanu Kumar Shastri: Will the Minister of Works and Housing and Supply and Rehabilitation be pleased to state:
- (a) the number of refugees who came to India from Sind during Indo-Pak war in 1971 and the places where they have been rehabilitated in rufugee camps;
 - (b) the annual expenditure being incurred on these refugees by Central Government;
- (c) whether arrangements have been made in these refugee camps to provide complete bedding as a protection against cold; and
 - (d) whether the Central Government have any scheme to rehabilitate them permanently?
- The Minister of Works and Housing and Supply and Rehabilitation (Shri Sikander Bakht):
 (a) 74,753 persons crossed over from Sind into Rajasthan and Gujarat in the western sector, as a result of Indo-Pak conflict 1971. 53,117 of these persons are receiving relief assistance in camps in Barmer, Jaisalmer and Jalore districts in Rajasthan State and Kutch and Banaskantha districts in Gujarat State.
- (b) About Rs. 250 lakhs per annum are being spent for providing relief assistance to these displaced persons in the camps in Rajasthan and Gujarat.
- (c) The displaced persons in camps are supplied woollen blankets/quilts, as part of the relief assistance.

(d) These displaced persons are entitled to return to Pakistan in safety and honour as and when the conditions permit. As such, schemes for their permanent rehabilitation have not been formulated. So that they may not continue to be unemployed in the camps, certain schemes have recently been sanctioned to make them self-sufficient.

Goabar Gas Plant

- *421. Shri Jagdambi Prasad Yadav: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:
- (a) whether Government consider Gobar Gas Scheme as essential for the development of agriculture and villages, and if so, the action being taken to accelerate its expansion and publicity;
- (b) whether provision of latrines has not been made compulsory in the scheme nor a grant is given therefor, and if so, whether Government propose to include provision of Community latrines in the Scheme;
- (c) whether Government have formulated a special scheme to ensure setting up of an economical Gobar Gas Plant; and
- (d) the expenditure incurred by Government for the expansion of this scheme during 1976-77 and 1977-78 and the number of Gobar Gas plants installed and also the target laid down for the installation of these plants in the country?

The Minister of Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala): (a) to (d) A statement is laid on the Table of the Sabha.

Statement

- (a) Yes, Sir. Gobar gas plants provide good quality manure as well as gas for the kitchen, and lighting of houses and streets besides providing a cleaner environment for the village. Considering its role in the development of agriculture and villages, a scheme for the setting up of 100,000 gobar gas plants has been taken up in the Fifth Five Year Plan. This programme is being implemented through the State Governments, the Agro-Industries Corporations and the Khadi and Village Industries Commission. As an incentive, a subsidy of 25 per cent in the case of small plants (60 and 100 cft), 20 per cent for plants of larger sizes and 50 per cent for plants set up in hilly and tribal areas on capital cost is being provided. Further, a subsidy of 33 per cent of the capital cost is also available for installing community gas plants. The nationalised banks are providing loan assistance for setting up of gobar gas plants. The Reserve Bank of India has recently amended their rules to facilitate the financing of gobar gas plants programme through the Cooperative Banks. The agriculture Refinanance and Development Corporation has also agreed to provide refinancing facilities to the nationalised and Land Development Banks on loans provided for setting up of gobar gas plants. Promotional measures such as demonstrations, training of extension personnel, printing of promotional literature etc. are being undertaken to give a boost to the programme.
- (b) At present there is a general prejudice against the use of gas obtained from night-soil for cooking purposes and handling of night-soil digested slurry for manurial purposes. Any compulsion for provision of latrines in the scheme might therefore evoke adverse reaction and retard the progress of the programme. However, efforts are being made to start a few pilot projects for gas production based on night soil taken on a community basis at selected places like colleges, schools having hostels, housing colonies, dairy colonies, gram panchayats etc.
- (c) Yes, Sir. An all-India coordinated project on bio-gas technology and utilisation has been formulated by the Department of Science and Technology. The research programme under this project covers the relevant aspects of bio-gas technology and utilisation including designing of an economical gobar gas plant. The Agriculture Universities of Tamil Nadu and Punjab have also initiated work on designing of cheaper models of gobar gas plants.
- (d) It is targetted to set up one lakh gobar gas plants in the country during the 5th Five Year Plan. The number of gobar gas plants set up during 1976-77 was 16,328 and the subsidy released was Rs. 102.71 lakhs. The target set for 1977-78 is 25,000 plants. The position with regard to release of subsidy for the plants to be set up during 1977-78 will be known only when the subsidy claims have been received from the implementing agencies.

श्री ग्ररविन्द सेन्टर, दिल्ली को ग्रनुदान

- *422. डा० कर्ण सिंह: क्या शिक्षा, समाज कल्याण श्रीर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या सरकार ने दिल्ली स्थित प्रस्तावित श्री ग्रारविन्द सेन्टर के लिये कोई ग्रनुदान मंजूर किया है ; ग्रीर
 - (ख) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी ब्यौरा क्या है ?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री (डा॰ प्रताप चन्द्र चन्दर): (क) जी नहीं। किन्तु पिछले तीन वर्षों में, श्री ग्रारविन्द सोसायटी को उसके पुस्तकालय के विकास के लिए, 25,000 ह॰ दिए गए हैं।

(ख) प्रश्न नहीं उठता।

गन्ने का प्रति हैक्टर उत्पादन

- * 423. श्री के मालन्ना: क्या कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
 - (क) देश के विभिन्न राज्यों में इस समय गन्ने का प्रति हैक्टर उत्पादन कितना है ; ग्रौर
- (ख) जहां तक बीजों के वितरण का प्रश्न है गन्ने का ग्रधिक उत्पादन करने के लिये छोटे किसानों को प्रोत्साहन देने हेतु सरकार ने क्या कार्यवाही की है?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) ग्रौर (ख). एक विवरणः सभा पटल पर रख दिया गया है।

विवरण

(क) सन् 1975-76 के दौरान प्रमुख गन्ना उत्पादक राज्यों में गन्ने का मीटरी टनों के प्रति हैक्टर, ग्रीसत उत्पादन निम्न प्रकार था:--

		राज्य						ट	ज (मीटरी न प्रति हैक्टर)
ভ	ा-उष्ण	कटिबन्धीय	। क्षेत्र						
श्रसम									37. 0
बिहार									36.7
हरियाणा		•	•	•					43.2
मध्य प्रदेश		•	•	•		•	•	•	30.8
पंजाब		•		•					53.7
राजस्थान				•					38. 8
उत्तर प्रदेश				•					40.1
पश्चिम बंग	ল 	•	•	•	•	•		•	58.5

राज्य उपज (मीटरी टन प्रति हैक्टर) उप-उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र

उप-उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र									
श्चान्छ प्रदेश									69.5
मु जरात									55.2
कर्नाटक			•		٠,		•	•	75.9
के्रल		·•.	•			•	•	•	53. g
महाराष्ट्र		•							88.4
उड़ीसा									65.0
तमिल नाडु									95.5
भ्रखिल भार	तीय ३	प्रौसत	•	•	•				51.2

⁽ख) गन्ना-विकास के सम्बन्ध में गन्ना उत्पादक राज्यों तथा केन्द्र सरकार के पास कई कार्यक्रम हैं। इन कार्यक्रमों में गन्ने की स्वीकृत किस्म के बीजों का उत्पादन तथा गन्ना-उत्पादकों को उसका वितरण सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है। बहुत से क्षेत्रों में गन्ना फैक्ट्रियां भी इस कार्य में सहायता करती हैं। ये सभी योजनाएं मूलतः छोटे गन्ना उत्पादकों के लाभ के लिये हैं।

ये कार्य कम निम्नलिखित हैं:--

- (द) राज्य सरकारें ग्रपने सामान्य गन्ना विकास कार्यक्रमों के ग्रन्तर्गत गन्ना जल्पादकों को, जिनमें से ग्रथिकांश लघु कृषक हैं, उन्नत किस्म के बीज के गन्ने का वितरण करने के लिए गन्ने की नर्बरियां उगाती हैं।
- (2) राज्य सरकारों के प्रयासों में सहायता देने के लिए भारत सरकार ने भी गन्ना-विकास के लिए पांचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान एक केन्द्रीय प्रायोजित योजना प्रारम्भ की है; इस योजना में उप-उष्णकिटबन्धीय गन्ना-पट्टी में स्थित प्रत्येक चीनी-फैक्ट्री के ग्रास-पास 2,000 हैक्टर क्षेत्र में ग्रीर उष्णकिट-बन्धीय पट्टी में स्थित प्रत्येक चीनी-फैक्ट्री के ग्रास-पास 1,000 हैक्टर क्षेत्र में गन्ने का विकास करने पर विचार है। इस योजना की सबसे महत्व-पूर्ष बात इसके ग्रन्तर्गत ग्राने वाले समस्त क्षेत्र को संतृष्त करना तथा हर चार वर्ष बाद स्वीकृत किस्म के ग्रच्छे बीज के गन्नों का वितरण करना है।
- (3) ग्रधिकांश सहकारी चीनी मिलें, जिनके सदस्य मुख्यतः लघु कृषक हैं, ग्रपने सदस्य उत्पादकों के लिए उत्पादन ऋण की व्यवस्था के रूप में सुविधा प्रदान करती हैं। उत्पादन-ऋण में बीज के गन्ने की खरीद भी शामिल है।
- (4) कुछ सार्वजिनक क्षेत्र एवं संयुक्त स्टाक वाली चीनी मिलें भी राष्ट्रीयकृत बैंकों से ऋण की व्यवस्था के रूप में (जिसकी वसूली गन्ना-सप्लाई के समय की जाती है) गन्ने की खेती के लिये गन्ना-उत्पादकों को सुविधायें प्रदान करती हैं।

Stock of Imported and Indigenous Wheat with F.C.I.

- *424. Shri Raghavji: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:
- (a) the stock of imported wheat and indigenous wheat with the Food Corporation of India as on 31st May, 1977;
- (b) the total quantity of wheat imported during 1976-77 and in April and May, 1977; and
- (c) the quantum of wheat with the Food Corporation of India as on 31st May, 1977 which had been lying with the Corporation for a period of more than one year?

The Minister of Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala): (a) A quantity of about 4 million tonnes of imported wheat and about 6.2 million tonnes indigenous wheat was in storage with the Food Corporation of India as on 31st May, 1977.

- (b) A quatity of 4.9 million tonnes of wheat was imported during 1976-77. No wheat was imported during April and May, 1977.
- (c) A quantity of little over 4 million tonnes of wheat in storage with the Food Corporation of India was more than one year old as on 31st May, 1977.

तमिलनाडु में वीरनाम जल सम्भरण परियोजना

3013. श्री एस० डी० सोमसुन्दरमः श्री एम० कल्याणसुन्दरमः

क्या निर्माण और स्रावास तथा पूर्ति स्रौर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) वीरनाम जल सम्भरण परियोजना में इस्तेमाल किये जा रहे नलों की कार्यकुशलता आरीर योजना की उपयोगिता के संबंध में तिमलनाडु द्वारा बनाई गई विशेषज्ञ समिति के निष्कर्ष क्या है;
- (ख) क्या योजना की कियान्विति शीघ्रता से की जायेगी / त्याग दी जायेगी / गिति धीमी कर दी जायेगी ;
- (ग) यदि योजना को शी घ्रता से किया जिया जाना है तब परियोजना को पूरा करने की ग्रन्तिम तिथि क्या निर्धारित की गई है; ग्रौर
- (घ) अब तक कितनी पूंजी लगाई गई है और इसे पूरा करने के लिये अभी और कितनी पूंजी लगाई जानी है ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बल्त): (क) तथा (ख) तकनीकी सिमिति ने यह पाया कि वेकेट टेक्नालोजी स्वभाविक रूप से विश्वस्त है । इस सिमिति ने वेकेट टेक्नालोजी का प्रयोग पर्याप्त पूर्वोपायों सिहत जारी रखने की सिफारिश की है ।

तथापि, मद्रास जल पूर्ति और जल मल निर्यास की प्रीइन्वेस्टमेंट स्टेडीज के लिए यूँ एनं डी॰पी॰ डब्ल्यू॰ एच॰ ग्रो॰टीम द्वारा नियुक्त किए गए परामर्शदाताओं ने वेकेट टेक्नालोजी के बारे में भिन्न भिन्न विचार व्यक्त किए है और उनका विचार है कि वेकेट टेक्नालोजी से बनाये गए लगभग 60,000 मीटर पाइपों की माला का पाइप लाइन के अधिक दबाव के स्थान पर उनका प्रयोग करना उपयुक्त नहीं है। निर्माण और आवास मंत्रालय के सलाहकार (पी॰एच॰ई ॰ ई॰) ने भी यह

सुझाव दिया कि इस परियोजना का देश में उपलब्ध जानकारी तथा देश में भलीभांति परीक्षित प्राधोगिकी के ग्राधार पर पुन: प्रारम्भ किया जा सकता है। तथा पहले ही निमत 60,000 मोटर पाइप का प्रयोग शहर के करीब पहुंचने वाली पाइप लाइन में किया जा सकता है जहां पर दबाव इतना ग्राधिक नहीं होता। इस परियोजना के पुन: प्रारम्भण के संबंध में राज्य सरकार सिक्रिय रूप से विचार कर रही है, जो इन सब बातों पर विचार करेगी।

- (ग) निर्णय लिये जाने के बाद इस योजना को रूर्ण करने में इसके पुनः प्रारम्भण की तिथि से लगभग 36 मास लग जायेंगे।
- (घ) ग्रब तक इस परियोजना में 22.68 करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके हैं। लगत का परिशोधित ग्रनुमान राज्य सरकार द्वारा लगाया जा रहा है।

गोग्रा में मत्स्य पत्तन

3014. श्री एडुग्राडों फ्लीरो: क्या कृषि ग्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार ने गोग्रा में कोई मतस्य पत्तन स्थापित करने की योजना बनाई है; स्रौर
- (ख) यदि हां, दो इन परियोजनाम्रों की रूपरेखा क्या है म्रौर इस संबंध में कितनी प्रगति हुई है ?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) जी हां।

(ख) मछती पकड़ने के बन्दरगाह का डिजाइन 11 से 16 मीटर तक लम्बी 250 यंतीकृत नौकाओं के सुविधाजनक संचालन के लिए तैयार किया गया है। इसमें पनधाराओं जलयानों को
ठहराने के लिए 440 मीटर लम्बे घाट, बगल में जलयान ठहराने की व्यवस्था सहित स्लिप्दे के निर्माण
और नीलामी हाल, जल स-लाई, सड़कों तथा इमारतों जैसी तट की सुविधाए शामिल हैं इस परियोजना
पर 28 93 6 लाख ह० की लागत आने का अनुमान है।

गोवा सरकार से जनवरी, 1976 में अनुरोध किया गया था कि वह स्थल की उपलिश्व डिजाइन को स्वीकार्यता तथा परियोजना के प्रस्ताव से संबंधित अनुमानों की पुष्टि करदें सूचना मिली है कि यह मामला अभी गोवा सरकार के विचाराधीन है।

कापियों की कमी

- 3015. श्री वसन्त साठे: क्या शिक्षा, समाज कल्याण श्रीर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
 - (क) क्या सरकार को कापियों की भारी कमी के बारे में पता है; स्रोर
- (ख) यदि हां, तो छात्रों को उचित मूल्य पर कापियां उपलब्ध कराने के लिए क्या कार्य-वाही की जा रही है ?

शिक्षा, समाज कल्याण और संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) तथा (ख) कापियों की कमी के बारे में राज्य सरकारों से कोई रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई है। तथापि, यह सुनिष्चित करने के लिए कि शैक्षिक सत्रों के ग्रारंभ होने पर क्षात्रों को कापियां ग्रासानी से उपलब्ध हो सकें, राज्य सरकारों संघ शासित क्षेत्रों को ग्रप्रैल-जून, 1977 की तिमाही के लिए 30120 मीटरी दन सफेद छपाई का कागज कापियां बनाने के लिए ग्रावटित किया गया है। पैपर मिलों को भी सलाह दी गई है कि वे शैक्षिक क्षेत्र की ग्रावश्यकताग्रों को परम ग्रग्रता दें तथा यह सुनिश्चित करने के लिए कि कापियों की कमी नहों, यदि ग्रावश्यक हो तो, उत्पादन को बढ़ाएं।

निजी प्रवन्ध वाले का तेजों को फर्नीचर श्रौर भवन विस्तार के लिए विश्वविद्यालय श्रनुदान ग्रायोग से श्रनुदान

श्री दुर्गा चन्द : क्या शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या हिमाचल प्रदेश, पंजाब और हरियाणा में निजी प्रबंध वाले मान्यता प्राप्त कालेजों के फर्नीचर और भवन विस्तार के लिये विश्वविद्यालय अमुदान आयोग द्वारा अमुदान नहीं दिया जाता;
 - (ख) यदि हां, तो इस के क्या कारण हैं;
- (ग) क्या विष्यिति गालय अनुदान अत्योग इसके लिसे अनुदान देने के अष्टन पर विचार कर रहा है; यदि हां, तो तत्त्र गंबी ब्योरा क्या है तथा अनुदान कब दिया जायेगा और कितना दिया जायेगा; और
 - (घ) चालू वित्तीय वर्ष में इस कार्य के लिये कितनी धनराशि नियत की गई है ?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रीर संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) से (घ) विश्वविद्यालय ग्रानुदान आयोग कालेजों को उनके विकास कार्यक्रमों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है। सभी कालेजों को, चाहे वे सरकार द्वारा ग्रथवा प्राइवेट निकायों द्वारा संचालित हों यह सहायता दी जाती है बशर्त कि वे नामांकन, संकायों की संख्या इत्यादि से संबंधित ग्रायोग द्वारा निर्धारित पात्रता की शर्तों को पूरा करते हैं। ग्रायोग की सहायता, भवनों के निर्माण, पुस्तकों तथा उपस्करों, संकाय के सुधार इत्यादि के लिए उपलब्ध है। फर्नीचर के लिए कोई ग्रलग से ग्रनुदान नहीं दिया जाता, परन्तु पढ़ाने के लिए स्थान तथा पुस्तकालय ग्रीर प्रयोग शाला भवनों के मामले में, ऐसे भवनों में फर्नीचर की व्यवस्था करने के लिए निर्माण की लागत का 10-20% स्वीकार किया जाता है।

ग्रायोग ने ग्रब तक 15 कालेजों (8 पंजाब में, 6 हरियाणा में तथा एक हिमाचल प्रदेश में) के भवन कार्यक्रम ग्रनुमोदित किए है जिस के लिए पांचवीं योजना ग्रवधि के दौरान कुल सहायता 15.97 लाख रुपये दी जाएगी। प्रत्येक राज्य में कालेजों को सहायता देने लिए ग्रायोग द्वारा पहले. से ग्रावटन नहीं किया जाता परन्तु संबंधित विश्वविद्यालय के माध्यम से, कालोजों के प्रस्तावों पर, जब कभी भी वे प्राप्त होते हैं, गुणावग्णों के ग्राधार पर विचार किया जाता है।

शुष्क क्षेत्रों में सिचाई तथा बारामी खेतों के तरीकों के बारे में किसानों को प्रशिक्षण 3017. श्री जी वाई ० कृष्णन् : क्या कृषि श्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे

(क) क्या एसोसियेटिड सीमेंट कम्पनीज ने कर्नाटिक में ग्रपने वाडी डिमोस्ट्रेशन फार्म में ग्रपनी ग्रामीण कल्याण योजना के ग्रंतर्गत शुक्त क्षेत्रों में सिचाई तथा बारानी खेती करने के तरीकों के बारे में किसानों को प्रशिक्षण देने हेतु एक कार्यक्रम ग्रायोजित किया था;

- (ख) वया इसके लेक्चरों, प्रदर्शनों, माडल डिजायनों, सामूहिक चर्चाग्रों ग्रौर फिल्मों के माध्यम के बारे में इस की उपलब्धियों से सरकार संतुष्ट है; ग्रौर
- (ग) यदि हां, तो क्या सरकार का विचार इस योजना को अन्य राज्यों में भी आरम्भ करने का है?

कृषि ग्रौर सिंवाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) एसोसियेटिड सीमेंट कम्पनी एक गैर-सरकारी संगठन है जो सरकार का उत्तरदायी नहीं है। सरकार को कर्नाटक में इस कम्पनी द्वारा प्रशिक्षण की व्यवस्था करने के संबंध में कोई विशिष्ट जानकारी नहीं है।

(ख) तथा (ग) भाग (क) के उत्तर को दृष्टि में रखते हुए प्रश्न ही नहीं उठता।

ग्रण्डमान ग्रौर निकोबार द्वीप समूह में खाद्य उत्पादन के लिए सिचाई सुविधायें

- 3018. श्री मनोरंजन भक्त : क्या कृषि श्रौर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) ग्रण्डमान ग्रीर निकोबार द्वीप समूह में कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के लिए क्या-क्या सिचाई सुविधायें दी गई हैं ;
- (ख) क्या सरकार का विचार ग्रण्डमान व निकोबार द्वीपसमूह के एक फसल उत्पा-दकों/कृषकों को सिंचाई सुविधायें देने की कोई योजना हाथ में लेने का है; ग्रौर
 - (ग) यदि हां, तो उक्त योजना की मुख्य बातें क्या हैं?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) ग्रंडमान ग्रौर निकोबार द्वीपसमूह में पिछले तीन वर्षों के दौरान लघु सिंचाई कार्यों द्वारा कुछ सिंचाई सुविधायें प्रदान की जा रही हैं।

(ख) ग्रीर (ग) इस समय जल-विद्युत उत्पादन, सिचाई ग्रीर जल-पूर्ति लाभों से संबंधित छः स्कीमों का अन्वेषण किया जा रहा है । इन स्कीमों का अन्वेषण पूरा होने ग्रीर उन्हें कियान्वित करने का फैसला लिए जाने के बाद ही इन स्कीमों का ब्यौरा प्राप्त होगा।

ग्रंडमान ग्रौर निकोबार की पांचवीं पंचवर्षीय योजना में लघु सिचाई कार्यक्रम के लिए, जिसमें कुग्रों का निर्माण, पम्पसेटों की स्थापना ग्रौर लघु लिपट सिंचाई स्कीमें शामिल हैं, 10 लाख रुपए रखे गए हैं।

श्रतिरिक्त लाद्यान्नों के लिए राज्यों से श्रनुरोध

- 3019 श्री के प्रधानी: क्या कृषि श्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगें कि:
- (क) क्या अनेक राज्य सरकारों ने अपने-अपने राज्यों में वर्तमान कमी को दूर करनें के लिए केन्द्रीय सरकार से अतिरिक्त खाद्यान्न देने का अनुरोध किया है; और

(ख) यदि हां, तो इस पर केन्द्रीय सरकार की क्या प्रतिक्रिया है?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) जी हां।

(ख) राज्य सरकारों, केन्द्र शासित प्रदेशों को गेहूं ग्रौर माइलों की सारी मांग पूरी की जा रही है। केन्द्रीय पूल में चावल की समूची उपलब्धता के ग्रनुसार, राज्यों, केन्द्र शासित प्रदेशों को चावल का यथासम्भव ग्रधिक से ग्रधिक ग्रावटन किया जा रहा है ताकि उनको सार्वजनिक वितरण प्रणाली की उचित जरूरतें पूरी की जा सकें।

Engineering Colleges and Universities

3020. Shri Ramji Lal Suman : Shri Arjun Singh Bhadoria :

Will the Minister of Education, Social Welfare and Culture be pleased to state:

- (a) the number and locations of Government recognised engineering colleges and universities in the country, separately; and
- (b) the number of new engineering colleges and Universities proposed to le opened by Government from the next academic year and locations thereof?
- The Minister of Education, Social Welfare and Culture (Dr. Pratap Chandra Chunder):
 (a) Two statements for engineering colleges and universities separately are attached. (Placed in Library, See No. L.T. 661/77)
- (b) The Central Government has no proposal under consideration to open any new engineering eollege or university during the academic year 1977-78.

बागान मजदूरों के लिए राजसहायता प्राप्त म्रावास योजना

- 3021. श्री हरेन भूभिज : क्या निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) भारत सरकार ने वित्त वर्ष 1976-77 ग्रौर 1977-78 के लिए बागान मजदूरों सम्बन्धी राजसहायता प्राप्त ग्रावास योजना के ग्रन्तर्गत ग्रासाम राज्य को ऋण तथा राजसहायता के रूप में कितनी धनराशि देना मंजूर किया है;
- (ख) ग्रब तक कितनी धनराशि का उपयोग किया गया है ग्रौर उक्त वित्तीय वर्षों में कितन बागान मजदूरों को ऋण तथा राजसहायता दी गई है;
- (ग) योजना के अन्तर्गत ऐसा ऋण तथा राजसहायता देने का आधार क्या है;
 - (घ) धनराशि की उपलब्धता सम्बन्धी वर्तमान स्थिति क्या है ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) 1976-77 में, ग्रसम सरकार की बागान कर्मचारियों की सहायता प्राप्त ग्रावास योजना के कार्यान्वयन के लिए 7.00 लाख रुपए ऋण के रूप में तथा 8.00 लाख रुपए सहायता के रूप में स्वीकृत किए गए थे। इसके ग्रलावा, ग्रसम सरकार के

पास, पिछले वर्षों में दी गई निधियों में से 9.42 लाख रुपए ऋण के रूप में तथा 16.02 रुपए सहायता के रूप में शेष बची अनुखर्ची रकम थी। जहां तक 1977-78 का संबंध है, राज्य सरकारों से कहा गया है कि वे निधियों के लिए अपनी आनुश्यकतायें बतायें। निधियों का नियतन, निर्माण कार्यों के कार्यक्रमों तथा इस वर्ष के दौरान राज्य सरकारों की निधियों की मांग पर निर्भर करेगा।

(ख) ग्रसम सरकार ने वर्ष 1976-77 के दौरान 23.78 लाख रुक्ए ऋण के रूप में तथा 25.02 लाख रुपए सहायता के रूप में उपयोग किए । ग्रसम सरकार द्वारा 31-3-1977 तक उपयोग की गई कुल रकम 136.59 लाख रुपए ऋण के रूप में ग्रौर 77.17 लाख रुपए सहायता के रूप में श्री तथा ग्रसम सरकार ने 8608 मकानों के निर्माण की मंजूरी दी थी।

योजना के ग्रधीन बागात कर्मचारियों को मकानों के निर्माण के लिए निधिया, सीधे नहीं दी जातीं बल्कि बागान मालिकों को राज्य सरकारों के माध्यम से दी जाती हैं।

- (ग) स्थानिक बागान कर्मचारियों को बिना किराए के वास देने के लिए प्लांटेशन लेबर एक्ट, 1951 के अधीन बागान मालिकों को सांविधिक वचन बद्धता पूरी करने हेतु सहायता देने के लिए उन्हें निधियां दी जाती हैं तािक वे निर्माण की वास्तविक या लेखा-परीक्षित लागत या निर्धारित अधिकतम लागत, इनमें से जो भी सबसे कम हो, की 871 र्वे प्र० श० निधियों (50 प्र० श० ऋण के रूप में तथा 37 र्वे प्र० श० सहायता के रूप में) से अपने पात कर्मचारियों के लिए मकान बना सके।
- (घ) इस योजना को सारे देश में कार्यान्वित करने के लिए 1977-78 के बजट में 2.10 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है।

'दस्तूर योजना' के वित्त पोषण के लिए विश्व बैंक से सम्पर्क

- 3022 श्री माधवराव सिंधिया : तथा कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे
- (क) क्या देश में विद्युत के उत्पादन तथा बाढ़ों पर नियंत्रण पाने सम्बन्धी 'दस्तूर योजनों' के वित्तपोषण के लिए सरकार का बिचार विश्व बैंक से सम्पर्क करने का है;
- (ख) यदि हां, तो सरकार ने इस बारे में अब तक क्या कार्यवाही की है; श्रीर
 - (ग) इस पर विश्व बैंक की क्या प्रतिक्रिया है ?

कृषि और सिचाई संत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) दस्तूर योजना एक धारणा पर आधारित योजना है। दस्तूर योजना में परिकल्पित स्कीमों के लिए विश्व बैंक से सहायता प्राप्त करने का कोई प्रस्ताव नहीं है।

(ख) स्रीर (ग) ये सवाल पैदा ही नहीं होते।

रेही मिट्टी को कृषि योग्य बनाना

3023. श्री सतीश स्रग्नवाल: क्या कृषि स्रौर सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि.

- (क) विभिन्न राज्यों में कितनी कितनी भूमि रेही मिट्टी वाली है ग्रौर क्या इस प्रकार की मिट्टी के क्षेत्रफल में कोई वृद्धि हुई है ग्रौर यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं ;
- (ख) वया सरकार का विचार ऐसी भूमि को कृषि योग्य बनाने हेतु कोई योजना बनाने का है ग्रौर यदि हां, तो तत्संबंधी मुख्य बांतें क्या हैं; ग्रौर
- (ग) क्या सरकार को पता है कि कृषि में रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग से मिट्टी धीरे धीरे रेही मिट्टी में परिवर्तित हो जाती है और इसको रोकने के लिए क्या कदम उठाने का विचार है ?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला) : (क) कोई विस्तृत सर्वेक्षण नहीं किया गया है परन्तु ग्रनुमान है कि देश में क्षारीय मृदा का क्षत्र लगभग 25 लाख हैक्टैयर है । इसमें से उत्तर प्रदेश में 9 लाख हैक्टैयर, पंजाब में 4.5 लाख हैक्टैयर ग्रौर-हिरयाणा में 3.5 लाख हैक्टैयर क्षेत्र है। शेष 8 लाख हैक्टैयर क्षेत्र ग्रन्य राज्यों में है।

ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि जिससे यह पता चले कि क्षारीय मृदा वाले क्षेत्र में कोई ग्रौर वृद्धि हुई है।

(ख) जी हां।

कृषि विभाग ने मौजूदा पंचवर्षीय योजना के दौरान क्षारीय क्षेत्र भूमि का सुधार करने के लिए मार्गदर्शी आधार पर एक केन्द्रीय प्रायोजित योजना प्रारम्भ की है।इसके ग्रंतर्गत उत्तर प्रदेश, पंजाब ग्रौर हरियाणा में 64,000 हैक्टैयर क्षारीय भूमिका सुधार करने के लिए 7 करोड़ रु० ग्राबंटित किया गया है। यह कार्यक्रम उन क्षेत्रों में प्रारम्भ किया गया है जहां निश्चित रूप से ग्रच्छी किस्म का जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।

इस योजना में लघु एवं सीमान्त कृषकों को, जिनके पास 3 हैक्टैयर तक जोते हैं, सुधार की सामग्री की लागत पर 50% ग्रीर ग्रन्य कृषकों को 25% राज सहायता दी जाएगी इसके ग्रातिरक्त राज्य सारकारों से यह ग्राशा की जाती है कि वे ग्रपने संसाधनों में से उपर्युक्त दोनों श्रेणी के कृषकों को 25% ग्रायिक सहायता प्रदान करेंगी। सुधार पर होने वाली शेष लागत का भार कृषक स्वयं वहन करेंगे।

(ग) जी नहीं।

इसके विपरीत स्रमोनियम सल्फेट जैसे रासायनिक उर्वरकों का उपयोग क्षारीय भूमि के सुधार में लॉभप्रद पाया गया है ।

समाचारपत्रों में दिल्ली विश्वविद्यालय के परीक्षा परिणाम

- 3024. श्री शंकर्रांसहजी बाघेला : क्या शिक्षा, समाज कल्याण श्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) क्या यह बात सरकार के ध्यान में ग्राई है कि दिल्ली विश्वविद्यालय की विभिन्न परिक्षाग्रों के परिणाम सभी प्रमुख समाचारपत्नों में प्रकाशित नहीं हो रहे है; ग्रौर
- (ख) यदि हां, तो इस बारे में तथ्य क्या है ग्रौर यह बात सुनिश्चित कराने के लिए कि दिल्ली विश्वविद्यालय के सभी परिणाम सभी प्रमुख समाचारपत्नों में प्रकाशित हों, क्या कदम उठाने का विचार है ?
- शिक्षा, समाज कल्याण और संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) ग्रीर (ख) दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा भेजी सूचना के अनुसार विश्वविद्यालय परिणाम-श्रिधसूचनात्रों की प्रतियां प्रकाशन के लिए दिल्ली के सभी प्रसिद्ध समाचारपत्नों को नियमित रूप से भेजी जाती है। समाचारपत्नों से ग्रागे यह अनुरोध किया गया है कि परिणामों को किसी कारण से छापना उनके लिए सम्भव न हो तो कम से कम उन्हें उन परीक्षाग्रों के नामों को समाचार कालमों में देना चाहिए जिनके परिणाम घोषित किए गए है ताकि छात्न उन सम्बन्धित संस्थाग्रों से सम्पर्क कर सकें जिनके पास परिणाम ग्रिधसूचनाग्रों को नोटिस बोर्ड पर दिखाने के लिए भेजा जाता है। परिणाम ग्रिधसूचनाग्रों को प्रतियों को प्रचार कार्य के लिए विशेष सूचना ब्यूरो, समाचार, युववाणी ग्रीर युवक बुलैटिन को भी भेजा जाता है।

गुजरांवाला गृह निर्माण सहकारी सिमिति, दिल्ली को लाभ और हानि

- 3025. श्री राम कंवार बेरवा: क्या निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) वर्ष 1967-68 से अब तक की लेखा परीक्षा रिपोर्टी के अनुसार गुजरांवाला गृह निर्माण सहकारी समिति, दिल्ली का वर्ष-वार कुल लाभ और हानि का ब्यौरा क्या है;
 - (ख) समिति की विकास निधि में कूल कितनी धनराशि जमा की गई है;
- (ग) क्या सरकार को पता है कि समिति द्वारा इस धनराशि का उपयोग भूमि के विकास के बजाय अन्य प्रयोजनों के लिए किया जा रहा है; और
- (घ) यदि हां, तो यह सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा क्या कार्यवाही की जा रही है कि उक्त धनराशि समिति के शेष सदस्यों के लिए भूमि का विकास करने के बजाए ग्रन्य प्रयोजनों पर खर्च न की जाए?
- निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) से (घ) सूचना एकत की जा रही है।

राष्ट्रीय बीज परियोजना

3026. श्री एस० ग्रार० दामाणी: क्या कृषि ग्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- े (क) विश्व बैंक की सहायता से स्थापित की गई राष्ट्रीय बोज परियोजना के बारे में पूर्ण तथ्य क्या हों;
 - (ख) इस परियोजना के अन्तर्गत अब तक क्या कार्य हुआ है, और
- (ग) वया कृषि मंत्रालय तथा योजना ग्रायोग ग्रब इसके हक में नहीं है ग्रौर यदि हां, तो इसके क्या कारण है ?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला) : (क), (ख) ग्रौर (ग) : पंजाब, हरियाणा, ग्रांध्र प्रदेश ग्रौर महाराष्ट्र में राज्य बीज निगमों को स्थापना करने ग्रथवा जन्हें सहायता पहुंचाने के लिए सहायक सुविधाग्रों कार्यक्रमों के विषय में एक प्रस्ताव विश्व बैंक को भेजा गया था।

इस परियोजना का उद्देश्य राज्य बीमा निगमों द्वारा शेयर धारक उत्पादकों के सिक्रय सहयोग से विभिन्न सुविधाओं वाले सहत क्षेत्रों में अधिप्रमाणित बीजों का उत्पादन करना है। यह राज्य में उपयोग में लाने तथा अन्य राज्यों में भी बेचने के लिए अभिज्ञात धान्यों तथा अन्य प्रमुख कसतों के बीजों का उत्पादन करेगी। यह अधिप्रमाणित बीजों का उत्पादन करने परिसंस्करण करने वाले व्यक्तियों एवं सहकारी संस्थाओं को प्रोत्स उन देगी। यह परियोजना आने वाले वर्षों में बढ़ती हुई मांगों को पूरा करने के लिए बीजों के उत्पादन, परिसंस्करण, ग्रुप नियंत्रण, संचयन और विपणन के लिए आवश्यक अवस्थापन सम्बन्धी सुविधाओं का मृजन करने बढ़ाने सुदृढ़ करने के लिए धनराशि प्रदान करेगी। परियोजना के प्रस्तावों का विश्व वैंक द्वारा मूल्यांकन और विचारविमर्श पर विचार किया गया था। योजना आयोग और विचा मंत्रालय द्वारा भी इन प्रस्तावों पर विचार किया गया था। उनके विचारों को दृष्टिगत रखते हुए संशोधित परियोजना पर भारत सरकार विचार कर रही है।

भवन निर्माण पर लगाये गये प्रतिबन्धों को हटाया जाना

3027. श्री वयालार रवि:

श्री एन० श्रीकान्तन नायरः श्रीके० कुन्हम्बुः

वया निर्माण श्रौर श्रावास तथा पूर्ति श्रौर पुनर्वास मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे

- (क) क्या भवन निर्माण पर प्रतिबन्ध लगा दिये जाने के कारण देश में यह कार्य बहुत धीमा पड़ गया है;
- (ख) यदि हाँ, तो क्या सरकार का विचार भवन निर्माण पर लगाये गये प्रतिबन्धों को हटाने का है; ग्रौर

(ग) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी व्यौरा क्या है ?

निर्माण और ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंती (श्री सिकस्टर वस्त): (क) भवन निर्माण पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाये गये है। तथापि, नगर भूमि (ग्रिधिकतम सीमा तथा विनियमन) ग्रिधिनियम, 1976 के बनने के तत्काल बाद, सारे देश में भवन निर्माण की गतिविधि धीमी हो गई।

(ख) तथा (ग) : नगर भूमि (ग्रधिकतम सीमा तथा विनियमन) ग्रधिनियम के उल्लंघन किए बिना भवन-निर्माण गतिविधि को प्रोत्साहन देने के लिए ग्रपेक्षित प्रशासनिक उपायों को ध्यान में रखते हुए इस ग्रधिनियम के मार्ग निर्देशों का पुनरीक्षण किया जा रहा है।

त्रिलोकी कालोनी, दिल्ली में विकास-कार्य

3028. श्री कचरू लाल हेमराज जैन: क्या निर्माण ग्रीर श्रावास तथा पूर्ति ग्रीर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) तिलोकी कालोनी (बापू पार्क) कोटला मुबारकपुर दिल्ली, के ग्रिधगृहीत क्षेत्र में विकास कार्य की प्रगति का व्यौरा क्या है;
 - (ख) उक्त अधिगृहीत क्षेत्र का विकास कार्य कब तक पूरा होने की सम्भावना है;
- (ग) क्या उक्त कालोनी के गैर-श्रिधगृहीत क्षेत्र का विकास-कार्य करने के प्रश्न पर भी विचार किया जा रहा है; श्रौर
- (घ) यदि हां, तो इस गैर-ग्रिधगृहीत क्षेत्र का किस प्रकार विकास करने का प्रस्ताव है, विशेष रूप से जब कि कालोनाइजर ने प्लाट मकान मालिकों की उपेक्षा करते हुए दस साल से ग्रिधक समय में भी विकास कार्य पूरा नहीं किया है ?

निर्माण और भ्रावास तथा पूर्ति और पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) विलोकी कालोनी (बापू पार्क) कोटला मुबारकपुर नामक भ्रजित क्षेत्र में कोई विकास कार्य नहीं चल रहा है।

- (ख) प्रश्न ही नहीं उठता ।
- (ग) जी, नहीं।
- (घ) प्रश्न ही नहीं उठता ।

Admissions in Engineering Colleges

3029. Shri Ishwar Choudhary: Will the Minister of Education, Social Welfare and Culture be pleased to state:

- (a) whether it has been decided that only those students are to be given admissions in Engineering Colleges who have passed Higher Secondary examination with English as main subject;
- (b) whether students passing with Hindi and other languages will be deprived of the facility; and
 - (c) if so, the reasons therefor?

The Minister of Education, Social Welfare and Culture (Dr. Pratap Chandra Chunder):
(a) No such decision has been taken by the All India Council for Technical Education on the Central Government.

(b) and (c): Does not arise.

ग्रनिर्णीत ग्रन्तर्राज्यीय जल विवाद

3030. श्री सी० के० चन्द्रप्पन: क्या कृष्टि श्रीर सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार का विचार कई दशाब्दियों से ग्रिनिणीत पड़े ग्रन्तर्राज्यीय जल विवादों को निपटाने के लिए कोई नय कदम उठाने का है; ग्रीर
 - (ख) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) सरकार का दृष्टिकोण यह रहा है कि जल-विवादों को बातचीत के जरिए सुलझाया जाए। इस दिशा में प्रयत्नों को भविष्य में जोरदार बनाए जाने का प्रस्ताव है। सरकार राज्य सरकारों के परामर्श से जल-विवादों को शीधाता से तय करने के उपयुक्त तरीके भी निकालने की इच्छक है।

(ख) इस मामले की जांच की जा रही है।

दिल्ली में यंजीकृत गृह निर्माण सहकारी सिमितियां जिन्हें भूमि नहीं दी गई

- 3031. श्री सुखदेव प्रसाद वर्मा: क्या निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मन्त्री यह बताने की कृया करेंगे कि:
- (क) दिल्ली में ऐसी कितनी पंजीकृत गृह निर्माण सहकारी समितियां है जिनको ग्रव तक भूमि ग्राबंटित नहीं की गई हैं; ग्रौर
 - (ख) इसके क्या कारण हैं ?

तिर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बख्त): (क) तथा (ख) सूचना एकत्र की जा रही है।

Cultivation of Lac in Ranchi District

- 3032. Shri Karia Munda: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:
- (a) whether Government are aware that thousands of farmers are engaged in the Cultivation of lac in Ranchi district;
- (b) whether Government have any proposal for ensuring full consumption of lac and setting up a special industry therefor;
 - (c) whether Government propose to set up a lac industry in Ranchi, and
- (d) whether Government propose to make such arrangements under which lac produced in Ranchi district may be fully utilized. we meterial in the lac industry in the country.

The Minister of Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala) - (a) Yes, Sir.

(b) to (d): The Government of India have no proposal at present for setting up any special industry with lac as the raw material, either in Ranchi or elsewhere in the country.

श्रनधिकृत तथा गैर-मंजुरशुदा स्कूलों के बारे में सर्वेक्षण

3033. श्री डी० बी० चन्द्र गौडाः क्या शिक्षा, समाज कल्याण श्रीर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

- (क) क्या सरकार ने देश में अनिधकृत तथा गैर-मंजूरशुदा स्कूलों के बारे में कोई सर्वेक्षण किया है;
 - (ख) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी राज्यवार ब्यौरा क्या है; स्रौर
- (ग) क्या सरकार को पता है कि विशेष रूप से गैर-सरकारी प्राथमिक स्कूलों में खर्चा बहुत ग्रधिक पड़ता है ग्रौर उनका प्रबन्ध भी सन्तोषजनक नहीं है।?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री (श्री प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) केवल गैर-मंजूरशुदा स्कूलों को छोड़कर ग्रनिधकृत स्कूलों के रूप में ऐसा कोई वर्गीकरण नहीं है। हैदराबाद, सिकन्दराबाद ग्रौर दिल्ली में राष्ट्रीय शिक्षा, ग्रनुसंधान ग्रौर प्रशिक्षण परिषद् द्वारा नमूना ग्रध्ययन प्रारम्भ किया गया था तथा राष्ट्रीय शिक्षा, ग्रनुसंधान ग्रौर प्रशिक्षण परिषद ने तीसरे ग्रखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षणों में गैर-मंजूरशुदा स्कूलों के बारे में सूचना एकत करने का भी प्रयास किया था, लेकिन इन संस्थाग्रों की सूचना भेजने की जिम्मेदारी न होने के कारण इसे पूरा नहीं कहा जा सकता है।

- (ख) तीसरे ग्रखिल भारतीय शैक्षिक व सर्वेक्षण के ग्रधीन राज्यों संघ क्षेत्रों द्वारा गैर-मंजूरशुदा स्कूलों ग्रौर दाखिला की संख्या के बारे में भेजी गई सूचना संलग्न है। [ग्रंथालय में रखा गया/देखिये संख्या एल० टी० 662 77]
- (ग) सामान्यतः यह सही है कि गैर सरकारी प्रबन्धों द्वारा चलाए जा रहे प्राथमिक स्कूल सरकारी स्कूलों की तुलना में खर्चीले हैं, लेकिन उनका प्रबन्ध संतोषजनक नहीं है, इस प्रकार का सामान्य वक्तव्य देना संभव नहीं है।

दिल्ली में भूतपूर्व कार्याकारी पार्षदों के पास सरकारी भ्रावास

3034 श्री श्रनन्त दबे: क्या निर्माण श्रीर श्रावास तथा पूर्ति श्रीर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) दिल्ली के उन भूतपूर्व कार्यकारी पार्षदों के नाम क्या हैं, जिनके पास ग्रब भी सरकारी ग्रावास हैं;
- (ख) उनमें से प्रत्येक से कितना मासिक किराया लिया जा रहा है तथा ऐसे प्रत्येक कार्यकारी पार्षद कब से बाजार दर पर किराया देने के उपरान्त इन ग्रावासों में रह रहे हैं; ग्रीर

(ग) इन व्यक्तियों से सरकारी स्थान बेदखली स्रिधिनियम के स्रन्तर्गत स्रावार खाली कराने के लिए क्या कार्यवाही की गई है ?

निर्माण ग्रौर ग्रवास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त) : (क) दिल्ली के निम्नलिखित भूतपूर्व कार्यकारी पार्षद श्रभी भी सरकारी वास के दखल में हैं :---

- 1. श्री राधा रमण
- 2. श्री मांगे राम
- 3. श्री ग्रो० पी० बहल।
- (ख) श्री मांगेराम को 4 मई, 1975 से 923 रुपये प्रतिमाह की दर से मार्किट किराया देना पड़ेगा । अन्य दो को 6 मई, 1977 से मार्किट किराया देना पड़ेगा जिसकी दरें अभी निर्धारित की जा रही हैं।
- (ग) तीनों के विरुद्ध लोक परिसर (ग्रनिधकृत दखलकारों की बेदखली), ग्रिधिनियम, 1971 के ग्रिधीन बेदखली की कार्रवाई ग्रारम्भ की जा चुकी है।

माडर्न बैकरीज ईड पल्ली के कर्मचारियों की मांगें

3035. श्री के० ए० राजन: क्या कृषि श्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या ईडपपल्ली स्थित मार्डन बैकरीज के कर्मचारियों ने ग्रपनी मांगों के समर्थन में इस वर्ष 3 जून से ग्रनिश्चितकालीन हड़ताल ग्रारम्भ कर दी है; ग्रौर
- (ख) यदि हां, तो उनकी मांगें क्या हैं तथा इस विवाद को निबटाने के लिए क्या कार्यवाही की गई है ?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) जी हां।

(ख) मांगों ग्रौर प्रबन्ध द्वारा इस विवाद को हल करने के लिए किए गए उपायों को बताने वाला एक विवरण संलग्न है।

विवरण

मार्डन बेकरीज कर्मचारी संघ के कोचीन यूनिट की निम्नलिखित मुख्य-मुख्य मांगें हैं :--

- (1) कर्मचारियों के वेतनमानों में संशोधन करना।
- (2) मंहगाई भत्ते, मकान किराया भत्ते, परिवहन सम्बन्धी राजसहायता कैंटीन सम्बन्धी राज-सहायता ग्रीर कई एक ग्रन्य भत्तों में वृद्धि करना ग्रीर नगर भत्ते का भी भुगतान करना।
- (3) कार्यालय स्टाफ के कार्य-समय में परिवर्तन करना, स्राकस्मिक ग्रवकाश, छुट्टियों स्नादि में वृद्धि करना।

- (4) पदोन्नित नीति को शुरू करना ग्रौर कुछेक वर्षों की सेवा करने के बाद पदोन्नित देना ग्रौर प्रोत्साहन बोनस शुरू करना।
- (5) ग्रावास निर्माण ऋण ग्रीर बच्चों के लिए शैक्षणिक भत्ता देना।
- 2. इस विवाद को हल करने के लिए समझौता करने के बारे में कार्यवाही की गई थी लेकिन बातचीत विफल हो गई थी। उसके बाद कोचीन से कर्मचारियों के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की गई थी जिसका कोई परिणाम नहीं निकला था। निदेशक बीर्ड ने एक उच्च स्तरीय समिति नियुक्त की है ताकि वे कर्मचारियों की यूनियन/फैंडरेशन के प्रतिनिधियों के साथ उनकी मांगों के घोषणा पत्न के बारे में ग्रागे बातचीत करें ग्रीर इस सम्बन्ध में बातचीत ग्रभी भी चल रही है।

सिंचाई परियोजनाम्रों के लिए विश्व बैंक से सहायता

3036 श्री पी राजगोपाल नायडू: क्या कृषि श्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि .

- (क) देश की कितनी सिंचाई परियोजनाम्नों के लिये विश्व बैंक द्वारा सहायता दी जा रही है; ग्रौर
 - (ख) परियोजनात्रों के नाम क्या हैं ?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री मुरजीत सिंह बरनाला): (क) ग्रौर (ख) ग्रान्ध्र प्रदेश की दो बृहद सिंचाई परियोजनाग्रों ग्रर्थात गोदावरी बराज ग्रौर नागार्जुनसागर परियोजना को विश्व बैंक से ऋण सहायता प्राप्त हो रही है। नागार्जुनसागर परियोजना को सहायता के करार में कमान क्षेत्र विकास भी शामिल है।

विश्व बैंक निम्नलिखित परियोजनाम्रों के लिए भी ऋण सहायता प्रदान कर रहा

- (i) राजस्थान नहर कमान क्षेत्र विकास
- (ii) चम्बल कमान क्षेत्र (मध्य प्रदेश)
- (iii) चम्बल कमान क्षेत्र (राजस्थान)

लघु सिचाई सम्बन्धी निर्माण-कार्य ग्रान्ध्र प्रदेश, बिहार, हरियाणा, कर्नाटक मध्य प्रदेश, तिमलनाडु, उत्तर प्रदेश ग्रौर पश्चिम बंगाल में ग्रन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ की ऋण-परियोजनाग्रों के भाग हैं।

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की स्टूडेन्ट्स यूनियन के प्रेसीडेंट का निष्कासन

3037. श्री समर मुखर्जी: : क्या शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(फ़्र) क्या सरकार को पता है कि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के उप कुलपति ने शिक्षा परिषद् के पदेन सदस्य के रूप में परिषद् की बैठक में ब्राने के ब्रपने ब्रधिकार का उपयोग करके स्टूडैन्ट्स यूनियन के प्रेसीडेन्ट, श्री डी० पी० विपाठी को विश्वविद्यालय से निष्कासित कर दिया था;

- (ख) क्या सरकार का विचार उप कुलपित द्वारा विश्वविद्यालय के शैक्षिक मान दंडों के उल्लंघन के बारे में जांच करने का है; श्रौर
 - (ग) यदि हां, तो ग्रब तक इस बारे में क्या कदम उठाए गये हैं?

शिक्षा, समाज कल्याग ग्रीर संस्कृति मंत्री (डा॰ प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा भेजी गई सूचना के ग्रनुसार, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्र संघ की ग्रविध 22 ग्रक्तूबर, 1975 को समाप्त हो गई थीं। ग्रतः जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्र संघ के ग्रध्यक्ष द्वारा ग्रधिक ग्रधिकृत शिक्षा परिषद को पदेन सदस्यता भी उसी तारीख को समाप्त हो गई थी। छात्र संघ के ग्रवकाश प्राप्त ग्रध्यक्ष श्री डी॰ पी॰ त्रिपाठी को तदनुसार, 6 नवम्बर, 1975 को उन्हें इस बात से सूचित कर दिया गया था जब 7 नवम्बर, 1975 को ग्रपराह्म 4.00 बजे ग्रपना कार्य प्रारम्भ करने हेतु शिक्षा परिषद की बैठक हई तो श्री विपाठी ने ग्राकर एक स्थान ग्रहण कर लिया ग्रीर ग्रध्यक्ष द्वारा परिषद की बैठक से उनसे चले जाने के लिए बार-बार ग्राग्रह करने पर भी वह ग्रशान्ति फैला। रहे। तत्पश्चात ग्रपराह्म लगभग 4.45 बजे उन्होंने ग्रपने 25 समर्थक इक 5ठे कर लिए ग्रीर शिक्षण परिषद की बैठक के स्थान के पास नारे लगाने लगे परिणामतः कुल गित ने विश्वविद्यालय के रौल से तत्काल छः महीने की ग्रविध के लिए उनके निलम्बन का ग्रादेश जारी कर दिए।

(ख) ग्रौर (ग) प्रश्न नहीं उठता ।

कालेज के प्राध्यापकों के लिए सेवानिवृत्ति की समान श्रायु

3038. श्री श्रोम प्रकाश त्यागी : क्या शिक्षा, समाज कल्याण श्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या उनके मंत्रालय को देश में कालेजों के सभी प्राध्यापकों के लिए सेवा निवृत्ति की समान ग्रायु रखने के बारे में ग्रभ्यावेदन प्राप्त हुए हैं; ग्रौर
 - (ख) यदि हां, तो इस सम्बन्ध में सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

शिक्षा, समाज कल्याण और संस्कृति मंत्री (डा॰ प्रताप चन्द्र चन्द्र) : (क) जी, हां ।

(ख) वेतनमानों के संशोधन की योजना में जो राज्य सरकारों को भेजी गई थी, ह सुझाव दिया गया था कि अध्यापकों और प्रचार्यों की सेवा निवृत्ति की आयु 60 वर्ष ोनी चाहिए और अन्तिम निर्णय लेने का प्रश्न राज्य सरकारों पर छोड़ दिया गया था जो के इस मामले में सक्षम प्राधिकारी हैं। क्योंकि कालेजों के अनुरक्षण की अन्तिम जिम्मेदारी राज्य सरकारों की है, इसलिए इस मामले में निर्णय लेना उन पर छोड़ दिया गया है।

Amount allocated to Gujarat for Construction of Houses

3039. Shri Dharamsinh Bhai Patel: Shri Ahmed M. Patel:

Will the Minister of Works and housing and Supply and Rehabilitation be pleased to state:

- (a) the amount of allocated to Gujarat Government for construction of houses during 1975-76 and 1976-77 and the expenditure incurred by Gujarat Government thereon during 1975-76 and 1976-77; and
- (b) the expenditure proposed to be incurred by Gujarat Government on the construction of houses during 1977-78 indicating the number of houses to be constructed?

The Minister of Works and Housing and Supply and Rehabilitation (Shri Sikander Bakht):
(a) For the years 1975-76 and 1976-77, the plan outlays for Gujarat under 'Housing' were Rs. 543 lakhs and Rs. 419 lakhs respectively. The expenditure for 1975-76 was Rs. 872 lakhs and the anticipated expenditure for 1976-77 was Rs. 801 lakhs. Besides, Housing and Urban Development Corporation had sanctioned loans aggregating Rs. 466.53 lakhs and Rs. 910.097 lakhs to the various Housing Agencies in the State of Gujarat during 1975-76 and 1976-77 respectively. Against the sanctioned loans, Housing and Urban Development Corporation released Rs. 398.43 lakhs during 1975-76 and Rs. 266.48 lakhs during 1976-77.

(b) For the year 1977-78, the plan outlay for housing for Gujarat is Rs. 865 lakhs. The Government of Gujarat have not furnished information about the number of houses to be constructed during 1977-78. During the current year (upto 30-6-1977) the Housing and Urban Development Corporation has sanctioned loans amounting to Rs. 106·12 lakhs for construction of 450 dwelling units and the amount released is Rs. 17·88 lakhs.

केरल में भारतीय बागान निगम के ग्रन्तर्गत एक गौण निगम

3040 श्री एम० एन० गोविन्दन नायर: श्री सी० के० चन्द्रप्पन:

क्या कृषि श्रौर सिंचाई मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या भारतीय बागान निगम ने केरल में 30,000 एकड़ भूमि पर काजू की खेती का विस्तार करने के लिए एक विस्तृत योजना तैयार की है;
- (ख) यदि हां, तो क्या इस नई योजना के उद्देश्य के लिये बागान निगम के अर्धान एक नये गौण निगम की स्थापना करने का विचार है; और
- (ग) क्या राज्य सरकार ग्रथवा उक्त निगम ने इस योजना के लिये केन्द्र सरकार से किसी वित्तीय सहायता की मांग की है?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) से (ग) ऐसी कोई योजना किसी निगम ने तैयार नहीं की है। तथापि देश में कच्चे काजू के उत्पादन में वृद्धि लाने की ग्रत्यावश्यकता को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय सरकार ने विभिन्न राज्यों में 85,000 हैक्टार की गैर-सरकारी भूमि ग्रौर 60,000 हैक्टार की सरकारी भूमि में काजू के बागान लगाने के लिए स्वयं एक केन्द्र द्वारा प्रायोजित योजना बनाकर स्वीकृति की है।

इस योजना के ग्रन्तर्गत केरल में छः वर्ष की ग्रवधि में क्रमिक रूप में 25,000 हैक्टार निजी भूमि एवं 10,000 हैक्टार सरकारी भूमि में काजू के बाग लगाने के लिए राज सहायता के रूप में केरल सरकार को कुल 1.25 करोड़ रुपये की केन्द्रीय सहायता मंजूर की गयी है।

गन्ने की खेती के ग्रधीन भूमि

3041. श्री ज्योतिर्मय बसु: क्या कृषि श्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि वर्ष 1974-75, 1975-76 श्रीर 1976-77 में प्रत्येक राज्य में कितने एकड़ भूमि में गन्ने की खेती की गई है ?

कृषि और सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): 1974-75 तथा 1975-76 के दौरान गन्ने के अन्तर्गत राज्यवार क्षेत्र के अनुमानों को बताने वाला एक विवरण संलग्न है। 1976-77 के दौरान गन्ने के अन्तर्गत क्षेत्र के पक्के अनुमान अभी उपलब्ध नहीं हैं। तथापि, प्रारम्भिक अनुमानों के आधार पर विभिन्न राज्यों में 1975-76 की तुलना में 1976-77 में गन्ने के क्षेत्र में होने वाली सम्भावित वृद्धि या कमी की सूचना संलग्न विवरण में दे दी गई है।

विवरण 1974-75 तथा 1975-76 के दौरान गन्ने के ग्रन्तर्गत क्षेत्र के ग्रनुमान ग्रौर 1975-76 की तुलना में 1976-77 में सम्भावित परिवर्तन ।

	राज्य				क्षेत्र (हजा	रहैक्टार)	1975-76 की तुलना में
					1974-75	1975-76	1976-77
					, 6	,	में सम्भावित
					(श्रन्तिम	ग्रनुमान)	वृद्धि (+)
						. (–	ग्रथवा कमी) (प्रतिशत)*ं
ग्रांध्र प्रदेश .			<u></u>		195 1	135.6	$\frac{(-)6.9}{(-)6.9}$
ग्रसम					41.9		(+)10.1
बिहार					140.7	133.7	(+)7.4
गुजरात					40.8	37.7	(+)38.2
हरियाणा					161.4	159.0	(+)6.1
कर्नाटक					124.1	131.3	(-)3.7
केरल					9.5	9.4	(-)1.0
मध्य प्रदेश					80.7	69.1	$(+) 5. \rho$
महाराष्ट्र					185.2	216.8	(+) 26.5
उड़ीसा .					44.0	46.0	(+)3.0
पंजाब .					123.0	115.0	(-) 5. 6
राजस्थान					51.3	40.1	(+)4.4
तमिलनाडु					160.4	154.9	(+)3.3
उत्तर प्रदेश					1491.5	1450.4	(+)0.6
पश्चिम बंगाल					29.0	29.3	(+)5.4
ग्रन्य .					15.6	20.2	(+)2.2
प्रखिल भारत		•		.•	2894.2	2789.7	(+)3.0

^{*}यह गन्ने के अखिल भारतीय द्वितीय अनुमान, 1976-77, जिसके अन्तर्गत, अक्तूबर, 1976 के मध्य तक की अविध आती है, में दिए गए प्रारम्भिक आकड़ों पर आधारित है।

पट्टे पर भूमि के ग्रावंटन के ग्राधार की पुरानी प्रथा को 'भी-होल्ड' पर ग्रावंटन के ग्राधार की प्रथा में बदलना

3042. श्री रामा नन्द तिवारी: क्या निर्माण ग्रीर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रीर पुनर्वास मंत्री ग्रह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या पट्टे पर भूमि के स्रावंटन के स्राधार की पुरानी प्रथा को 'फी-होल्ड' पर स्रावंटन के स्राधार की प्रथा में बदलने का सरकार का कोई प्रस्ताव है;
 - (ख) यदि हां, तो क्या यह सच नहीं है कि ऐसे कदम से भूमि के मूल्य बढ़ जायेंगे; ग्रौर
- (ग) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं स्रौर इस मामले में क्या उपचारात्मक कार्यवाही करने का विचार हैं ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर वस्त) : (क) जी, हा ।

(ख) तथा (ग) ग्रन्तिम निर्णय लेने से पूर्व इस मामले के सभी पहलुग्रों पर विचार किया जायेगा।

उर्वरक का भ्रायात भ्रौर वितरण

3043. श्री स्रहमद एम० पटेल : क्या कृषि स्रौर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) गत उर्वरक निगम नेतीन वर्षों के दौरान वर्षवार, कुल कितने उर्वरक का स्रायात किया;
- (ख) राज्य को स्रायातित उर्व रक के वितरण का तरीका क्या है; स्रौर
- (ग) गुजरात राज्य को गततीन वर्षों के दौरान वर्षवार, कि तना उर्वरक सप्लाई किया गया?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) उर्वरक निगम उर्वरकों का श्रायात नहीं करता है। ये भारत सरकार द्वारा ग्रायात किये जाते हैं। बन्दरगाहों गैर-पोटाशीय उर्वरकों की व्यवस्था भारतीय खाद्य निगम करता है तथा पोटाशीय उर्वरकों की व्यवस्था भारतीय पोटाश लिमिटेड करता है।

् जलयानों के ठहरने के स्थानों के ग्रनुसार, वर्ष 1974-75 से 1976-77 के दौरान उर्वरकों की निम्नलिखित माला का ग्रायात किया गया।

(म्रांकड़े मीटरी टनों में)

वर्ष	सामग्री की कुल माला	एन >	पी० (के रूप में)	के०
1974-75	34,50,563	8,83,773	2,80,997	4,37,218
1975-76	32,52,199	9,50,394	3,36,805	2,67,143
1976-77	21,40,662	7,49,984	22,768	2,77,803

⁽ख) खाद डालने के प्रत्येक मौसम ग्रर्थात खरीफ या रबी के ग्रारम्भ होने से पहले राज्यों, संघ राज्य क्षेत्रों ग्रौर जिन्स बोर्डों की निवल ग्रावश्कतात्रों का निर्धारण करने के पश्चात् स्वदेशी तथा ग्रायाति त उर्वरक के लिये एक समेकित सम्भरण योजना तैयार की जाती है। इस सम्भरण योजना के ग्रन्तर्गत

पहले स्वदेशी उत्पादन को विभिन्न राज्यों को स्रावंटित किया जाता है। निवल स्रावश्यकतास्रों स्रौर मौसम के दौरान स्रनुमानित स्वदेशी उत्पादन के बीच के स्रन्तर को स्रायातित उर्वरकों से पूरा किया जाता है। पोटाशीय उर्वरक स्रर्थात पोटाशा म्युरिएट तथा पोटाश सल्फेट पूर्णतः विदेशों से स्रायात किये जाते हैं तथा मेसर्स भारतीय गोटाश लिमिटेड द्वारा वितरित किये जाते हैं। गैर पोटाशीय उर्वरक, सम्भरण योजना के स्रनुसार, राज्यों, संघ राज्य क्षेत्रों स्रौर जिन्स बोडों को स्रावंटित किये जाते हैं जो इसे स्रपनी स्रोर से, सस्थागत एजेन्सियों स्रौर गैर सरकारी पार्टियों को पुनः स्रावंटित करते हैं। राज्यों संघ राज्य क्षेत्रों जिन्स बोडों द्वारा किये गए पुनः स्रावंटन के स्राधार पर प्रेषण करने की हिदायतें दी जाती हैं तथा पुन बांटितियों द्वारा वितीय व्यवस्था की जाती है। भारतीय खाद्य निगम इन उर्वरकों की सप्लाई करता है।

(ग) वर्ष 1974-75 से 1976-77 के दौरान केन्द्रीय उर्वरक पूल द्वारा गुजरात राज्य को पो पक तत्वों के अनुसार, उर्वरकों की निम्नलिखित मात्राएं दी गई थीं --

(ग्रांकड़े	मीटरी	टनों	में)
1	• • • • • •		٠,

वर्ष	एन०	पी०	के ०
	,,,	(केरूप में)	•
1974-75	28,685	14,924	74
1975-76	3,594	705	
1976-77	13,275	915	9

पूल द्वारा दिये गए काम्पलेक्स उर्वरकों में के० की ऊपर दी गई मात्रा मौजूद थी। ग्रंतिम तीन वर्षों के दौरान राज्य की खपत के लिए निम्नलिखित शेष पोटाश भारतीय पोटाश लिमिटेड द्वारा प्रत्यक्ष रूप से ग्रौर काम्पलेक्स विनिर्माताग्रों (काम्पलेक्स के रूप में) ग्रौर मिश्रण करने वाले/ ग्रेन्यूलेशन एककों के जरिए सप्लाई किया गया।

	(मीटरी टनों में)
1974-75	12,590
1975-76	6,840
1976-77	13,270

म्रान्ध्र प्रदेश में नगरीय विकास के लिए घन का म्रावंटन

3044. श्री एम० रामगोपाल रेड्डी: क्या निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या केन्द्रीय सरकार को ग्रान्ध्र प्रदेश सरकार से चालू वित्तीय वर्ष के दौरान राज्य में नगरीय विकास के लिये धन के ग्रावंटन हेतु कोई ग्रनुरोध प्राप्त हुग्रा है; ग्रौर
 - (ख) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी तथ्य क्या है ग्रीर उस पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) जी, हां।

(ख) राज्य सरकार ने 1977-78 के राज्य वार्षिक लान प्रस्ताव में नगरीय विकास के लिए 246 लाख रुपए के परिव्यय का प्रस्ताव किया था, और वार्तालाप के बाद, योजना आयोग में 230 लाख रुपए के परिव्यय का अनुमोदन किया था और इसका नियतन राज्य सरकार की इच्छा पर छोड़ दिया था। इस परिव्यय में गन्दी बस्तियों के पर्यावरणीय सुधार पर 74 लाख रुपए का निर्धारित परिव्यय शामिल है जो न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम का एक अंग है।

इस के ग्रितिरिक्त, राज्य सरकार ने हैदराबाद ग्रौर विशाखापटनम नगरीय क्षेत्रों के लिए समेकित नगर विकास कार्यक्रम के ग्रन्तर्गत ग्रौर हैदराबाद सिकन्दराबाद नगर के लिए छः सूत्री फार्मूला कार्यक्रम के ग्रन्तर्गत परियोजनाए हाथ में लेने के लिए सहायता हेतु प्रस्ताव भेजे हैं। उन्होंने हैदराबाद सिकन्दराबाद के लिए 577.70 लाख रुपए ग्रौर विशाखापटनम के लिए 207.84 लाख रुपए के कुल कार्यक्रम के समर्थन में केन्द्रीय सहायता का ग्रनुरोध किया है।

राज्य सरकार को सहायता देना इस बात पर निर्भर करता है कि चल रही योजनाग्रों में कितनी प्रगति हुई है ।

म्रान्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के दौरान म्रारम्भ की गई परियोजनाम्रों का पूरा किया जाता

3045. श्रीमती रेणुका देवी बड़कटकी: क्या शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्वृति मंत्रीयह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या ग्रन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के दौरान महिलाग्रों तथा बच्चों के कल्याणार्थ जो परियोजनाएं ग्रारम्भ की गई थीं वे पूरी हो गई हैं; ग्रौर
- (ख) यदि हां, तो किन परियोजनात्रों पर स्रभी काम चल रहा है तथा सरकार का उन्हें कब तक पूरा करने का विचार है ?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री (डा॰ प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) तथा (ख) ग्रन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष से सम्बद्ध राष्ट्रीय समिति ने ग्रन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के लिए जो कार्यक्रम तैयार किया था वह मुख्यतया राष्ट्रीय जन बोध ग्रभियान के सम्बन्ध में था ताकि लोगों के सभी वर्ग महिलाग्रों के कार्य ग्रौर ग्रधिकारों को मान लें ग्रौर समझ लें। लोगों को शिक्षित करना ग्रौर उनकी मनोवृत्तियों को बदलना पेचीदा तथा लम्बी अकिया है ग्रौर यह काम जारी है।

- 2. ग्रलबत्ता श्रन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष में नीचे दी गई कुछ परियोजनाएं शुरू की गई थीं :---
- (1) 15-45 वर्ष के स्रायुवर्ग में महिलास्रों के लिए कार्यात्मक साक्षरता । समेकित बाल विकास सेवास्रों की प्रयोगात्मक योजना में महिलास्रों के लिए कार्यात्मक साक्षरता की एक योजना को कार्यान्वित करने की चेष्टा करने का निर्णय किया गया था । इस योजना के स्रन्तर्गत स्वास्थ्य स्रौर पोषाहार, शिक्षा, बच्चों की देखभाल तथा स्रनुपूरक स्राय के कार्यक्रमों, जैसे कि रसोई बाग़बानी, मुर्गी पालन, पशुपालन इत्यादि को चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता है । इस योजना को इस समय 31 परियोजना क्षेत्रों में 2628 केन्द्रों में कार्यान्वित किया जा रहा है । बताया जाता है कि 1976-77 में इस योजना के सन्तर्गत 43168 महिलास्रों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । 1977-78 में इस योजना के लिए 57.50 लाख रुपए की धनराशि की व्यवस्था की गई है । 1976-77 में इस योजना पर 22.25 लाख रुपए की धनराशि खर्च की गई थी।

- (2) श्रमजीवी महिलाग्रों के लिए होस्टलों के निर्माण के लिए स्वयंसेवी संगठनों को सहायता देने की योजना जनवरी, 1975 में उदार कर दी गई थी। केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्माण के लिए दी जाने वाली सहायता की मात्ना को जनवरी, 1975 से 60% से बढ़ा कर 75% कर दिया गया था ग्रौर यह ढंग ग्रब भी जारी है। श्रमजीवी महिलाग्रों के लिए होस्टलों की योजना पर खर्च 1974-75 में 52.40 लाख रुपए हुग्रा था जो 1975-76 ग्रौर 1976-77 में बढ़कर कमशः 81.80 लाख रुपए तथा 90.04 लाख रुपए हो गया। 1977-78 के लिए 161.50 लाख रुपए की धनराशि की व्यवस्था की गई है।
- (3) श्रमजीवी ग्रौर बीमार माताग्रों के बच्चों के लिए शिशुकेन्द्रों की व्यवस्था करने के लिए स्वयंसेवी संगठनों को सहायता देने की योजना ग्रन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष में ग्रन्तिम रूप से तैयार कर ली गई थी। 1976-77 में 19050 लाभार्थियों (बच्चों) को शिशु केन्द्रों की सुविधाएं प्रदान करने के लिए सहायता के रूप में 25 लाख रुपए की रकम मंजूर की गई थी।

वेश्यावृत्ति निषेध

3046. श्री सौगत राय: क्या शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार का देश में वेश्यावृत्ति निषेध का विचार है; ग्रौर
- (ख) यदि हां, तो इन वे श्याग्रों के पुनविस की क्या योजनायें हैं ?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री (डा॰ प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं है।

(ख) प्रश्न नहीं उठता।

उपरि कृष्णा परियोजना के लिए विश्व बैंक सहायता

3047 श्री राजशेखर कोलूर: श्री तुलसी दास दासणा:

क्या कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या भारत सरकार और विश्व बैंक के बीच कर्नाटक स्थित उपरि कृष्णा परियोजना के लिए विश्व बैंक सहायता के बारे में चल रही वार्ता में कोई अगति हुई है;
- (ख) क्या भारत सरकार उपिर कृष्णा परियोजना के निर्माण कार्य में तेजी लाने के लिए पर्याप्त सहायता दे रही है; श्रौर
 - (ग) यदि हां, तो कब भ्रौर कितनी वित्तीय सहायता दी गई है ?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) ग्रपर कृष्णा परियोजना का विश्व बैंक के एक मूल्यांकन दल द्वारा सितम्बर, 1977 में दौरा करने की संभावना है।

(ख) ग्रौर (ग) इस परियोजना के निर्माण-कार्यों की गति में तेजी लाने के उद्देश्य से कर्नाटक सरकार को 1976-77 में दो करोड़ रुपए की ग्रग्निम योजना सहायता दी गई थी।

Illness of a Young Elephant "Sunderkali"

- 3049. Shri Kanwar Lal Gupta: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:
- (a) whether Government are aware that a young elephant 'Sunderkali' has been ailing with a fractured foreleg;
 - (b) if so, steps Government have taken to save her life;
- (c) whether doctors from Hissar are hopeful for her life but no help comes from Central Government; and
- (d) whether Government have contacted the Defence Ministry for sending the crane required by the doctor?

The Minister for Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala): (a) Yes, Sir.

- (b) The elephant 'Sunderkali' was owned by a Private Firm which approached the Director, Delhi Zoological Park on 25-6-77 to examine the elephant. The elephant was immediately examined by the Zoo authorities, including the Hon. Veterinary adviser to the Zoo, and it was suggested to the Firm that mercy killing was the only answer in such cases where a leg was found to have a compound fracture which could not be cured at that late stage. The elephant has since died.
 - (c) The Government has no report on the Hissar Doctor's observations.
 - (d) Yes, Sir.

Levy of House Tax in C.S.P. Colonies in Delhi

- 3050. Shri Ram Naresh Kushwaha: Will the Minister of Works and Housing and Supply and Rehabilitation be pleased to state:
- (a) whether all the four Communities Service Personnel Colonies have been given to Delhi Municipal Corporation and the Corporation has levied house tax on the residents of these colonies;
- (b) whether the residents of these colonies are not yet owners of the houses and are making payment to Delhi Development Authority on monthly instalment basis; and
 - (c) if so, the action being taken by Government in this regard?
- The Minister of Works and Housing and Supply and Rehabilitation (Shri Sikandar Bakht): (a) The exact position regarding taking over of the Colonies by Municipal Corporation of Delhi is being ascertained. It is reported that Municipal Corporation is levying house tax on their properties.
- (b) The allotment of these houses was made on hire-purchase basis by DDA. According to D.D.A. regulations conveyance deed will be executed after all the monthly instalment payments have been made.
 - (c) In view of (b) above the question does not arise.

सुवर्णरेखा बहुद्देश्यीय सिचाई तथा बाढ़ नियंत्रण परियोजना

- 3051. श्री एस० कुन्डु: क्या कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) सुवर्णरेखा बहुदेशीय सिंचाई तथा बाढ़ नियंत्रण परियोजना का ब्यौरा क्या है;
- (ख) उड़ीसा में जालेश्वर में तथा सुवर्ण रेखा नदी के ग्रधिक निचले प्रवाह में बाढ़ का कितना जल रोका जाएगा;

- (ग) क्या इस नदी पर चांडिल में बांध का कोई निर्माण कार्य शुरू हो गया है स्रौर यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; स्रौर
- (घ) क्या इस योजना को मंजूरी दे दी गई है और बिहार, उड़ीसा तथा पश्चिम बंगाल इन तीन राज्यों पर कितनी धनराशि का खर्च आयेगा ?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) बिहार की सुवर्णरेखा बहुद्देशीय परियोजना में निम्नलिखित निर्माण कार्यों की परिकल्पना की गई है :--

- (1) स्वर्णरेखा नदी पर चांडिल के निकट एक चिनाई बांध ।
- (2) सरकई पर, जो स्वर्णरेखा की एक सहायक नदी है, इचा के निकट एक मिट्टी का बांध।
- (3) दो बराज-एक सुवर्णरेखा नदी पर गलुडीह के निकट ग्रौर दूसरा सरकई पर भुग्ना के निकट।
- (4) दोनों वांधों ग्रौर दोनों बराजों से नहर प्रणाली।

इस स्कीम में, जिस पर 129 करोड़ रुपए के लागत आने का अनुमान है, 2.185 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में वाधिक सिचाई की, बिहार के क्षेत्रों में श्रौद्योगिक श्रौर पीने के जल की श्रावश्यकताश्रों को पूरा करने के लिए नियमित जल सप्लाई करने की श्रोर बाढ़ की भीषणता को कम करने की, जिससे उड़ीसा श्रौर पश्चिम बंगाल के क्षेत्रों की लाभ होगा, परिकल्पना की गई है।

- (ख) 2,000 मिलियन घन मीटर के सकल जल संचय में से चांडिल जलाशय में लगभग 493 मिलियन घन मीटर बाढ़ के जल का संचय करने की प्रस्ताव है । सरकई के जलाशय में बाढ़ के जल के संचय की कोई व्यवस्था नहीं की गई है । यह अनुमान है कि ऐसी विरली स्थिति को छोड़कर, जब सुवर्णरेखा और सरकई दोनों में उच्चतम बाढ़ एक साथ आ जाए, जलेश्वर में 0.2 लाख क्यूसेक्स बाढ़ के जल को नियंत्रित किया जा सकेगा।
 - (ग) इस परियोजना पर काम ग्रभी शुरू नहीं हुन्ना है।
- (घ) इस परियोजना को स्वीकृति देने पर बिहार, उड़ीसा ग्रौर पश्चिम बंगाल के सम्बद्ध राज्यों के बीच समझौता हो जाने के बाद विचार किया जाएगा। बिहार ग्रौर उड़ीसा के बीच समझौता हो चुका है। बिहार ग्रौर पश्चिम बंगाल के कुछ संयुक्त नदी बेसिनों, जिनमें सुवर्णरेखा बेसिन भी शामिल है, के उपयोग ग्रौर विकास के बारे में इन राज्यों के बीच भी ग्रधिकारियों के स्तर पर समझौता हो गया है। इन दोनों राज्यों ग्रौर दामोदर घाटी निगम के साथ परामर्श करते हुए इसकी जांच की जा रही है क्योंकि इस समझौते में दामोदर नदी के जल के उपयोग ग्रौर विकास की बात भी शामिल है। ग्रन्तिम समझौता हो जाने पर वित्तीय पहलुग्रों पर फैसला किया जाएगा।

कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड

- 3052. श्री ग्रार० एल० कुरील: क्या कृषि ग्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगें कि:
- (क) क्या सरकार ने कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड की निष्पक्षता को सुनिश्चित करने श्रौर उसे बनाये रखने के लिये सभी श्रावश्यक सावधानियां बरती हैं श्रथवा कार्यवाही की है; श्रौर

(ख) यदि हां, तो क्या मंत्री महोदय (भारतीय कृषि ग्रमुसंधान परिषद् के ग्रध्यक्ष) ने इस बारे में कोई निर्देश जारी किये हैं ?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला) : (क) जी हां, श्रीमन्।

(ख) जी हां, श्रीमन्, ये ब्रादेश जारी कर दिये गये हैं कि कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल जो कि एक स्वतंत्र संस्था है और जिसकी नियुक्ति भारतीय कृषि ब्रनुसंधान परिषद् को सहायता करने के लिए की गयी है, को केन्द्रीय लोक सेवा ब्रायोग की ही प्रकार से माना जाय और इसके कार्य करने में कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।

भारतीय खाद्य निगम के ग्रधिकारियों का किसानों के साथ व्यवहार

3053. श्री चांद राम: क्या कृषि ग्रीर सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या गेहूं की कीमतें सरकार द्वारा घोषित समर्थन मूल्य से नीचे गिर गई है;
- -(ख) क्या भारतीय खाद्य निगम के ग्रिधकारी व्यापारियों के साथ सांठ-गांठ करके किसानों के गेंहूं को ग्रस्वीकार करके किसानों को धोखा दे रहे हैं, ग्रौर कम कीमत पर व्यापारियों को खरीदने देते हैं; ग्रौर
- (ग) यदि हां, तो किसानों के साथ उचित व्यवहार सुनिश्चित करने के लिए क्या उप-चारात्मक कार्यवाही की गई है ?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) सरकार द्वारा घोषित किए गए 110/-रुपये प्रति क्विटल के सहाय्य मूल्य उचित ग्रौसत किस्म की गेहूं के लिए है ग्रौर सरकारी वसूली एजेंसियां यह सुनिश्चित करती है कि उचित ग्रौसत किस्म की गेहूं के मूल्य स्तर से नीचे न गिरने पाये ।

(ख) ग्रौर (ग) जी, नहीं। तथापि, भारतीय खाद्य निगम के वरिष्ठ ग्रिधकारी वसूली कार्यों पर बराबर निगरानी रख रहे हैं ताकि उनके स्टाफ की किसी प्रकार के कदाचार करने का मौका ही न मिल सके।

Sugarcane-Arrears Outstanding Against Aurai Co-operative Sugar Mill, Varanasi

3054. Shri Narsingh Yadav: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:

- (a) the quantity of sugarcane purchased from farmers by Aurai Co-operative Sugar Mill, Varanasi, Uttar Pradesh during 1976-77 and 1977-78, the quantity of sugarcane for Which prices have been paid to farmers and the number of farmers who have not been paid prices for their sugarcane the amount to be paid the reasons for not paying it and when it will be paid;
- (b) whether the mill is running in loss or in profit and if it is running in loss, the extent of loss being suffered by the mill every year; and
 - (c) the steps being taken to ensure that it runs in profit?
- The Minister of Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala):
 (a) The quantity of sugarcane purchased by the Mill in 1976-77 is 8.95 lac quintals. 1977-78 season is yet to commence. Prices have been paid for 8.60 lac quintals. 904 farmers have not been paid prices for the sugarcane and the amount to be paid is Rs. 4.2 lacs. The reason for not paying is shortage of funds due to fall in prices of free sale sugar; it will be paid as soon as funds are arranged.

(b) It is running in losses. The Mills are working since the year 1971-72 and the extent of loss every year is as under:

Year	Loss in Lac Rs.
1971-72	35 • 64
1972-73	53 · 61
1973-74	61 • 27
1974-75	47.63
1975-76	43 · 86
	242.01 (Prov. unaudited figure)

The above also includes provisions for depreciation on fixed assets of the Mills amounting to Rs. 112.21 lacs.

(c) Five-Year Intensive Cane Development Programme with special emphasis to increase irrigation potential, replacement of unapproved varieties of sugarcane and application of higher doses of fertilisers within 32 KM of the factory gate has been drawn and is being implemented to ensure normal requirements of sugarcanes for crush.

श्राई० ग्राई० टी० दिल्ली में केन्द्र/स्कूल

3055. डा० रामजी सिंह : क्या शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) ग्राई० ग्राई० टी० दिल्ली के बोर्ड ग्राफ गवर्नर्स द्वारा बनाए गए विभिन्न केन्द्रों/ स्कूलों के क्या ग्रलग-ग्रलग बजट व्यवस्था है ;
 - (ख) व्यवहारिक ग्रनुसन्धान की दृष्टि से उनकी राष्ट्र के लिए क्या उपलब्धि है ;
- (ग) क्या इन केन्द्रों स्कूलों के लिए यह प्रस्ताव है कि वे विदेशी दौरों का स्रादान प्रदान करें;
- (घ) यदि नहीं, तो क्या सरकार का आई० आई० टी० दिल्ली के विभिन्न विभागीय विभागाध्यक्षों द्वारा दिए गये योगदान का ब्यौरा सभा पटल पर रखने का विचार है ?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र) : (क) विवरण संलग्न है।

- (ख) इन केन्द्रों तथा स्कूलों में किए गए कार्य का उपयोग, इलेक्ट्रोनिक्स सिस्टम्स, माईकोवेव कम्पोनेन्टस, बायो-केमिक्स इंजीनियरिंग, रेडार सिस्टम्स, इन्स्ट्र मेन्टेशन तथा बायो-मेडिकल इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में किया गया है।
- (ग) ये केन्द्र स्कूल अन्तर-विषयक अनुसंधान कार्यकलाप चलाने के लिए हैं। इन दो केन्द्रों के विकास के लिए स्वीस तथा नार्वे की सरकारों के साथ सहयोगात्मक कार्यक्रम हैं जिनमें एक दूसरे के यहां दौरा करना शामिल है। अन्य केन्द्रों तथा स्कूलों के मामले में एक दूसरे के यहां दौरा करने की जरूरत पर अन्य स्वीकृत कार्यक्रमों के अन्तर्गत ध्यान दिया जाता है।
- (घ) इन विभागों/केन्ट्रों/स्क्लों के प्रमुख एक विशिष्ट ग्रविध के लिए प्रोफेसरों में से नियुक्त किए जाते हैं। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली के विभागाध्यक्षों तथा ग्रन्य संकाय सदस्यों द्वारा वर्ष 1974-75, 1975-76 के दौरान प्रकाशित ग्रनुसंधान पेपर्स तथा पुस्तकों का उल्लेख भारतीय

प्रोद्योगिकी संस्थान दिल्ली की 1974-75 ग्रीर 1975-76 की वार्षिक रिपोर्टों में किया गया है. जो ऋमश: 12-1-76 तथा 3-11-76 को सभा पटल पर रख दी गई थी।

विवरण

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली का शासी निकाय, केन्द्रों तथा स्क्लों के लिए प्रावधान की न्यवस्था करता है तथा जब कभी भी आवश्यकता पड़ती है धनराशि एक शीर्ष से दूसरे शीर्ष में पुनर्विनियोजित करता है। बोर्ड दवारा वर्ष 1976-77 और 1977-78 के लिए किए गए प्रावधान की न्यवस्था निम्नलिखित हैं:—

	केन्द्र/स्कूल का नाम	वर्ष 1976-7 ग्रावंटर		वर्ष 1977-78 के लिए ग्रावटन			
		 ग्रावर्ती	ग्रनावर्ती	म्रा [ः] र्ती	ग्रनावर्ती		
1.	शक्ति ग्रध्ययन केन्द्र .		 ·	12,00	30.00		
2.	स्रौद्योगिक ट्रायबोलोजी मशीन डायडामिक्स ग्रौर						
	ग्रनुरक्षण इंजीतियरी केन्द्र .	1.50	3.50	1.55	3.50		
3.	बायो-केमिकल इंजीनियरी स्रनुसंधान केन्द्र	2 21	1 42	0.49	1.20		
		2.21	1.43	2.48	1,20		
4.	बायो-मेडिकल इंजीनियरी						
	ग्रनुसंधान केन्द्र	2.00	0.80	2.39	0.50		
5.	उपकरण डिजाइन विकास						
	केन्द्र	7.47	2.50	7.49	2.00		
6.	कम्पुटर केन्द्र	7.50	8.64	7.03	1.50		
7.	वस्तु विज्ञान केन्द्र प्रौद्योगिकी स्वृ	्ल 1.80	2,50	2.07	1.50		
8.	प्रित्रया तथा प्रबन्ध ऋष्ययन						
	स्कूल .	1.00	0.30	1.12			
9.	स्कृल ग्राफ बायो-साइन्स	0.75	0.40	0.91	0.30		
10.	प्रयुक्त ग्रनुसंधान इलैंक्ट्रानिकल						
	केन्द्र			2.05	_		

(धनराशि रक्षा मंत्रालय तथा रेल मंत्रालय द्वारा उपलब्ध की जाती है।)

कृषक समाज को भ्रनुदान

3056. श्री गणनाथ प्रधान : क्या कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) 1975-77 वित्तीय वर्ष की ग्रविध में विभिन्न राज्यों में 'कृषक समाज' को दिया गया
कुल ग्रनुदान कितना है ;

- (ख) क्या इस अनुदान का उपयोग उचित प्रकार से किया गया है;
- (ग) क्या सरकार को किसी राजनीतिक दल के विरुद्ध कोई ऐसी शिकायत मिली है कि उसने इस राशि का दुरुपयोग किया है; ग्रौर
- (घ) क्या उनके लेखों की नियमित रूप से लेखा परीक्षा की जाती रहो है स्रौर यदि हां, तो उनमें क्या कोई स्रनियमिततायें पाई गई हैं।

कृषि ग्रौर सिचाई मत्री (श्री सुरजीतसिंह बरनाला) : (क) से (घ) तक राज्य सरकारों से जानकारी एकत्र की जा रही है ग्रौर प्राप्त होते ही सभा पटल पर रख दी जाएगे. ।

Indian Lac Research Institute Namkum, Ranchi

- 3057. Shri R. L. P. Verma: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:
- (a) whether discontentment and panic is prevalent among the employees in the Indian Lac Research Institute, Namkum, Ranchi which is under Indian Council of Agriculture Research due to administrative mismanagement, favouritism and irregularities there with the result that research work has been disrupted;
- (b) whether some Adivasi employees in the said institute have been retired from a date one year earlier and whether it is in accordance with Government Service rules;
- (c) whether it is also a fact that a deceased employee, Shri Mahadeo Oraon, was retired from service from an earlier date after his death during service and his widow is being compelled to starve by non-payment of the amount in the Provident Fund account etc. of her husband for three years;
- (d) whether it is also a fact that the Director is getting his salary in contravention of the rules by misusing his office and power and is continuing in the institute even after the expiry of the term of his deputation; and
- (e) if answers to above parts be in the affirmative, whether Government would conduct an enquiry to put an end to the vide administrative corruption prevalent there?
- The Minister of Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala): (a) Complaints about the affairs of the Lac Research Institute, Ranchi have been inquired into in detail. There is no mismanagement and there are no instances of favourtism and irregularities in that Institute. There is also no panic among the employees. A few emoloyees are discontented on account of their transfers from the Institute and they are spreading false rumours and making incorrect allegations against the Director of the Institute as a result of which there appears to have been some adverse effect on the progress of research work there.
- (b) No Adivasi or other emoloyee of the Institute has been retired earlier than the due date of his superannuation and retirements have been done in accordance with the rules on the subject.
- (c) Shri Mahadeo Oraon, a Mazdoor employed in the Institute, was to superannuate on 20-1-1974, but, as a result of mistake of the Office, continued in service up to 13-12-1974. His continuation in service beyond the date of superannuation has been regularised by the ICAR. The Provident Fund account has for some administrative delays not been settled so far.

The explanation of the officer responsible is being called for and necessary action will be taken against him. Instructions have also been issued to the Director to settle his Provident Fund and other accounts immediately.

- (d) The Director was selected for the post by the A.S.R.B. in 1975 and was appointed to the post with the approval of the then Minister (A& I) in accordance with the rules of the ICAR. His pay was fixed in consultation with the Ministry of Finance and there has been no contravention of the rules in this regard. His term in the Institute has not expired.
- (e) An enquiry has already been held. No corruption has been found to be prevalent in the Institute.

Construction of Embankment in Bihar

- 3058. Shri Chandradeo Prasad Verma: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:
- (a) whether a 104-kilometre long embankment is being constructed from Buxar to Koelwar in Bihar as a safeguard against the Ganga floods;
 - (b) whether the construction work of the embankment has not been completed so far;
- (c) whether neither compensation has been paid so far for the land acquired for the purpose nor have the austees been allotted land for the construction of their houses;
- (d) whether if the embankment is not completed before the rains set in, not only the raised earth for the embankment would be washed away, but the inhabitants of the surrounding villages would also suffer a heavy loss as a result thereof; and
- (e) if so, whether Government propose to complete the construction of the embankment before the river is in flood and also pay compensation and provide house sites to villagers?

The Minister of Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala): (a) to (e). The State Government of Bihar have formulated a scheme for the construction of an embankment from Buxar to Koelwar at an estimated cost of Rs. 10·10 crores. The scheme envisages the construction of embankments—96 km. on the southern bank of Ganga, 11 km. along the West bank of Sone from its confluence with the Ganga upto Koelwar, 20 km. along both the banks of Ganga (West) and 38 km. along both the banks of Ganga (East). The scheme is expected to benefit an area of 79,000 hectares. This scheme was approved by the Planning Commission in May, 1973 and is under execution.

Buxar-Koelwar Embankment Scheme is now estimated to cost about Rs. 30 crores due to increase in the cost of labour and material. The State Government have informed that in view of this increase in the cost of the scheme and also on account of construction of emergent works of Patna Flood Protection Scheme, it has become necessary to readjust priorities in the construction of different reaches of the embankments as also between the two schemes. The work on Buxar-Koelwar scheme was started in 1973-74 and was expected to be completed in five years subject to availability of funds. However, due to paucity of funds an amount of Rs. 429 lakhs only could be spent upt > 1976-77. The outlay proposed for 1977-78 is Rs. 200 lakhs. The scheme is now expected to be completed in 1980-81 subject to availability of funds. Such large embankments necessarily have to be constructed in stages and appropriate precautions and measures are taken for the safety of the works at intermediate stages of construction.

Since the planning and implementation of flood control schemes rests with the State Government, payment of compensation for land acquired and allotment of house sites to the affected people is the responsibility of the State Government. No information in this regard is available with the Centre.

Mother Tongue as Medium of Instruction

3059. Shri Hukumdeo Narain Yadav: Will the Minister of Education, Social Welfare and Culture be pleased to state whether Government plan to make mother tongue as medium of instructions for the uniform education system to be introduced throughout the country?

The Minister of Education, Social Welfare and Culture (Dr. Pratap Chandra Chunder): There is no such plan. Education is primarily a State subject and it would be for the State Government to deal with this matter.

ट्रैक्टरों का ग्रायात

3060. श्री पी०एम० सईद: क्या कृषि ग्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या वर्तमान सरकार का विचार ट्रेक्टरों की मांगों को पूरा करने के लिए उनका स्रायात करने का है; स्रौर
 - (ख) यदि हां, तो किस देश से ग्रौर कितने ?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला) : (क) जी हां।

(ख) प्रश्न ही नहीं होता।

घरेलू उपयोग के लिए बिजली की सप्लाई

3061. श्री ग्रार० के० ग्रमीन : क्या निर्माण ग्रीर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रीर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या सुल्तानपुरी पुनर्वास कालोनी के निवासियों को घरेलू उपयोग के लिये बिजली सप्लाई करने का कोई प्रस्ताव है ;
 - (ख) यदि हां, तो तार बिछाने के काम को रोकने के क्या कारण हैं; ग्रौर
 - (ग) सरकार का कार्य पुनः कब ग्रारम्भ करने का विचार है ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त) : (क) जी, हां।

- (ख) कार्य स्रभी स्रारम्भ नहीं किया गया क्योंकि वित्त व्यवस्था नहीं हो पाई।
- (ग) प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि कार्य स्रभी स्रारम्भ नहीं किया गया।

Fixation of rate of Empty Rice Bags by Rice Millers in Rajasthan

- 3062. Shri Meetha Lal Patel: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:
- (a) whether rice millers in Rajasthan fix the rate of empty rice bags at the rate of one quintal rice per bag in the case of levy rice while actually only 95 kilo rice is filled in one bag as per instructions of Government;
- (b) if so, whether Government propose to make good this payment to the farmers if not, the reasons therefor; and
 - (c) whether this policy is followed in other levy realising States as well?

The Minister of Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala): (a) Rice millers in Rajasthan do not fix the rate for empty bags in which levy rice is sold by them. The per quintal rates for empty bags for rice delivered by the millers for the Central Pool are fixed quarterly by the Government taking into consideration the filling capacity of the gunny bags at 95 kg.

- (b) Does not arise.
- (c) This practice is also followed in most of the levy realising States.

कृषि भूमि की ग्रिधिकतम सीमा

3063. श्री धर्मवीर विश्वस्थ्ठ : क्या कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भूतपूर्व सरकार ने भूमि की ग्रिधिकतम सीमा पंजाब ग्रौर हरियाणा कृषि विश्व-विद्यालयों सहित प्रमुख कृषि विशेषज्ञों की तकनीकी सलाह के ग्राधार पर नहीं टिल्क ग्रन्य ग्राधारों पर निश्चित की थी;

- (ख) क्या कृषि भूमि की ग्रधिकतम सीमा को कम करने के फलस्वरूप कृषि उत्पादन में कोई उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हुई है; ग्रौर
 - (ग) क्या सरकार का विचार उक्त नीति पर पुनर्विचार करने का है?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) कृषि जोतों की ग्रधिकतम सीमा निर्धारित करना पूणतः राज्य सरकारों का काम है। तथापि, 1972 में हुए राज्यों के मुख्य मंत्रियों के एक सम्मेलन द्वारा की गई सिफारिशों के ग्राधार पर केन्द्रीय सरकार ने कृषि जोतों की ग्रधिकतम सीमा के संबंध में राष्ट्रीय मार्गदर्शी सिद्धांत जारी किये थे, जिसमें ग्रन्य बातों के साथ-साथ भूमि की विभिन्न श्रेणियों पर लागू होने वाली ग्रधिकतम सीमा के विभिन्न स्तरों के बारे में मुझाव दिया गया था। मार्गदर्शी सिद्धांत बनाते समय सामाजिक ग्रौर ग्राथिक पहलुओं सहित समस्त संबंधित पहलुओं को भी ध्यान में रखा गया था। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए कि ये सिफारिशें राज्यों के मुख्य मंत्रियों की ग्राम सहमित से की गई थीं, कृषि विशेषज्ञों (जिनमें पंजाद तथा हरियाणा के कृषि विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ भी शामिल है) की विशेष सलाह लेना ग्रौर उनकी जांच करना ग्रावश्यक नहीं समझा गया।

(ख) तथा (ग) कृषि उत्पादन पर, बोये गये क्षेत्र, सिचाई, उर्वरकों तथा सुधरे बीजों, कृषि ग्रादानों, उन्नत टैक्नालोजी, भूमि सुधार, मूल्य नीति ग्रौर मौसम ग्रादि ग्रनेक पहलुग्रों का प्रभाव पड़ता है। ग्रतः कृषि भूमि की ग्रधिकतम सीमा कम करने जैसे किसी ग्रकेले पहलू के उत्पादन पर पड़ने वाले ग्रसर के बारे में सही-सही ग्रनुमान लगाना सम्भव नहीं है। तथापि, यह उल्लेखनीय है कि 1972-73 से वर्षानुवर्ष ग्राधार पर उतार-चढ़ाव होने के बावजूद कृषि उत्पादन में ग्रामतौर पर वृद्धि की प्रवृत्ति रही है, जैसा कि नीचे लिखे ग्रांकड़ों से प्रतीत होता है:——

कृषि उत्पादन का सूचकांक

(ग्राधार = 1961-62 को समाप्त होने वाली--विवाधिक ग्रवधि = 100)

1972-73	•	•	•	•	120.4
1973-74	•		•		133.3
1974-75			•	•	128.6
1975-76					148.6

(ग्रभी 1976-77 के लिए उत्पादन के पक्के ग्रनुमान उपलब्ध नहीं हैं। तथापि, कुल उत्पादन में 1975-76 की तुलना में गिरावट की सम्भावना है। फिर भी, इसके पहले के ग्रन्य किसी भी वर्ष के उत्पादन की तुलना में ग्रधिक रहने की सम्भावना है।)

कृषि जोतों की अधिकतम सीमा निर्धारित करने का मौलिक ग्रौचित्य भूमि संसाधनों का ममान वितरण करना है। ग्रनेक व्यक्तियों को जिनके पास कोई भूमि नहीं थी या कम भूमि थी ग्रिधिकतम सीमा निर्धारित करने से प्राप्त हुई फालतू भूमि ग्रलाट की जानी थी ताकि वे ग्रपनी श्राय में वृद्धि कर सकें। ग्रिधिकतम सीमा संबंधी कानून मूलत: सामाजिक न्याय का एक साधन है श्रीर उसका पुनरीक्षण करने का कोई प्रस्ताव नहीं है।

ग्रन्दमाम तथा निकोबार द्वीपसमूह में ग्रकाल की सी स्थिति

3064. श्री मनोरंजन भक्त: क्या कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार को पता है कि इस वर्ष फसल के पूरी तरह से न होने के कारण अन्दमान तथा निकोबार द्वीपसमूहों के ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रकाल की सी स्थिति है; ग्रौर यदि हां, तो किसानों को क्या सहायता दी गई है;
- (ख) क्या मध्य (मिडिल) ग्रन्दमान के बाकुलताला स्थान पर चावल पांच रुपये प्रति किलो बिक रहा है; ग्रौर यदि हां, तो मूल्यों को कम करने के लिए क्या कार्यवाही की गई है; ग्रौर
- (ग) क्या गत वर्ष कृषि विभाग द्वारा सप्लाई की गई कीटनाशी ग्रौषिधयां घटिया किस्म की थीं जिसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर फसल को कीड़ा लगा ग्रौर जिस पर नियंत्रण नहीं किया जा सका; ग्रौर यदि हां, तो इस वर्ष के लिए क्या उपाय किये गये हैं?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) से (ग) संघ राज्य प्रशासन से जानकारी मांगी गई है जिसकी ग्रभी प्रतीक्षा है। उसके प्राप्त होते ही सभा पटल पर रख दी जाएगी।

अन्दमान तथा निकोबार द्वीपसमृह के लिए वन-निगम

3065. श्री मनोरंजन भनत: क्या कृषि स्रौर सिवाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (प) क्या सरकार का विचार ग्रन्दमान ग्रौर निकोबार द्वीप समूह के लिए वन-निगम के प्रस्ताव को शी झ कियान्वित करते का है; ग्रौर यदि हां, तो तत्संबंधी मुख्य बातें क्या हैं;
- (ख) वर्ष 1977-78 के दौरान ग्रारम्भ किये जाने वाले कार्यक्रम का ब्यौरा क्या है;
- (ग)क्या अन्दमान और निकोबार द्वीपसमूह के लिए प्रस्तावित बागान-निगम स्थापित किये जाते की आशा है ?

कृषि ग्रौर सिंबाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) ग्रंदमान तथा निकोबार दीपसमूह वन तथा वन रोपण विकास निगम लिमिटेड प्रथम चरण में दो वर्षों के लिए 1.70 करोड़ रु० के स्वीकृत परिव्यय से कम्पनी ग्रिधिनियम, 1956 के ग्रंतर्गत जनवरी, 1977 में पहले ही स्थापित किया जा चुका है। इसका उद्देश्य द्वीपसमूह के वन संसाधनों का ग्रिधिक से ग्रिधिक मात्रा में उपयोग करना, इमारती लकड़ी तथा श्रन्य वनोत्पादों का विपणन करना ग्रौर कृतिम एवं प्राकृतिक पुनहत्पादन करके कटाई किये गये क्षेत्रों में मूल्यवान किस्मों का रोपण करना तथा लकड़ी पर ग्राधारित उद्योगों की स्थापना को बढ़ावा देना है।

- (ख) 1977-78 के दौरान 15000 घन मीटर इमारती लकड़ी निकालने का प्रस्ताव है।
- (ग) म्रंदमान तथा निकोबार द्वीपसमूह वन तथा वन रोपण विकास निगम रोपण तथा वन से संबंधित कार्यों को संभालेगा। रेड ग्रायल पामारोपण निगम स्थापित करने के लिए कार्रवाई की जा रही है। यह निगम उक्त ग्रंदमान तथा निकोबार द्वीपसमूह वन तथा वन रोपण विकास निगम का एक सहकारी संगठन होगा।

उड़ीसा में डेरी विकास के लिए केन्द्रीय सहायता

3066. श्री के प्रवानी: क्या कृषि ग्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृश करेंगे कि:

- ुं(क) क्या उड़ीसा सरकार ने राज्य में डेरी विकास के लिए केन्द्रीय सरकार से वित्तीय सहायता मांगी है; श्रौर
 - (ख) यदि हां, तो इस बारे में केन्द्रीय सरकार तथा विश्व बैंक ने कितनी सहायता दी है?

कृषि ग्रौर तिवाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) ग्रौर (ख) उड़ीसा सरकार से डेरी विकास के लिए केन्द्रीय सरकार को कोई प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुग्रा है। तथापि केन्द्रीय क्षेत्रयोजना के ग्रन्तर्गत राज्य में डेरी विकास के लिए वियवस्था मौजूद है।

'प्रतिभा व साधन' छात्रवृत्तियां

3067. श्री शंकर सिंहजी वाघेला : क्या शिक्षा, समाज कल्याण श्रीर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) सेन्ट्रल बोर्ड ग्राफ हायर सेकेन्डरी एजूकेशन, नई दिल्ली ने हायर सेकेन्डरी परीक्षा 1976 में प्रतिभावान छात्रों को वर्ष 1976-77 में 'कितनी 'प्रतिभा व साधन' छात्रवृत्तियां दी;
 - (ख) यह छातवृत्ति प्राप्त छात्रों के क्या नाम हैं;
 - (ग) इस छात्रवृत्ति का क्या ज्यौरा हि;
 - (घ) यह छात्रवृत्ति देने के लिए पालता निर्धारित करने का आधार क्या है; और
- (ङ) क्या उन सभी छात्रों को छात्रवृत्ति की राशि दे दी गई है जिनके लिए यह मंज्र की गई थी ?।

शिक्षा, समाज कल्याण और संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) राज्य सरकारों संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासन के माध्यम से, शिक्षा मंत्रालय की राष्ट्रीय छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा 1976—77 में अब तक 70 छात्रों को योग्यता तथा साधन छात्रवृत्तियां प्रदान की गई हैं। योग्यता तथा साधन के आधार पर, परीक्षा निकास, छात्रों का अन्तरिम चयन करती हैं और सूची राज्य सरकारों संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को भेज देती हैं।

- (ख) सूची संलन्न है। [ग्रन्थालय में रखा गया। देखिए संख्या एल ०टी ० 663 77]
- (ग) स्कूल छोड़ने की ग्रंतिम परीक्षा के परिणामस्वरूप योग्यता तथा साधन के ग्राधार पर राष्ट्रीय छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती है ग्रौर ये प्रथम स्नातक कोर्स तक प्राप्त है।
 - (घ) पात्रता की मुख्य कसौटी है :---
 - (i) माता-पिता की ग्राय 500 कपये प्रति माह से अधिक नहीं होनी चाहिए।
 - (ii) उम्मीदवारों को कोई ग्रन्य छात्रवृत्ति नहीं मिल रही होनी चाहिए।
 - (iii) उम्मीवदारों को भारत के मान्यता प्राप्त कालेजों संस्थाओं में ग्रागे की पढ़ाई के लिए कार्यशील होना चाहिए।

(ङ) छात्रवृत्ति की ग्रदायगी की जिम्मेदारी उस राज्य सरकार ग्रथना संघ शासित क्षेत्र के प्रशासन की होती है जिस क्षेत्र से छात्र ने परीक्षा उत्तीर्ण की हो जिसके ग्राधार पर उसे छात्रवृत्ति दी गई है। वास्तविक ग्रदायगी के बार में सूचना एकत्रित की जा रही है ग्रौर सभा पटल पर रख दी जाएगी।

केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में प्रवेश के नियम

3058. श्री शकर सिंहजी वाघेला : क्या शिक्षा, समाज कल्याण श्रीर संस्कृति वताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या सरकार ने केन्द्रीय विद्यालयों में प्रवेश के नियम बदल दिए हैं ;
- (ख) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी ब्यौरा क्या है ;
- (ग) क्या केन्द्रीय विद्यालयों में प्रवेश पाने वालों की संख्या बहुत स्रधिक है; स्रौर
- (घ) क्या इन स्कूलों की संख्या बढ़ाने का कोई प्रस्ताव है; ग्रौर यदि हां, तो कितनी ?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर सस्कृति मत्री (डा॰ प्रताप चन्द्र चन्द्र) : (क) जी, हां । इस शैक्षिक सत्र से केन्द्रीय विद्यालयों में दाखिले के लिए नियमों में संशोधन कर दिया गया है ।

- (ख) दाखिले की परीक्षा पास करने की शर्त के साथ, दाखिले के मानदण्ड यह हैं कि पिछले सात वर्षों में स्रिभभावक का कितनी बार तबादला हुस्रा है । रक्षा क्षेत्रों के स्रसैनिकों के बच्चे स्रौर स्रसैनिक क्षेत्रों में रक्षा कर्मचारियों के बच्चे इन स्कूलों में दाखिला ले सकते हैं।
 - (ग) जी, हां । विशेषतौर से महानगरों में ।
- (घ) संगठन प्रत्येक वर्ष 12 नए केन्द्रीय विद्यालय खोलता है (8 रक्षा क्षेत्रों में ग्रौर 4 ग्रमैनिक क्षेत्रों में) इस के ग्रलावा भारत सरकार के उपक्रमों के परिसरों में भी केन्द्रीय विद्यालय खोले जाते हैं बशर्त कि उपक्रम का सारा खर्च वहन करने को तैयार हो।

गुजरांवाला गृह निर्माण सहकारी सिमिति, दिल्ली

3069. श्री रामकवर बेरवा क्या निर्माण ग्रीर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रीर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) वर्ष 1975 के बाद से प्रत्येक वर्ष 31 मार्च को गुजरांवाला गृह निर्माण सहकारी सिमिति के पास कितनी धनराणि थी, सिमिति ने प्रत्येक वर्ष कितनी धनराणि खर्च की तथा किस प्रयोजन हेत् खर्च की ;
- (ख) भाग एक ग्रौर भाग दो में भूमि के विकास पर कितनी धनराशि ख़र्च हुई ग्रौर ग्रित-रिक्त भूमि के विकास पर कितनी धनराशि खर्च की जायेगी; ग्रौर
- (ग) म्रितिरिक्त भूमि का विकास कार्य कब तक पूरा हो जाएगा ग्रौर यह कब तक समिति के सदस्यों को म्रावंटित कर दी जाएगी ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) से (ग) सूचना एकत्र की जा रही है ।

Corporation Schools taken over by Delhi Administration

†3070. Chowdhry Balbir Singh: Will the Minister of Education, Social Welfare and Culture be pleased to state:

- (a) the number of Delhi Corporation's Middle Schools taken over by the Delhi Administration;
 - (b) the number of teachers affected by this takeover;
 - (c) whether all the teachers have since been made permanent; and
 - (d) if not, the reasons therefor ?

The Minister of Education, Social Welfare and Culture (Dr. Pratap Chandra Chunder): (a) 413.

- (b) 3613 teachers.
- (c) and (d) 3563 teachers are already permanent. The remaining cases of 50 teachers are under consideration.

कवास का उत्पादन

- 3071. श्री एस० स्नार० दामाणी : क्या कृषि स्नौर सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) चालू पंचवर्षीय योजना के प्रत्येक वर्ष में कपास के उत्पादन के क्या लक्ष्य निर्धारित किए गए थे ग्रौर वास्तव में कितना उत्पादन हुग्रा;
- (ख) क्या प्रति एकड़ं उपज बढ़ाने के लिए कोई समयबद्ध राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाया गया है; ग्रौर
- (ग) यदि हां, तो तत्संबंधी तथ्य क्या हैं ग्रौर इसको कैसे तथा कहां पर क्रियान्वित किया जा रहा है ?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला) :(क) जानकारी नीचे दी गयी है:

वर्ष			लक्ष्य	उत्पादन
		 (17	0 किलोग्राम वार	—————— ली गांठें——लाख में
1974-75			72.0, 0	71.5
1975-76			72.00	61.0
1976-77			75.00 ₹	सरकारी ग्रनुमा प्रभी उपलब्ध नहीं है

⁽ख) ग्रौर (ग) प्रति एकड़ पैदावार बढ़ाने ग्रौर कपास के कुल उत्पादन में वृद्धि करने के विषय में राज्य सरकारों के प्रयासों में सहायता देने की दृष्टि से सघन कपास जिला कार्यक्रम की एक

केन्द्रीय प्रायोजित योजना द्वारा कियान्वित की जा रही है ताकि पांचवीं योजना के अन्त तक 80 लाख गांठों के उत्पादन के लक्ष्य को पूरा किया जा सके। पांचवीं योजना के दौरान यह स्कीम महत्व-पूर्ण कपास उत्पादक राज्यों—पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, तिमलनाडु, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, उड़ीसा और पिश्चम बंगाल में चल रही है। इस स्कीम के अंतर्गत कर्मचारियों की नियुक्ति के लिए 100 प्रतिशत सहायता देने के साथ साथ भारत सरकार विनौला वर्धन कार्यक्रम को मजबूत बनाने, केन्द्र तथा आधारी बीजों के उत्पादन, संकर बीजों के उत्पादन, वनस्पित रक्षण उपकरणों, कपास श्रेणीकरन केन्द्रों, प्रदर्शनों आदि के लिए राजसहायता भी प्रदान कर रही है। इसके अतिरिक्त पांचवीं योजना के दौरान विश्व बैंक की सहायता से पंजाब, हरियाणा और महाराष्ट्र में एक समेकित कपास विकास परियोजना भी कियान्वित की जा रही है। कपास, खाद्य तिलहन और दालों से संबंधित विशेष दल सिफारिशों के आधार पर भारत सरकार वर्तमान मौसम के लिए विशेषकर लघु तथा सीमान्त कृषकों के लाभ के लिए कीटनाशी औषधियों के हवाई छिड़काव के परिचालनात्मक खर्चों के लिए समुचित राज सहायता देने की एक योजना पर विचार कर रही है। इसके अतिरिक्त मौजूदा सघन कपास जिला कार्यक्रम को प्रमुखतः मध्यम रेशे वाली कपास उगाने के लिए और सात नये वर्षा—सिंचत जिलों तक विस्तृत करने का प्रस्ताव है।

पी० एल०-480 के श्रन्तर्गत श्रनाज का ग्रायात

3072. श्री वयालार रिव्: श्री एन० श्रीकान्तन नायर : श्री के० कुन्हम्ब् :

क्या कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या सरकार ने पी० एल० 480 के ग्रन्तर्गत ग्रनाज का ग्रायात बन्द करने का निश्चय किया है;
 - (ख) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं ; ब्रौर
- (ग) पी० एल० 480 के अन्तर्गत किये गये अनुबन्धों से अब तक कितने अनाज का आयात किया गया है ?

कृषि और सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) ग्रौर (ख)चालू वर्ष में पी० एल०-480 प्रबन्ध के ग्रधीन संयुक्त राज्य ग्रमेरिका से खाद्यान्नों का ग्रायात करने का कोई प्रस्ताव नहीं है।

(ग) पी० एल०-480 के अधीन 1956 और 1976 के बीच लगभग कुल 594 लाख मीटरी टन खाद्यान्नों का आयात किया गया था।

बड़े शहरों में पटरियों पर रहने वाले निर्धन व्यक्ति

3073. श्री वयालार रवि : श्री एन० श्रीकान्तन नायर : श्री के० कुन्हम्ब् :

क्या निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या भारत के बड़े शहरों में स्रभी भी लाखों निर्धन व्यक्ति पटरियों पर रह रहे हैं ;
- (ख) यदि हां, तो शहरों (निगमों) में ऐसे निर्धन लोगों की अनुमानित संख्या कितनी है; अर
 - (ग) इन लोगों को ग्रावास सुविधा प्रदान करने के लिये क्या कदम उठाने का विचार है ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) तथा (ख) शहरों में पटरियों पर रहने वालों के बारे में कोई ग्रद्यतन ग्रांकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

(ग) वास रहित लोगों को रैन बसेरे बना कर वास देने की परियोजनात्रों को बनाने में जैसे कि दिल्ली नगर निगम ने किया है, राज्य सरकारें तथा स्थानीय निकाय सक्षम हैं।

लोनी ग्रावासीय क्षेत्र में प्लाटधारियों को वैकल्पिक प्लाट

3074. श्री कचरूलाल हेमराज जैन: क्या निर्माण ग्रीर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रीर पुनर्वास मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार उन प्लाटधारियों को जिन्हें लोनी ग्रावासीय क्षेत्र में प्लाट ग्रावंटित हुये थे ग्रौर जिनके मामले में भूमि के मूलस्वामियों से कुछ विवाद उत्पन्न हो गया है पीतमपुरा ग्रावासीय क्षेत्र में प्लाट देने का विचार कर रही है जहां प्लाट उपलब्ध है ग्रौर जहां प्लाटों के ग्रावंटन के लिये ग्रावंदन-पत्न मांगे गये हैं; ग्रौर
- (ख) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी ब्यौरा क्या है ग्रौर यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं जबिक पीतमपुरा ग्रावासीय योजना में प्लाट उपलब्ध है ग्रौर निम्न ग्राय वर्ग के ये लोग एक वर्ष से भी ग्रिधिक पहले से प्लाट का पूरा मूल्य ग्रदा कर चुके हैं; ग्रौर उन्हें पट्टे भी दिये जा चुके हैं?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बख्त) : (क) तथा (ख) मामला विचाराधीन है ।

राष्ट्रीय बीज निगम में ग्रनुसूचित जातियों/जनजातियों के कर्मचारियों द्वारा पदोन्नति के लिये ग्रम्यावेदन

- 3075. श्री महीलाल: क्या कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री राष्ट्रीय बीज निगम में ग्रनुसूचित जातियों तथा ग्रनुसूचित जनजातियों के कर्मचारियों की प्रतिशतता के बारे में 20 जून, 1977 के ग्रतारांकित प्रकृत संख्या 1002 के उत्तर के संबंध में यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या राष्ट्रीय बीज निगम में ग्रनुसूचित जातियों तथा ग्रनुसूचित जनजातियों के कर्म-चारियों ने पदोन्नित के लिये ग्रभ्यावेदन दिये हैं ग्रौर पदोन्नित के उपयुक्त ग्रवसर उपलब्ध होने पर भी उनकी उपेक्षा की जा रही है ; ग्रौर

(ख) यदि हां, तो इस मामले में क्या कार्यवाही की गई है स्रथवा किये जाने का विचार है ?

कृषि स्रौर सिंचाई मंत्री (श्री मुरजीत सिंह बरनाला): (क) राष्ट्रीय बीज निगम के अनुसूचित जाति के दो कर्मचारियों ने पदोन्नित के लिए स्रभ्यावेदन दिए हैं। एक मामले में स्रनुसूचित जाति के एक कर्मचारी को पदोन्नित पर स्रहमदाबाद में तैनात किया गया था। उसने स्रभ्यावेदन दिया कि वह दिल्ली छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। इस लिए इस पदोन्नित को कार्यरूप नहीं दिया जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति को उसकी इच्छा के मुताबिक किसी स्थान पर तंनात करना प्रशासनिक रूप से हमेशा सम्भव नहीं है। दूसरा स्रभ्यावेदन निगम के स्रनुसूचित जाति के एक कर्मचारी ने सहायक बीज स्रधिकारी के पद पर न चुने जाने के खिलाफ दिया था। कर्मचारी की परस्पर वरीयता को ध्यान में न रखते हुए भी नेक्स्ट लोग्नर ग्रेड के स्राधार पर इस श्रेणी के पदों पर पदोन्नित की जा सकती है, वशर्ते कि वह कितपय निर्धारित मानकों पर पूरा नहीं उतरता हो। यह कर्मचारी इन मानकों पर पूरा नहीं उतरता हो। उसके मामले पर निम्नलिखित स्राधार पर विचार हो सकता है:——

- 1. उसका न्यूनतम मानकों पर पूरा उतरना ।
- 2. सामान्य स्थिति में पर्याप्त वरीयता प्राप्त करना ।
- (ख) चूंकि अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के कर्मचारियों के दावों और अभ्यावेदनों पर विधिवत विचार किया जाता है, अतः इस संबंध में प्रश्न ही नहीं उठता ।

Cultural Scholarships to Students of Indian Origin Settled Abroad

†3076. Shri Nawab Singh Chauhan: Will the Minister of Education, Social Welfare and Culture be pleased to state:

- (a) the number of cultural scholarships given at present to the students of Indian origin settled abroad indicating the country-wise number of such scholarships; and
- (b) the number of such students who have been admitted to Medical and Engineering Colleges indicating the names of the places these students come from as also the other facilities granted to them?

The Minister of Education, Social Welfare and Culture (Dr. Pratap Chander Chunder):
(a) and (b) Under the General Cultural, Commonwealth and Reciprocal Cultural Exchange Programmes, Scholarships are awarded to foreign students of certain specified countries in consultation with the Ministry of External Affairs. While the majority of the scholarship are earmarked for foreign student of indigenous origin some are awarded to students of Indian Origin permanently domiciled in these countries. Information in regard to the number of scholars studying at present in India and who are of Indian origin settled abroad is as under:—

S. No.	Name of the	Cou n	tr		Number of Cultur Scholarships giver at present to the students of Indian Origin settled about	have been ted to:	who n admit-
					Origin sould gold	Engineering Colleges	Medical Colleges
1	2				3	4	5
1.	Barbados	•			1	·	1
2.	Canada; .	•	•	 •	I		-

1	2					3	4	5
3.	Srilanka (Ceylon) .	•			•	9	5	
4.	Fiji					15	5	8.
5.	Guyana					15	_	12
6.	Kenya					4		4
7.	Malaysia					23	3	18
8.	Mauritius					45	10	15
9.	Singapore .					7	3	
10.	South Africa .					30	1	28
11.	Tanzania					4	_	3
12.	Thailand					8	2	6
13.	Trinidad .			•		1	_	1
14.	Uganda .					1	_	1
15.	United Kingdom .	•	•	•	•	1	_	-
			T	OTAL		165	29	97

The scholars are paid maintenance allowance @Rs. 400/- per month for under-graduate courses and @Rs. 500/- per month for Post-graduate courses. Besides, scholars are also granted other facilities like Actual Tuition Fee, Other Compulsory fees, Examination Fee, Book Allowance, Study Tour Expenses, Reimbursement of Train Fares for journey undertaken during summer vacations, Reimbursement of Medical Expenses, Summer Camps, Cost of Passage (both ways) by Economy Class in the case of some exchange programmes.

ऐतिहासिक स्मारक देखने के लिए प्रवेश टिकट

3077. श्री के० मालना : वया शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या बहुत से शहरों में पुराने ऐतिहासिक स्मारकों के देखने के लिए टिकट लेना पड़ता है जो साधारण व्यक्ति की क्षमता से परे है ग्रौर इस कारण बहुत से दर्शक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारक देखने से वंचित रह जाते हैं; ग्रौर
- (ख) यदि हां, तो क्या सरकार का विचार इस टिकट प्रणाली को समाप्त करने तथा इसकी नि:शुल्क व्यवस्था करने का है ?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) प्राचीन स्मारक तथा पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष अधिनियम, 1958 के अन्तर्गत निर्मित नियमावली के अनुसार केन्द्र द्वारा सुरक्षित 26 स्मारकों पर दर्शकों से पचास पैसे प्रवेश-शुल्क लिया जाता है। शुक्रवार को यह शुल्क नहीं लिया जाता ग्रौर पन्द्रह वर्ष तक के व्यक्ति भी प्रवेश शुल्क के भुगतान से मुक्त रहते हैं।

(ख) इस समय इन स्मारकों पर प्रवेश शुल्क के उद्ग्रहण को रोकने का कोई प्रस्ताव नहीं है।

Rajasthan Canal Project

- 3079. Shri Lalji Bhai: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:
 - (a) the details of the success achieved so far in regard to Rajasthan Canal project;
 - (b) the expenditure incurred so far, year-wise, since its commencement; and
- (c) the amount out of it received by India from foreign countries or foreign organisations?

The Minister of Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala): (a) The Rajasthan Canal, which aims to provide irrigation facilities in the North Western portion of Rajasthan, takes off from Harike Barrage, and will receive assured water supplies from the water stored by Pong Dam on river Beas. Both the Harike Barrage and Pong Dam have been completed.

The Rajasthan Canal with an estimated cost of Rs. 396 crores is being constructed in two stages. Under Stage-I most of the works including 204 kms. of Rajasthan Feeder, 189 kms. of Rajasthan Main Canal, 152 kms. of Lift Canal, and 2900 kms. of distribution system have been completed. Work is in progress on lining of the upper Dist ributary System, the Pungal Branch System and on the Main Canal between 135 to 189 kms. Against the irrigation potential of 5.94 lakh hectares on full development, a potential of 4.43 lakh hectares has been created and an area of 2.78 lakh hectares actually irrigated by March, 1977. Against the estimated cost of Rs. 176 crores for Stage-I, about Rs. 152 crore had been spent upto March, 1977. Allocation for 1977-78 is Rs. 16.00 crores.

Works under Stage-II, which comprise construction of 256 kms. of Main Canal and 4000 Kms. of distribution system have also been started. Lining and Earth work have been completed in lengths of 10 kms. and 50 kms. respectively on the Main Canal and the work is in progress in the downstream reaches as also on the distribution system. Against the estimated cost of Rs. 220 crores for Stage-II, an amount of Rs. 16. 50 crores had been spent by March, 1977. The budget allocation for the year 1977-78 is Rs. 12.00 crores.

(b) The expenditure incurred year-wise on the construction of Rajasthan Canal since its commencement is as under:—

Year			 				Expend	iture	in	Rs.	lakhs.
1955-56											2.64
1956-57											2.85
1957-58				•							25.76
1958-59											78·76
1959-60											577 · 81
1960-61	•										662 · 09
1961-62										,	785·78
1962-63											655-41
1963-64		•					•				494 ·19
1964-65						•					530 · 57

Year									Expen	diture	in l	Rs. lak h s.
1965-66	 •	 •	•	 -	•		•		•	•		454.11
1966-67												497 • 00
1967-68												299 · 51
1968-69												631 · 70
1969-70												799 · 12
1970-71												739 · 29
1971-72												939·06
1972-73												1101 · 30
1973-74												1196 · 60
1974-75											·	1643 · 94
1975-76												2236 45
1976-77												2462 • 00
						7	FOTAL				. 1	16,815.95

⁽c) No assistance from foreign countries/foreign organisations has been received for construction of the Engineering Works on Rajasthan Canal Project. Howev r, International Development Association granted a credit of \$83 million for Rajasthan Canal Command Area Development against which an amount of \$26.4 million had been reimbursed from International Development Association till 31-5-1977.

Financial Assistance to Pracheen Kathputli Sangh

3080. Shri Lalji Bhai: Will the Minister of Education, Social Welfare and Culture be pleased to state:

- (a) whether hundreds of Rajasthani craftsmen of "Pracheen Kathputli Sangh" of Shadipur Depot have submitted representations to Government seeking financial assistance or grants;
- (b) if so, whether Government have taken steps to save from extinction the ancient Kathputli art of India and the Rajasthani Kathputli craftsmen; and
 - (c) if so, the details thereof?

The Minister of Education, Social Welfare and Culture (Dr. Pratap Chandra Chunder): (a) No, Sir. However, in July, 1976, a representation from Pracheen Kathputli Sangh, New Delhi for financial assistance for opening a Puppet Theatre-cum-Training and Research Centre in the art of puppetry was received. The request of the Sangh was forwarded to the Sangeet Natak Akademi for consideration. The Akademi discussed it with the representatives of the Sangh and advised it to submit a fresh project, which has yet to be received from the Sangh.

(b) and (c) The Sangeet Natak Akademi has taken various steps for the preservation and promotion of the art of puppetry in India. They have also given financial assistance to the Pracheen Kathputli Sangh, New Delhi. The details are contained in the attached statement.

Statement

- I. The following steps have been taken by the Sangeet Natak Akademi to preserve and promote the art of puppetry in India:
 - (i) Surveys conducted by the Akademi have brought to light the existence of various forms of puppetry prevailing in different parts of the country.

- (ii) Almost all the forms of traditional puppetry have been documented. The archives of the Akademi contain films, colours, slides, photographs and tape-recordings of all forms of traditional puppetry. A special two-reel documentary has been prepared on the four styles of traditional shadow-puppetry. Collection of representative puppet figures of all the varieties of puppetry.
- (iii) Several institutions and individuals engaged in promoting the art of puppetry have been given grants for specific purposes.
- (iv) The Akademi has a scheme for the preservation and promotion of traditional performing arts. Under this scheme two forms of puppetry, "Pava Koothu" of Kerala and "Ravana Chhaya" of Orissa are to be given financial assistance this year for training in the art and production of puppet plays. The financial assistance is intended to (a) make new puppet figures; (b) train the interested village youth in the art and (c) give free shows in the adjoining villages. Other forms of puppetry are also proposed to be taken for similar aid in the coming years.
- (v) The Akademi organised a festival of Shadow Theatre in Delhi in 1971. Four styles of traditional shadow puppetry were presented in that festival. The Akademi presented a Festival of Puppet Theatre in 1972, in which some of the major forms of glove, string and rod puppetry were presented.
- (vi) In 1972 the Akademi mounted an All India Exhibition of Masks and Puppets in which representative types of puppets covering all the traditional forms were displayed.
- (vii) On the occasion of the All India Exhibition of Masks and Puppets held in 1972 the Akademi brought out a detailed brochure on different forms of puppetry in India. A monograph on "Ravana Chhaya" is presently under publication by the Akademi.
- (viii) The Akademi helped many Indian and foreign scholars of puppetry by supplying information, taped music, photographs and slides for study and for illustrating writings on the subject.
- II. (i) The Sangeet Natak Akademi has been giving financial assistance to the Pracheen Kathputli Sangh, New Delhi since 1969-70. The details thereof are given below:

Year	Amount (1	Rs.) Purpose
1969-70 .	3,000	For salaries of teachers.
1970-71 .	3,000	For salaries of teachers, stipends and cost of material
1971-72 .	5,000	For salaries of teachers and cost of a tape-recorder.
1972-73 .	2,000	For salaries of Puppeteers and purchase of material.
1975-76 .	2,500	For purchase of musical instruments and puppet material.

During 1975-76 the Sangh approached the Sangeet Natak Akademi with a scheme for opening in Delhi a "Puppet Theatre-cum-Training and Research Centre" involving an outlay of Rs. 83,000/-. The scheme was discussed with the representatives of the Sangh and, in the light of the guidance given to them, the Sangh was advised to submit a fresh project. No fresh project, was, however, sent by the Sangh to the Akademi. They, however, applied to the Akademi for financial assistance during 1976-77. The Sangh was requested to furnish additional information for considering their request. The Sangh did not sent any reply to the Akademi's letter.

;(ii) During 1974-75 the Akademi sanctioned a sum of Rs. 500/- as a discretionary grant to Shri Babu Lal, a Rajasthani Puppeteer in Delhi for purchase of material and other expenses connected with the rehearsal of his performances.

विस्ती विकास प्राधिकरण के भूतपूर्व अध्यक्ष, भूतपूर्व उपाध्यक्ष तथा अन्य अधिकारियों के विरुद्ध केन्द्रीय जांच ब्यूरी का अन्तरिम जांच प्रतिवेदन

3081. श्री कंवर लाल गुप्त: क्या निर्माण ग्रीर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रीर पुनर्वास मंत्री दिल्ली बिकास प्राधिकरण के भूतपूर्व ग्रध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष के विरुद्ध केन्द्रीय जांच ब्यूरो द्वारा जांच के बारे में 13 जून, 1977 के ग्रतारांकित प्रश्न संख्या 17 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) उक्त प्रश्न के उत्तर में उल्लिखित सभी चारों मामलों में भ्रष्टाचार तथा कदाचार के ग्रारोपों का ब्यौरा क्या है ;
- ् (ख) ग्रध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा ग्रन्य ग्रधिकारियों के विरुद्ध केन्द्रीय जांच ब्यूरो की शिकायतें कब प्राप्त हुई;
 - (ग) अधिकारियों के नाम क्या हैं स्नौर उनमें से प्रत्येक के विरुद्ध क्या स्नारोप हैं ;
 - (घ) क्या केन्द्रीय जांच ब्यूरो ने कोई अन्तरिम प्रतिवेदन प्रस्तुत किया है ; ग्रौर
- (ङ) यदि हां, तो उसका विवरण क्या है ग्रौर उस पर सरकार ने क्या कार्यवाही की है तथा जांच कार्य पूरा करने में विलम्ब के क्या कारण हैं ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बल्त) : (क) तथा (ख) एक विवरण संलग्न है ।

- (ग) ग्रारोप मुख्यतया दिल्ली विकास प्राधिकरण के भूतपूर्व उपाध्यक्ष के विरुद्ध है जैसा कि संलग्न विवरण में दिया गया है ।
 - (घ) जी, हां।
 - (ङ) ग्रन्तरिम रिपोर्ट के ब्यौरे संलग्न विवरण में दिए गए हैं ।

विवरण

भाग (क) तथा (ग) दिल्ली विकास प्राधिकरण के भूतपूर्व अध्यक्ष तथा भूतपूर्व उपा-ध्यक्ष के विरुद्ध केन्द्रीय जांच ब्यौरो की जांच के बारे में दिनांक 13-6-77 को प्रश्न संख्या 17 के उत्तर में दिए गए सभी चार मामलों में भ्रष्टाचार और कदाचारों के व्यौरे :--

(i) दिलखुश बाग कोठी की भूमि को ग्रर्जन से मुक्त करना

दिल्ली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष श्री जगमोहन ने जी० टी० रोड पर दिलखुश कोठी के 2 एकड़ के ग्राजित प्लाटों को सब्जी मंडी के मैसर्स चड्ढा इण्डस्ट्रीज के किसी श्री चड्ढा को गैर-कानूनी तौर पर दे दिया था । प्लाट का दिया जाना भूमि ग्राजन ग्रिधिनियम, 1894 का उल्लंघन था ।

(ii) खिचंड़ीपुर पुनर्वास कालोनियों के संबंध में लेखें का न रक्षा जाना

खिचड़ीपुर कालोनियों का कोई लेखा नहीं है । दिल्ली विकास प्राधिकरण के इंजीनियरिंग विभाग ने एक बहुत बड़ी राणि हथिया ली है ।

- (iii) सरकारी पद के दुरुपयोग के द्वारा भूतपूर्व शासकीय दल के लिए निवियों को एकत्रित करना
- भूतपूर्व उपाध्यक्ष श्री जगमोहन ने सरकारी पद के दुरुपयोग के द्वारा कांग्रेस दल के लिए निधियां एकत्रित की हैं।
- (iV) वसन्त बिहार कीलोनी में ग्रितिरिक्त प्लाटों का काटा जाना बसन्त बिहार में बदनीयती से ग्रितिरिक्त प्लाट काटे गये थे। भाग (ख).

अध्याय तथा उपाध्यक्ष तथा अन्य अधिकारियों के खिलाफ सी० बी० आई० को शिकायतें कब मिलों ?

सी • बी • ग्राई • को उपर्युक्त शिकायतें ग्रप्रैल-मई, 1977 में मिली थीं। भाग (ङ).

दिल्ली विकास प्राधिकरण के द्वारा दी गई ग्रन्तरिम रिपोर्ट का ब्यौरा

सी० बी० ग्राई० ने बताया है कि उपर्युक्त (i) तथा (iv) में उल्लिखित ग्रारोपों के सम्बन्ध में ऐसी कोई सामग्री नहीं रही है जिससे कि ग्रारोपों की पुष्टि की जा सके। ग्रतएव इन ग्रारोपों से सम्बन्धित मामलों को रोक दिया गया है।

जहां तक शेष ग्रारोपों का सम्बन्ध है सी० बीं० ग्राई० में निम्नांकत स्थिति बतायी है :--

अमरोप (ii): खिचड़ीपुर पुनर्वास कालोनियों के सम्बन्ध में लेखे का न रखा जाना

ग्रारोप निराधार पाया गया था तथा वह इतना स्पष्ट नहीं था कि जिससे सी० बी० ग्राई० के द्वारा सूक्षमता से जांच पड़ताल की जा सके।

ब्रारोप (iii) । सरकारी पद के दुरुपयोग के द्वारा भूतपूर्व शासकीय दल के लिए निधियों को एकत्रित करना :

स्रारोप निराधार पाया गया तथा वह इतना स्पष्ट नहीं था यक जिससे सी • बी • स्राई • के द्वारा सूक्षमता से जांच पड़ताल की जा सके।

जवाहर भवनं न्यास बोर्ड को श्रीवंटित प्लाट तथा भवन का बाजार मूल्य

- 3082. श्री कंवर लाल गुप्त: क्या निर्माण और ग्रावास तथा पूर्ति श्रीर पुनर्वास मंत्री कांग्रेस दल को बंगले की बिक्री के बारे में 13 जून, 1977 के ग्रतारांकित प्रश्न संख्या 92 के उत्तर के संदर्भ में यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या सरकार ग्रखिल भारतीय कांग्रेंस समिति के जवाहर भवन के न्यास बोर्ड को ग्रावंटित प्लाटों तथा भवनों का बाजार मूल्य वसूल करती है;

- (ख) यदि नहीं, तो क्यों नहीं ;
- (ग) क्या सरकार का विचार उनको अधिग्रहीत करने का है ;
- (घ) न्यास के सदस्य कौन कौन से हैं ; श्रौर
- (ङ) उपरोक्त भवन न्यास को किसके म्रादेश से दिया गया स्रौर क्या इसमें कोई राजनैतिक दबाव था ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्रो (श्री सिकन्दर बस्त): (क) तथा (ख) मौजूदा नीति के अनुसार भूमि के लिए राजनीतिक पार्टियों से पूरा मार्कीट मूल्य वसूल किया जाता है। भवनों के बारे में, मूल्य ह्नास वसूल किया जाता है। प्रारम्भ में, जवाहर भवन ट्रस्ट को 598 रुपए प्रति वर्ग मीटर (500 रुपए प्रति वर्ग गज) की मार्कीट दर से भूमि का ग्रावटन किया गया था। तदुपरान्त मार्कीट दर 149.50 रुपए प्रति वर्गमीटर (125 रुपए प्रति वर्ग गज) के हिसाब से निश्चित की गई, इसका कारण यह था कि संस्थानिक क्षेत्र में उस स्थान पर अवन का वाणिज्यिक उपयोग करने की ग्रनुमित नहीं थी।

- (ग) इस बारे में की जाने वाली कार्यवाही पर विचार किया जा रहा है;
- (घ) रिकार्ड पर रखी सूचना के श्रनुसार जवाहर भवन ट्रस्ट के निम्नलिखित स्वस्य थे:---

श्री डी० के० बरुग्रा श्रीमती इन्दिरा गांधी श्री उमा शंकर दीक्षित श्री सय्यद मीर कासिम श्री वी० पी० नायक श्री सिद्धार्थ शंकर रे श्रीमती एम० चन्द्रशेखर

(ङ) ग्रावंटन का ग्रनुमोदन उस समय के निर्माण ग्रीर ग्रावास मंत्री ने किया था। विदेशों को भेजे गए शिष्ट मंडल

3083. श्री पी० जी० मावलंकर : क्या शिक्षा, समाज कल्याण श्रीर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या 1975 श्रीर 1976 के दौरान सांस्कृतिक शिष्ट मंडल विदेशों में भेजे गये थे ;
- (ख) यदि हां, तो उसके पूरे तथ्य क्या हैं;
- (ग) उक्त यात्राम्रों से देश को यदि कोई वास्तविक तथा ठोस लाभ मिले हैं तो वे क्या हैं ; म्रौर
- (घ) इन पर भारतीय तथा विदेशी मुद्राग्रों में कुल कितना खर्च हुग्रा ?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रीर संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र) : (क) जी, हां।

(ख) विवरण संलग्न है। [ग्रन्थालय में रखा गया। देखिये संख्या एल० टी॰ 664/77]

- (ग) हमारे सांस्कृतिक विनिमय/कार्यकलाप कार्यक्रमों के जरिए विदेश में भारतीय कलाकारो ग्रौर भारतीय कला तथा संस्कृति की प्रदिशिनियों के भ्रमणों ग्रौर प्रदर्शनों से विदेश में भारत की सांस्कृतिक परम्परा का प्रतिरूप प्रस्तुत करने में सहायता मिली है । इसके ग्रलावा, इन भ्रमणों से बाहर के देशों से पारस्परिक सद्भावना ग्रौर निकटवर्ती सम्बन्धों को बढ़ावा मिलने की सम्भावना है ।
 - (घ) 50,85,394.77 भारतीय मुद्रा में। 2,38,748.00 विदेशी मुद्रा में।

स्कूलों में ग्रनिवार्य भाषा के रूप में ग्रंग्रेजी

3084. श्री पी० जी० मावलंकर: क्या शिक्षा, समाज कल्याण ग्रीर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार का विचार समूचे देश के सभी स्कूलों में अंग्रेजी को एक अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाने के बारे में एक जैसी नीति बनाने का है; और
 - (ख) यदि हां, तो कैसे ग्रौर कब ?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री (डा॰ प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) ग्रौर (ख) वि-भाषा सूत्र के ग्रन्तर्गत जो कि ग्रब लागू है, तीसरी भाषा ग्रंग्रेजी होनी चाहिये। प्रत्येक राज्य की स्थानीय परिस्थितियों के ग्रनुसार उक्त भाषा छठी श्रेणी ग्रथवा इससे पहले ग्रथवा बाद में प्रारम्भ की जा सकती है।

Commission for Scientific and Technical Terminology

†3085. Shri Nawab Singh Chauhan: Will the Minister of Education, Social Welfare and Culture be pleased to state:

- (a) whether Government propose to give the Chairman of the Commission for Scientific and Technical Terminology a pay equal to the Secretary in the Central Government;
- (b) whether some Members are proposed to be appointed in the Commission for Scientific and Technical Terminology so that books of high standard in every subject in Hindi may be brought out soon;
- (c) if so, the time by which the Commission for Scientific and Technical Terminology would re-organise and the reorganised set up thereof; and
- (d) whether Government also propose to give the Chairman and the Members of the Commission pay, allowances and Independence in the discharge of their duties equal to the Chairman and Members of Union Public Service Commission?

The Minister of Education, Social Welfare and Culture (Dr. Pratap Chander Chunder): (a) to (d): The commission has been reconstituted in 1975 by appointment of Chairman and four part-time members. The Chairman is appcinted on a fixed salary of Rs. 2500, and has status of Head of Department.

Three of the part-time members appointed to the Commission are experts in the subjects of Medicine, Agriculture and Engineering. The central hindi Directorate is bringing out books in these subjects. As and when the need arises for more experts and the Commission strengthened the Government will take a decision. There is no such proposal at present.

Kashi Nagri Pracharni Sabha, Varanasi and Hindi Sahitya Sammelan, Paryag

†3086. Shri Nawab Singh Chauhan: Will the Minister of Education, Social Welfare and Culture be pleased to state:

- (a) the amount of grant or financial assistance given by his Ministry to Kashi Nagri Pracharni Sabha, Varanasi and Hindi Sahitya Sammelan, Prayag during the last three years;
- (b) the names and the details of the programmes for which the grant was given;
- (c) whether audited details of the utilization of the amount of grant have been received by the Ministry;
- (d) the names of other organisations engaged in the promotion of Hindi, which were given grants; and
- (e) the details of the Scheme for giving grants to such Organisations in future?

The Minister of Education, Social Welfare and Culture (Dr. Pratap] Chandra Chunder); (a) to (c): A statement is attached. (Annexure-I)

[Placed in Library. See No. L. T. 665/77].

- (d) A list of voluntary Hindi Organisations receiving grants from the Ministry of Education and Social Welfare is attached. (Annexure-II).
 [Placed in Library. See No. L T. 665/77].
- (e) Grants are give 1 to voluntary Hindi organisations under this Ministry's scheme "Assistance to Voluntary Hindi Organisations for Promotion of Hindi". Grants are admissible under this scheme for running free Hindi classes for non-Hindi speaking people, setting up Hindi libraries and reading rooms in non-Hindi speaking areas, for running Hindi typewriting and Hindi shorthand classes, publication of literature of Regional Languages in Devanagri Script with translation in Hindi and for any other activity which may found conducive to the enrichment of or propagation and development of Hindi. Grants are given on the basis of 75% of the approved expenditure. In every special cases, building grants are also sanctioned to voluntary organisations on the basis of 60% of the approved expenditure subject to a maximum of Rs. 50,000.

पोस्ट ग्रेजुएट कालेज ग्राफ एनीमल साइंसेस, इंडियन वेटेरीनरी इन्स्टीट्यूट, इन्जतनगर के विद्यार्थियों से जापन

3087. श्री पी०के० कोडियान: क्या कृषि ग्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या पोस्ट ग्रेजुएट कालेज ग्राफ एनीमल साइंसेस, इंडियन वेटेरीनरी इन्स्टीट्यूट, इज्जत-नगर के विद्यार्थियों ने हाल में एक ज्ञापन भेजा है जिसमें सरकार से इस संस्थान को विश्वविद्यालय का स्तर देने का ग्रनुरोध किया है; ग्रौर
 - (ख) यदि हां, तो इस पर क्या निर्णय किया गया है ?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्रो सुरजीत सिंह बरनाला): (क) जी हां, श्रीमन्। सरकार की भारतीय पश्चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के स्नातकोत्तर पशु चिकित्सा महाविद्यालय, इज्जितनगर के छावों का एक ज्ञापन प्राप्त हुग्रा है जिसमें उन्होंने सरकार से ग्रनुरोध किया है कि या तो इस संस्थान को 'डीम्ड यूनिविसिटी' का दर्जा दिया जाय ग्रथवा इसे इहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली के साथ सम्बद्ध कर दिया जाय।

(ख) इस संस्थान को 'डीम्ड यूनिवर्सिटी' का दर्जा देने का प्रस्ताव विश्वविद्यालय ग्रनुदान ग्रायोग के विचाराधीन है।

तब तक के लिए, इहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, जिसकी क्षेत्रीय सीमा के अन्तर्गत आई० वीं अगरं आई० का स्वातकोत्तर पशु चिकित्सा महाविद्यालय पड़ता है, ने जुलाई, 1977 में एम०वी॰ एस॰ सी॰ की परीक्षाएं आयोजित करने की व्यवस्था कर दी है।

कनाट प्लेस नई दिली में भूमिगत शापिंग सेन्टर का निर्माण

3088. श्री पी०के०कोडियान : क्या निर्माण ग्रीर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रीर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या नई दिल्ली नगर पालिका की कनाट प्लेस में भूमिगत शापिंग सेन्टर का निर्माण करने की प्रतिष्ठित परियोजना दिल्ली बृहत्त योजना का उल्लंघन करके और दिल्ली अर्बन ग्रार्ट कर्म।शन की स्वीकृति के बिना कियान्वित की जा रही है; ग्रीर
 - (ख) यदि हां, तो सरकार ने इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की है ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बख्त) :(क) जी, हां।

(ख) नई दिल्ली नगर पालिका से रिपोर्ट मंगाई गई है।

भारतीय कृषि स्रनुसन्धान परिषद् श्रौर कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड

3089. श्री धर्मवीर विशष्ट : क्या कृषि ग्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे

- (क) क्या उन्हें भारतीय कृषि ग्रनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली से भारतीय कृषि ग्रनुसंधान परिषद् ग्रौर कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड के विरुद्ध शिकायतें प्राप्त हुई हैं ;
- (ख) क्या भारतीय कृषि त्रनुसंधान परिषद् के महानिदेशक का नाम भी शिकायत में शामिल है ;
 - (ग) यदि इस मामले में कोई कार्यवाही की गई है, तो वह क्या है ; ग्रौर
- (घ) क्या अन्य संस्थाओं, जिनकी संख्या 27 है के विचार भी रखें गए थे तथा सरकार ने उपरोक्त (ग) में लिए गए निर्णय के समय इन पर विचार किया था?

कृषि और सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) भारतीय कृषि ग्रनुसंधान परिषद् (ग्राई०सी०ए०ग्रार०) या कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल के विरुद्ध भारतीय कृषि ग्रनुसंधान संस्थान से कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई है। फिर भी, विज्ञानियों से व्यक्तिगत रूप से ग्रीर वैज्ञानिक तथा तकनीकी कर्मचारी संघ, भारतीय कृषि ग्रनुसंधान संस्थान से संस्थान के विज्ञानियों ग्रीर तव नीकी कर्मचारियों की सेवा शर्तों से सम्बन्धित कई मामलों पर ग्रभिवेदन-पत्न प्राप्त हुए हैं। इन ग्रभिवेदन-पत्नों में प्रमुख मांगें ये हैं :—(1) कृषि ग्रनुसंधान सेवा के ग्रन्तर्गत विज्ञानियों के पंचवर्षीय मूल्यांकन के लिए होने वाले साक्षात्कार को रद्द करना (2) कृषि ग्रनुतंधान सेवा के वर्ग 'एस' (550–900 रु०) के विज्ञानियों का वर्ग 'एस' (700–1300 रु०) विज्ञानियों में पदोन्नयन ग्रौर (3) विश्वविद्यालय ग्रनुदान ग्रायोग के नमूने पर प्रभागों के ग्रध्यक्षों के वेतनमानों का संजोधन ।

(ख) जी हां, श्रीमान्।

(ग) जहां तक साक्षात्कारों को रद्द करने के लिए ग्रभिवेदन-पत्नों का सम्बन्ध है, यह निर्णय किया गया है कि चाहे 'साक्षात्कार' ग्रनिवार्य नहीं होंगे किन्तु फिर भी विज्ञानियों को यदि वे चाहें तो उन्हें मृत्यांकन की ग्रविध के दौरान उनके कार्यों तथा उपलब्धियों के बारे में बताने हेतु व्यक्तिगत विचार-विमर्श के लिए मूल्यांकन सिमिति के सामने पेश होने का स्रवसर दिया जाना चाहिए । दूसरे शब्दों में, विज्ञानी स्वयं ही यह निर्णय कर सकता है कि वह मण्डल के सामने विचार-विमर्श का स्रवसर पाना चाहता है स्रथवा नहीं । जहां तक वर्ग 'एस' के विज्ञानियों के पदोन्नत ग्रौर प्रभागों के स्रध्यक्षों के वेतनमानों के संशोधन का प्रश्न है, ये मांगें परिषद् के विचाराधीन हैं ।

(घ) साक्षात्कारों को वैकल्पिक बनाने का निर्णय कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल की सलाह से किया गया था, जैसा कि नियमों में प्रावधान है। भारतीय कृषि स्रनुसंधान परिषद् के संस्थानों से परामर्श की स्रावश्यकता नहीं थी।

कृषि के विकास सम्बन्धी समिति

3091. श्री समर गुहा : क्या कृषि श्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या सरकार ने सार्वजिनक रूप से यह घोषणा की थी कि कृषि का विकास राष्ट्रीय विकास के लिए इसकी म्रालोचना का मुख्य म्राधार होना चाहिये ;
- (ख) यदि हां, तो क्या सरकार ने देश भर में कृषि के विकास के सम्बन्ध में ग्राधारभूत तथा नीति परिवर्तनों सम्बन्धी समस्याग्रों एवं ग्रावश्यकताग्रों के ग्रध्ययन हेतु कोई विशेषज्ञ समिति गठित की है;
- (ग) क्या सरकार ने इस प्रयोजन के लिये धनराशि का नियतन करने के प्रश्न पर विचार कर लिया है ; श्रौर
- (घ) यदि हां, तो राष्ट्रीय कृषि के विकास कार्यक्रम ग्रौर भावी योजना सम्बन्धी सिद्धान्त क्या हैं ?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) जी हां। सरकार कृषि विकास को प्रधानता देती है ।

(ख) से (घ) राष्ट्र के जीवन में कृषि की महत्ता को ध्यान में रखते हुए कृषि तथा इससे सम्बद्ध सेवाग्रों, जिनमें सहकारिता, उर्वरक, सिंचाई, बाढ़ नियंत्रण ग्रौर कृषि के लिये बिजली के सम्बन्ध में परिच्यय को जो 1976-77 में 2312 करोड़ रुपये का था, 1977-78 में बढ़ा कर 3,024 करोड़ रुपये का कर दिया गया है, ग्रर्थात् इसमें लगभग 31 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। सरकार ने देश भर में कृषि विकास के सम्बन्ध में ग्राधारभूत तथा नीति परिवर्तन सम्बन्धी समस्याग्रों एवं ग्रावश्यकताग्रों के ग्रध्ययन के लिये इस प्रकार की किसी विशेषज्ञ समिति की स्थापना नहीं की है। तथापि, हाल ही में पुनर्गिठत योजना ग्रायोग से यह ग्राशा की गई है कि वह ग्रन्य बातों के साथ-साथ ग्राधारभूत एवं नीति सम्बन्धी परिवर्तनों ग्रौर समग्र ग्राथिक विकास की राष्ट्रीय योजना के ढांचे के ग्रन्तर्गत कृषि विकास के लिए ग्रयेक्षित संसाधन सम्बन्धी ग्रावंटन के बारे में भी विस्तृत रूप से विचार करेगा।

बहु-फसलों कृषि भूमि

3093. श्री समर गुह: क्या कृषि ग्रीर सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या सरकार ने एक फसली कृषि भूमि का दो-फसली और तीन-फसली कृषि भूमि में विकास करने के लिए गर्त तीन वर्षों के दौरान कोई ग्रध्ययन किया है ;
 - (ख) यदि हां, तो अध्ययन के राज्यवार आकड़े क्या हैं ;

- (ग) क्या सरकार ने सिचाई सुविधाओं में विस्तार करके एक-फसली भूमि को दो-फसली और तीन-फसली भूमि में बदलने के लिए योजनाएं बनाई हैं ; और
- (घ) यदि हां, तो ऐसी योजनाम्रों की मुख्य बातें क्या हैं म्रौर ऐसी परियोजनाम्रों का राज्य वार ब्यौरा क्या है ?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री मुरजीत सिंह बरनाला): (क) ग्रौर (ख) एक फसली कृषि भूमि को दो फसली कृषि भूमि ग्रौर तीन फसली कृषि भूमि के रूप में विकसित करने के लिये कोई ग्रध्ययन नहीं किया गया है। तथापि, एक बार से ग्रधिक बोए गए क्षेत्र के बारे में जानकारी भूमि उपयोग के वार्षिक ग्रांकड़ों के एक भाग के रूप में उपलब्ध है। 1972-73 से 1974-75 तक के वर्षों में एक बार से ग्रधिक बोए गए क्षेत्र के बारे में नवीनतम उपलब्ध ग्रांकड़े ग्रनुबन्ध-1 में दिए गए हैं।

[ग्रन्थालय में रखा गया । देखिए संख्या एल०टी० 666/77]

(ग) ग्रौर (घ) योजना में शामिल ग्रनेक कृषि कार्यक्रमों ग्रौर विशेषकर सिंचाई सुविधाग्रों के विस्तार कमांड क्षेत्र विकास, ग्रल्पाविध किस्मों, ग्रेधिक उपज वाली किस्मों, विस्तार कार्यक्रमों (जिनमें राष्ट्रीय प्रदर्शन भी शामिल है) से बहु-फसली खेती के विकास में सहयोग मिलता है। सिंचाई योजनाग्रों की प्रमुख विशेषताएं हैं :—बृहत, मध्यम ग्रौर लघु सिंचाई के माध्यम से सिंचाई सुविधाग्रों का विस्तार करना ग्रौर सतही तथा भूमिगत जल का मिला जुला उपयोग करना। इन कार्यक्रमों से गत 3 वर्षों के दौरान 70 लाख हेक्टार भूमि में सिंचाई क्षमता के सृजित होने की संभावना है। राज्यवार ब्यौरा ग्रनुबन्ध 2 में दिया गया है।

[ग्रन्थालय में रखा गया। देखिए संख्या एल०टी० 666/77]

विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के समान वेतनमान

- 3094. श्रीमती ग्रहिल्या पी० रांगनेकर : क्या शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) क्या सरकार सभी विश्वविद्यालयों के कर्मचारियों के लिए समान वेतनमान निर्धारित करने पर विचार कर रही है; ग्रौर
 - (ख) यदि हां, तो कब से तथा उसका ब्यौरा क्या है ?

शिक्षा, समाज कल्याण और संस्कृति मंत्री (डा॰ प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) ग्रौर (ख) विश्वविद्यालय ग्रनुदान ग्रायोग की सिफारिशों पर, केन्द्रीय सरकार ने, केन्द्रीय विश्वविद्यालयों सिहत विश्वविद्यालयों में कर्मचारियों की निम्नलिखित श्रेणियों के लिए 1-1-1973 से ग्रपनाए जाने के लिए संशोधित वेतनमान सुझाए हैं।

ग्रध्यापक:

विश्वविद्यालय

लेक्बरर — ह० 700-40-1100-50-1600.

रीडर | — ह० 1200-50-1300-60-1900

प्रोफैसर — ह० 1500-60-1800-100-2000-125 2-2500

पुस्ताकलाय स्टाफ :		
पुस्तकाध्यक्ष	— (i) бо	1500-60-1800-100-2000-125 / 2-2500
	(ii) ₹o	1500-60-1800-100-2000
उप-पुस्तकाध्यक्ष ः	 ह०	1100-50-1600
सहायक पुस्तकाध्यक्ष	 ह०	700-40-1100-50-1300
प्रलेखन ग्रधिकारी	— (i) र ०	1100-50-1600
	(ii) vo	700-40-1100-50-1300
निदेशक _, ंशारीरिक		
शिक्षा अनुदेशक	(i) をo	1100-50-1600
	, (ii) ह०	700:-40-1100-50-1300
	(iii) रु०	700-40-1100
	(IV) Fo	550-25-750-द० रो० 30-900
	(y) ₹o	425-15-500-द० रो०-15-560-20-700

इन संशोधित वेतनमानों को स्वीकृति के लिए भेजते हुए राज्य सरकारों को यह वैकल्प दिया गया कि वे स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इनमें संशोधन कर सकती थीं ग्रौर इनको दिनांक 1-1-1973 के बाद की किसी तारीख से भी लागू कर सकती थीं।

देश के सभी विश्वविद्यालयों के ग्रन्य श्रेणियों के कर्मचारियों के एकरुप वेतमान निर्धारण करने हेतु केन्द्रीय सरकार के विचारणीय कोई प्रस्ताव नहीं है।

विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को ट्रेड यूनियन के श्रधिकार

3095 श्रीमती श्रिहिल्या पी० रांगनेकर : क्या शिक्षा, समाज कल्याण श्रीर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या राष्ट्रीय श्रम ग्रायोग की सिफारिशों के ग्रनुसार सरकार विश्वविद्यालयों के कर्मचारियों को ट्रेड यूनियन ग्रधिकार देने के प्रश्न पर विचार कर रही है ; ग्रीर
 - (ख) यदि हां, तो कब ?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र) : (क) जहां तक विश्व-विद्यालय के कर्मचारियों के ट्रेड यूनियन ग्रधिकारों का सम्बन्ध है राष्ट्रीय श्रम ग्रायोग के ट्रेड यूनियन कानून में किसी प्रकार का संशोधन करने की सिफारिश नहीं की थी।

(ख) प्रश्न नहीं उठता ।

Allotment of Residential Land to Economically Backward section of society

No. 3096. Shri Mahi Lal: Will the Minister of Works and Housnig and Supply
and Rehabilitation be pleased to state:

- (a) the number of families, allotted land by the Government of Uttar-Pradesh out of (i) the land of Gram Sangh(ii) land under ceiling on land Holdings Act and (iii) the land acquired, on the basis of the Central Government's policy on allotment of residential land to economically backward sections of society, and the areas of land allotted to each family;
- (b) whether each landless farmer has been settled in many villages in Kashipur Tensil of Nainital District by allotting a plot of only 20X25 feet, out of the land belonging to the Forest, Department or the land acquired under colonization scheme; and

- (c) if so, whether this small piece of land is sufficient for landless farmers?
 - The Minister of Works and Housing and Supply Rehabilitation Shri Sikarder Bakht):
 (a) According to the information available with this Ministry, all the 12,12014 eligible families have been allotted house-sites by the Government of Uttar Pradesh.
 - A family of husband, wife and minor children had been treated a unit and those having less than 100 sq. yds. of land per unit had been considered eligible for allotment of 100-150 sq. yds. The land used for allotment of house-sites included land belonging to Goan Sabha Government, land declared surplus as a result of imposition of ceiling on holdings and land acquired. Upto the end of May, 1976, according to a report received from the Government of U. P. in June, 1976, 15,082.90 hectares of land belonging to Goan Sabha and 567.30 hectares of a quired land had been utilised for allotment of house-sites to 11,88,134 families.
 - The State Government has been requested to furnish particulars of land alloted to the remining 23,880 familes.
 - (b) and (c) The Government of Uttar Pradesh has been requested to furnish necessary details which are awaited.

Pay Scales of Teaching Staff in Municipal Corporation

3097. Shri Bhanu Kumar Shastri: Will the Minister of Education, Social Welfare and Culture be pleased to state:

- (a) Whether the Education Department of the Municipal Corporation, Delhi adopts those pay scales which are sanctioned by Government of India from time to time;
- (b) whether the pay scales of teachers as recommended by the Third Pay Commission have been implemented but the provision of 20 percent selection grade has not been implemented so far and if so, the reasons therefor;
- (c) whether the pay scales of Inspector of Schools, Senior Inspector of Schools, Asisstant Education Officer and Deputy Education Officer have not been implemented fully with effect from 27th May, 1970 and 1st January, 1973; and
 - (d) if so, the reasons therefor?

The Minister of Education, Social Welfare and Culture (Dr. Pratap Chandra Chunder):

- (a) Yes, Sir.
- (b) The pay scales have been implemented and the implementation of the 20 percent quota of the selection grade has started.
- (c) The matter is under consideration of the authorities in Municipal Corporation of Delhi.
- (d) Does not arise.

Research on Improved Variety of Wheat

3098. Shri Jagdambi Parshad Yadav: Will the Minister of Agriculture and Irrigation te pleased to state:

- (a) whether a Centre of the Indian Councial of agriculture Reaearch in Pusa in Bihar conducts research in respect of improved varieties of wheat for many States in North India but there is only one Agronomist working in the Centre and he has not been provided with a clerk to assist him;
- (b) if so, the steps proposed to be taken by Government to augment the staff there:
- (c) whether neither the seeds nor the fertilizers are available in the centre for carrying on demonstration work; and
 - (d) whether Government propose to take remedial measures in this regard?

The Minister of Agriculture and Irrigation: (Shri Surjit Singh Barnala):

(a) Yes Sir, there is a centre of the Indian Council of Agricultural Research in Pusa (Bihar) conducting research in Wheat to develop improved varieties of wheat for the State

of Bihar in particular and for other States in general. Besides a breeder and a Pathologist there is also an Agronomist working on wheat research at this centre. Although there is no clerical staff attached separately to each scientist there are common office facilities for the centre as a whole. Besides ICAR Research Centre at Pusa, Rajendra Agricultural University, Dholi, has the primary responsibility of conducting research in Bihar and ICAR extends full support.

(b) The Agronomist is sufficient to look after the Agronomical aspects of Wheat Reaearch work of the centre. However, as the work expands appropriate assistance will be provided to

the centre.

- (c) The Wheat Reasearch Centre at Pusa is not meant for carrying out demonstration work. However, Rajendra Agril. University, Dholi organises National Demonstration programme in two districts, namely, Santhal Parganas and Muzaffarpur. Under these National Demonstrations there is a provision of subsidy in kind in tle form of seeds/fertilisers/pesticides.
- (d) The centre has been provided requisite staff and substantial funds for organising wheat research. The ICAR will take appropriate measures as and when the need arises for strengthening the research base of the centre.

मानसिक रूप से ग्रविकसित व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय संस्थान

3099 डा० कर्ण सिंह : क्या शिक्षा, समाज कल्याए ग्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या सरकार का मानसिक रूप से ग्रविकसित व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय संस्थान स्थापित करने का कोई प्रस्ताव है ; ग्रौर
 - (ख) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी ब्यौरा क्या है ?

शिक्षा, समाज कल्याण श्रौर संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चद्र चन्द्र) : (क) जी, हां ।

(ख) इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य मंद बुद्धि व्यक्तियों की शिक्षा ग्रौर पुनर्वास के सभी प्रमुख पहलुग्रों में ग्रनुसंधान को कराना या करना है तथा कर्मचारियों को प्रशिक्षण देना है। इसमें प्रशिक्षण सामग्रो तथा शिक्षा सहायक उपकरणों का निर्माण करने के लिए भी व्यवस्था होगी।

केरल में पेरियास्थल शरणार्थे को बाध शरणास्थल में सम्मिलित करना

3100 डा० कर्ण सिंह: क्या कृषि और सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या प्राजेक्ट टाइगर की स्टियरिंग सिमिति का यह सुझाव कि केरल के पेरियार शरणास्थल को 10 वें वाध शरणास्थल के रूप में सिम्मिलित किया जाये, सरकार द्वारा स्वीकार कर लिया गया है; ग्रीर
- (ख) यदि हां, तो उक्त निर्णय किस तिथि से प्रभावी होगा ? कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) सरकार इस प्रस्ताव पर सिक्रय रूप से विचार कर रही है।
 - (ख) (क) को दृष्टि में रखते हुए प्रश्न ही नहीं होता।

काश्मीर में राष्ट्रीय पार्क

- 3101. डा० कर्ण सिंह: क्या कृषि ग्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) क्या सरकार को काश्मीर में विशेषरूप से तेजी से लुप्त हो रहे काश्मीर 'स्टेग' (हंगुल) के संरक्षण के लिये राष्ट्रीय पार्क की स्थापना करने के लिए कोई प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं ; ग्रौर

(ख) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी ब्यौरा क्या है ?

कृषि श्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) जी नहीं।

(ख) प्रश्न ही नहीं होता।

सोहन चिड़िया नामक पक्षी का लुप्त होना

3102. श्री सतीश श्रग्रवाल : क्या कृषि श्रौर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या सोहन चिड़िया नामक पक्षी के भारत तथा ऐसे क्षेत्रों में जहां आजकल यह मिलती है, लुप्त हो जाने की बहुत अधिक आशंका है ;
- (ख) इसकी वर्तमान जनसंख्या के कम होने के क्या कारण हैं और क्या सरकार का विचार इसको संरक्षण देने का है; और
 - (ग) यदि हां, तो इस पक्षी की इस समय की जनसंख्या कितनी है ?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) सोहन चिड़िया नामक पक्षी की नस्ल खतरे में है।

े ग्रब यह पक्षी राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा गुजरात में बहुत कम पाया जात। है ।

(ख) इस पक्षी की संख्या में कमी ग्राने का कारण खेती, ग्रादि के लिये भूमि पर मानव का ग्रधिक दवाब का होना है, जिसके फलस्वरुप इस पक्षी का ग्रावास-स्थल कम हो गया है । इसके ग्रतिरिक्त इस पक्षी का ग्राकार बड़ा होने के कारण यह बहेलियों ग्रौर जंगल के चोरों का भी ग्रासानी से शिकार हो जाता है।

सरकार ने इस पक्षी को वन्य-प्राणी (संरक्षण) ग्रिधिनियम, 1972 की ग्रनुसूची 1 में शामिल कर लिया है, जिससे ग्रब इसे वैधानिक संरक्षण प्रदान है। कर्नाटक में सोहन चिड़िया नामक पक्षी के लिये ग्राश्रय स्थल मौजूद है ग्रौर ग्रन्य ग्राश्रय स्थलों के प्रस्ताव पर सित्रय रूप से विचार किया जा रहा है।

(ग) अभी तक इस पक्षी के विषय में कोई गणना नहीं की गई है, अतः इनकी संख्या के बारे में अनुमान लगाना संभव नहीं है।

रेगिस्तान राष्ट्रीय पार्क

3103. श्री सतीश स्रग्रवाल : क्या फ़ुषि स्रौर सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या रेगिस्तान राष्ट्रीय पार्क के प्रस्ताव को त्याग दिया गया है यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं ;
- (ख) केन्द्रीय एजेंन्सियों ने राजस्थान में पार्क बनाये जाने के लिए किन-किन स्थानों का कितनी बार दौरा किया और उनकी सिफारिशों का सारांश क्या हैं; ग्रौर
 - (ग) इस योजना को कब ग्रन्तिम रूप दिया जाना है ग्रौर इसकी मख्य बातें क्या हैं?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) मरुस्थल राष्ट्रीय पार्क बनाने का प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है।

- (ख) केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधियों ने तीन बार राजस्थान का दौरा किया है। उनके नाम तथा सिफारिशों का सार संलग्न विवरण में दे दिया गया है।
- (ग) इस योजना को वन महानिरीक्षक द्वारा ग्रस्थायी तौर से पता लगाये गए क्षेत्र का आयागामी सर्दियों में वैज्ञानिक सर्वेक्षण करने के बाद ही ग्रन्तिम रूप दिया जा सकता है।

इस योजना की प्रमुख विशेषता पर्याप्त संख्या में बचे हुए रेगिस्तानी पशु-पक्षी और वनस्पति वाले एक प्रतिनिधि मरु क्षेत्र का चयन करना है।

विवरण

- 1. जनवरी, 1974 में कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्रालय के कृषि विभाग के भूतपूर्व उप-सिंचव श्री रणजीत सिंह ने राजस्थान सरकार के ग्रधिकारियों के साथ राजस्थान का दौरा किया था। उन्होंने बाडमेर—जैसलमेर मार्ग के पूर्व में जैसलमेर के पूर्व में 43 किलोमीटर के फासले पर देवीकोट गांव के उत्तर ग्रौर दक्षिण में स्थित ग्रायातकार भूमि क्षेत्र को प्रस्तावित पार्क के लिये उपयुक्त स्थल समझा है।
- 2. दिसम्बर, 1975 में कृषि ग्रौर सिचाई मंत्रालय (कृषि विभाग) के निदेशक 'प्रोजेक्ट टाइगर' श्री के० एस० संखला ने राजस्थान का दौरा किया ग्रौर उसने उत्तर में शाहगढ़ के पश्चिम ग्रौर दक्षिण में दनाना को जोड़ती हुई ग्रन्तर्राष्ट्रीय सीमा तक फैली हुई रेखा के बीच का क्षेत्र प्रस्तावित किया है।
- 3. फरवरी, 1977 में वन महानिरीक्षक श्री एस० के० सेठ ने राजस्थान का दौरा करके अस्थायी तौर पर पूर्व साम ग्रौर पश्चिम में शाहगढ़ के बीच के क्षेत्र को चुना है। ग्रागामी सर्दियों में सुझायी गई सीमा को ग्रन्तिम रूप देने से पहले वनस्पित तथा पषु-पक्षी संम्बन्धी सर्वेक्षण किया जाना है।

Price of Ghee Supplied by D.M.S.

3104. Shri Ishwar Chaudhary: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state whether Government propose to reduce the price of ghee supplied by the Delhi Milk Scheme?

The Minister of Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala): No, Sir. No proposal for reduction of price of ghee manufacture by the Delhi Milk Scheme is presently under consideration.;

स्कूलों, कालेजों में "वन्य जीवन का संरक्षण" सम्बन्धी विषय

- 3105. श्री डी० बी० चन्द्र गौडा: क्या शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या वन्य जीवन के संरक्षण को विषय के रूप में स्कूलों ग्रीर कालेजों में लागू करने का कोई प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है; ग्रीर
 - (ख) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी ब्यौरा क्या है ?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) जी, नहीं एक विषय के रूप में नहीं, किन्तु स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर जीव विज्ञान के शिक्षण में इस विचार धारा पर जोर दिया गया है।

(ख) प्रश्न नहीं उठता ।

दिल्ली में प्राथमिक स्कूलों के श्रध्यापकों के लिए चयन ग्रेंड के पद

3106. श्री के० ए० राजन: क्या शिक्षा, समाज कल्याण ग्रीर संस्कृति मंती दिल्ली में प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए चयन ग्रेड के पदों के बारे में 3 मई, 1976 के ग्रतारांकित प्रश्न संख्या 3156 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या प्राथमिक स्कूलों के ग्रध्यापकों तथा दिल्ली के स्कूलों में मुख्याध्यापकों के लिए चयन ग्रेड लागू करने पर सितम्बर, 1971 से जो विषमता बनी, उसे समाप्त करने के लिए कोई कदम ग्रभी तक उठाया गया है?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र): यह मामला ग्रभी तक दिल्ली प्रशासन के विचाराधीन है।

बम्बई के निकट मछली पकड़ने की संभावनाओं का पता लगाने की परियोजना

3107. श्री पी० राजगोपाल नायडू: क्या कृषि श्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या बम्बई के निकट मछली पकड़ने की सम्भावनाग्रों का पता लगाने की कोई परियोजनाहै;
 - (ख) इसे कब शुरू किया गया था; ग्रीर
 - (ग) इसके क्या परिणाम निकले ?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला):

- (क) जीहां।
- (ख) यह परियोजना अन्तूबर, 1946 में शुरू की गई थी।
- (ग) इस परियोजना ने भारतीय तट के इर्द-गिर्द समुद्र के लगभग 3.2 लाख वर्ग किलो मीटर क्षेत्र के सतही मत्स्य संसाधनों का सर्वेक्षण करके सर्वेक्षणों के परिणाम बुलेटिनों के रूप में प्रकाशित किये हैं। इन बुलेटिनों में उपलब्ध सतही मत्स्य संसाधनों की क्वालिटीं, मात्रा तथा वितरण ग्रीर तट के इर्द-गिर्द 50 मीटर तक की गहराई के लिए मत्स्य की जलयानों की किस्म तथा उनके उपयोग के लिए गियर के संबंध में जानकारी दी गई है। दूर के क्षेत्रों में भी चुने हुए सर्वेक्षण किये गये हैं ग्रीर इनके परिणाम परियोजना द्वारा बुलेटिनों के रूप में प्रकाशित किये गये हैं।

इस परियोजना के पास तट से दूर तथा गहरे समुद्र में मछली पकड़ने से संबंधित मामलों पर मत्स्य की उद्योग को सलाह देने के लिए एक विस्तार स्कंध मौजूद है और यह समुद्री मत्स्यकी परिचालन के लिए 'सी टाइम' अर्हत सेवा प्रदान करती है।

दण्डकारण्य विकास प्राधिकरण को भूमि दिया जाना

3108. श्री पी० राजगोपाल नायडू: क्या निर्माण श्रौर श्रावास तथा पूर्ति श्रौर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या उड़ीसा सरकार दण्डकारण्य विकास प्राधिकरण को पोटेरु सिचाई परियोजन के क्षेत्र में 16,000 हेक्टेयर सिचित ग्रीर कृषि-योग्य भूमि देने के लिए सहमत हो गई है;

- (ख) क्या सरकार का भूतपूर्व पूर्वी पाकिस्तान से ग्राये हुए लोगों को वहां बसाने का विचार है; ग्रौर
 - (ग) पोटेर नदी पर सूरलीकोंडा में बांध की क्या लागत है ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) ग्रौर (ख). जी, हां।

(ग) 167.76 लाख रुपये।

राजघाट समाधि ग्रौर गांधी समृति समिति के लिए सहायता ग्रनुदान
3109. श्री पी० राजगोपाल नायडू: क्या निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास
मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार राजघाट समाधि और गांधी स्मृति समिति को सहायता अनुदान देती है; और
 - (ख) यदि हां, तो प्रतिवर्ष कितनी धनराशि दी जाती है ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) जी

(ख) राजधाट समाधि समिति:--1963-64 से रिकार्ड उपलब्ध हैं ग्रौर तदनुसार सूचना इस प्रकार है:--

वर्ष				 दिये गये सहायक अनुदान
				रुपये
1963-64				84,600
1964-65		•		152,700
1965-66				134,000
1966-67				212,500
1967-68				237,847
1968-69				269,862
1969-70	:.	•	•	380,413
1970-71		•	•	532,379
1971-72				500,000
1972-73				532,300
1973-74			• .	611,000
1974-75				700,000

वर्ष				दिये गये सहायक अनुदान
 1975-76				840,000
1976-77				902,000
	गांधी स्मृ	ति समिति	T	
1972-73		•	•	115,000
1973-74				500,000
1974-75			•	कुछ नहीं
1975-76	•		•	160,000
 1976-77		•	•	280,000

Indo-Iranian Talks for Rajasthan Canal

- *3110. Shri Meetha Lal Patel: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:
- (a) whether in the talks held recently in New Delhi between Iran and India, an offer of assistance has also been made by Iran for Rajasthan Canal; and
- (b) if so, the details thereof and the time by which Rajasthan Canal is likely to be completed?

The Minister of Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala):

(a) & (b). No talks have been held recently in New Delhi between Iran and India on the subject. However, the Engineering works on Rajasthan Canal Project are scheduled to be completed by 1983-84 subject to availability of funds.

बिहार में सिचाई योजनायें

- 3111. श्री सुखदेव प्रसाद वर्मा: क्या कृषि ग्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) केन्द्र सरकार द्वारा 1977-78 वर्ष के लिए मंजूर ऐसी कितनी प्रमुख तथा लघु सिंचाई योजनाएं हैं जो बिहार राज्य सरकार द्वारा क्रियान्वित नहीं की गई हैं; ग्रौर
- (ख) योजनाम्रों को कार्यान्वित न करने के क्या कारण हैं स्रौर इन योजनाम्रों की वर्तमान स्थिति क्या है ?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) ग्रौर (ख). योजना ग्रायोग द्वारा ग्रप्रैल, 1976 से जून, 1977 तक मंजूर की गई 11 बृहद् ग्रौर मध्यम सिंचाई स्कीमों में से बिहार सरकार ने 1977-78 की ग्रपनी वार्षिक योजना में 9 स्कीमों के लिए व्यवस्था की है परन्तु दो स्कीमों नामशः पंडखा जलाशय तथा ग्रोरनी जलाशय के कार्यान्वयन के लिए कोई व्यवस्था नहीं की है।

लघु सिचाई स्कीमों को स्वीकृति देना केन्द्रीय सरकार के काय-क्षेत्र के ब्रन्तर्गत नहीं ब्राता।

दिल्ली विकास प्राधिकरण के फ्लैटों के आवंटन के लिए विशेष पंजीकरण योजना

- 3112. श्री सुखदेव प्रसाद वर्मा: क्या निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) दिल्ली विकास प्राधिकरण के फ्लैट मध्य ग्राय वर्ग तथा निम्न ग्राय वर्ग को ग्रावंटित करने के लिए निकाली गई विशेष पंजीकरण योजना में दिल्ली दिकास प्राधिकरण के पास कितने पंजीकृत ग्रावंदन पत्न फ्लैट ग्राबंटित किये जाने के लिए शेष हैं; ग्रीप
 - (ख) इन लोगों को कब तक फ्लैट दे दिये जाने की ग्राशा है?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) ग्रनुसूचित जाति ग्रौर ग्रनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों के लिए बनाई गई 1973 की विशेष पंजीकरण योजना के ग्रन्तर्गत ग्रावंटन की प्रतीक्षा कर रहे पंजीकृत व्यक्तियों की संख्या इस प्रकार है:--

मध्यम ग्राय वर्ग

58

निम्न ग्राय वर्ग

386

(ख) लगभग एक वर्ष में।

दिल्ली विकास प्राधिकररण के प्लाटों की नीलामी

- 3113. श्री सुखदेवप्रसाद वर्मा: क्या निर्माण ग्रीर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रीर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या सरकार मध्यम ग्राय वर्ग तथा निम्न ग्राय वर्ग के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण के प्लाटों को नीलाम करने की वर्तमान नीति त्यागने पर विचार कर रही है; ग्रीर
 - (ख) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं ?

निर्माण श्रौर स्रावास तथा पित श्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) निम्न श्रीय वर्ग तथा मध्यम स्राय वर्ग के लिए रिहायशी प्लाटों का ग्रावंटन केवल लाटरी द्वारा किया जाता है न कि नीलामी द्वारा ।

(ख) प्रश्न ही नहीं उठता।

Central Research Centre on Groundnut in Gujarat

- 3114 Shri Dharamsinhohai Patel: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:
- (a) whether Government propose to set up a Research centre in Gujarat with a view to increase the production of groundnut and if so, the location thereof and when it is likely to be set up;
 - (b) the varieties of groundnut produced in the country; and
- (c) whether seeds of a new variety of groundnut have been produced during the last three years, and if so, the kind thereof?

The Minister of Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala)

- (a) A Research Centre under the All India Oilseeds Improvement Project of the improvement of groundnut has been already located at Junagadh in Gujarat. This has been functioning from 1967.
 - (b) A list of varieties developed in the country is enclosed.
 - (c) The following varieties have been released:
 - 1. M-13
 - 2. TMV—10

STATEMENT

Varieties of Groundnut produced in the Country

- Kadiri I (A.H. 288)
- 2. Early Runner
- 3. Junagadh-11.
- 4. A.K. 10-.
- 5. A.K. 12-24.
- 6. K.G. 61-240.
- 7. Kopargaon 1.
- 8. Kopargaon 3.
- 9. Improved Spanish
- 10. Improved small Japan
- 11. Faizpur 1-5.
- 12. Karad 4-11.
- 13. N.G. 868.
- 14. Trombay Groundnut 1 to 18.
- 15. H.G. 7.
- 16. H.G. 8.4
- 17. H.G. 9.
- 18. H.G. 10.
- 19. S. 206.
- 20. S. 230.
- 21. TMV 1.
- 22. TMV 2.
- 23. TMV 3.
- 24. TMV 4.
- 25. TMV 5.
- 26. TMV 6.
- 27. TMV 7.

- 28. TMV 8.
- 29. TMV 9.
- 30. TMV 10.
- 31. Pollachi-1.
- 32. Pollachi-2.
- 33. Punjab Groundnut No. 1.
- 34. Mungphali 145.
- 35. C. 501.
- 36. C. 148.
- 37. Type 28.
- 38. Type 32.
- 39. Type 64.
- 40. Type 99.

पिक्चम बंगाल में लघु सिचाई के लिए केन्द्रीय सहायता

- 3115. श्री ज्योतिर्मय बसु: क्या कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) केन्द्रीय सरकार ने पश्चिम बंगाल में लघु सिंचाई सुविधाओं की व्यवस्था करने हेतु वर्ष 1971-77 के दौरान कुल कितनी राशि रखी,
 - (ख) उस राज्य के लिए लघु सिंचाई हेत् प्रति वर्ष कितनी राशि रखी गई; ग्रौर
 - (ग) इसके क्या परिणाम निकले ?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) सिंचाई राज्यों का विषय है ग्रौर सिंचाई योजनाग्रों के लिए धन की व्यवस्था राज्यों की योजना में की जाती है । 1971-72 से 1976-77 की ग्रविध के लिए पश्चिम बंगाल राज्य की योजना में सिंचाई के लिये लगभग 86 करोड़ रुपये के परिव्यय की व्यवस्था की गई है । इसके ग्रतिरिक्त, राज्य की योजना की सीमा से ग्रिधक, इस ग्रविध के दौरान नीचे दी गई केन्द्रीय सहायता निर्मुक्त की गई है:—

वर्ष		धनरा	शि उद्देश्य		
				(करोड़ रुपा	ए)
1973-74	•	7.20	पांचवीं योजना के लिये ग्रग्रिम कार्यवाही सिंचाई योजनाभ्रों के लिए ।	के ग्रंतर्गत	लघु
1975-76		1.00	कांगसबती सिंचाई परियोजना के लिए		
1976-77		0.50	नगरतंबता सिचाइ पारयाजना के लिए		

(ख) 1971-72 से 1976-77 तक की अवधि के दौरान पश्चिम बंगाल राज्य की योजना में लघु सिंचाई के लिए निम्नलिखित राशि की वार्षिक व्यवस्था की गई है :---

वर्ष				स्वीकृत परिव्यय (करोड़ रुपए)
1971-72	•			4.50
1972-73			•	5,88
1973-74				5.15
1974-75				6.40
1975-76				6.50
1976-77				13.50

⁽ग) इस ग्रवधि के दौरान चालू की गई सिंचाई योजनाग्रों से सम्भवतः लगभग 6 लाख हैक्टयर क्षेत्र की ग्रतिरिक्त सिंचाई क्षमता पैदा हुई है ।

पालियामेंट हाउस ग्रनेक्स के निर्माण में हुग्रा व्यय

3116. श्री ज्योतिर्मय बसु : क्या निर्माण श्रीर ग्रावास तथा पूर्ति श्रीर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) पार्लियामेंट हाउस अनेक्स के निर्माण में कुल कितना व्यय हुआ है ;
- (ख) इस भवन के निर्माण के ग्रारम्भ होने के समय से ग्रब तक वर्षवार उत्तरोत्तर कितना व्यय हुग्रा है ; ग्रौर
- (ग) इस भवन में फर्नीचर लगाने, वातानुकूलित करने, बिजली लगाने, लान ग्रादि बनाने में हुए व्यय का ब्यौरा क्या है तथा प्रत्येक मद पर उत्तरोत्तर वर्षवार कितना व्यय हुग्रा है ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) मार्च, 1977 के ग्रन्त तक निर्धारित व्यय 3,73,29,506 रुपये हैं (इसमें विभागीय प्रभार शामिल है) कुछ बिल ग्रभी भी बकाया है । इस कार्य पर कुल 3,75,00,000 रु० (विभागीय प्रभारों सहित) खर्च होने की ग्राशा है ।

- (ख) विवरण—i के ब्रनुसार ।
- (ग) विवरण—ii के ग्रनुसार।

विवरण-1
भवन का निर्माण ग्रारम्भ होने से लेकर वर्षवार उत्तरोत्तर व्यय

बागवानी	विद्युत	सिविल			वर्ष
₹o	₹०	₹०			
-		36,443	,	•	1968-69
		14,68,631	,		1969-70
		45,70,219			1970-71
	3,33,071	85,37,451			1971-72
	22, 12, 354	1,08,62,715			1972-73
8,238	62,40,302	1,68,31,785			1973-74
1,22,742	87,20,964	1,93,85,280			1974-75
2,60,619·	1,09,38,399	2,48,99,475			1975-76
2.71,144	1,12,60,292	2,57,98,070			1976-77

विवरण-2

साज सामान, वातानुकूलन, बिजली के काम ग्रौर लानों की व्यवस्था करने पर किया गया श्रलग ग्रलग व्यय तथा इन प्रत्येक मदों पर हुग्रा उत्तरोत्तर वार्षिक व्यय

वर्ष	 साज-सामान	वातानुकूलन	बिजली का काम	बागवानी
	 ₹०	रु०	₹0	₹0
1971-72	- .	-	3, 3 3, 0 7 1	
,1972-73		16,07,214	6,05,140	
1973-74		30,13,609	32,27,293	8,238
1974-75		40,97,359	46,23,605	1,22,742
1975-76		45,38,945	63,99,454	2,60,619
1976-77	23,29,846*	45,98,153	66,62,133	2,71,144

^{*1973-74} से साज-सामान पर कुल व्यय 23,29,846 रु० है । सिविल कार्यों के व्यय का हिसाब भवन व साज-समान दोनों को मिलाकर लगाया जाता है । ग्रतः भवन निर्माण कार्य तथा साज सामान के लिए वर्षवार ग्रलग ग्रांकड़े नहीं दिए जा सकते ।

संसदीय सौघ को वातानुकूलित बनाना

- 3117. श्री ज्योतिमंय बसु: क्या निर्माण श्रीर श्रावास तथा पूर्ति श्रीर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
 - (क) क्या संसदीय सौध की पूरी इमारत के एक स्थान से वातानुकूलन की पहले योजना थी;

- (ख) यदि हां, तो इस इमारत के वातानुकूलन के लिए उक्त योजना को कार्यान्वित करने हेत् क्या उपाय किए गए थे ;
 - (ग) इस इमारत की उपरी मंजिलों को वातानुकृतित न करने के क्या कारण हैं ; ग्रौर
 - (घ) क्या सरकार का उन मंजिलों को एक स्थान से वातानुकूलित करने का विचार है ? निर्माण और आवास तथा पूर्ति और पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बख्त): (क) जी नहीं।
 - (ख) प्रश्न ही नहीं उठता ।
- (ग) मंजूरी दी गई वातानुकूलन कार्य का विस्तार प्रारम्भ में बेसमेंट, भूतल तथा प्रथम मंजिल तक ही सीमित था और इन्हें केन्द्रीय रूप से वातानुकुलित किया गया ।
- (घ) शेष भाग के वतानुकूलन के लिए के० लो० नि० वि० के मुख्य इंजीनियर (विद्युत) द्वारा 39.71 लाख रुपये के अनुमान का एक प्रस्ताव सरकार को मंजूरी के लिए भेज दिया गया है । यह विचाराधीन है ।

'वेक्यूम पान प्रोसेस' से चीनी बनाने के कारखाने

- 3118. श्री ज्योतिर्मय बसु : क्या कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) वर्ष 1971 से ग्रारम्भ की गई "वेक्य्म पान प्रोसेस" से चीनी बनाने के कारखानों की संख्या कितनी है;
- (ख) प्रत्येक राज्य में ऐसे कारखानों की गैर-सरकारी, सरकारी एवं सहकारी क्षेत्रों में ग्रलग-ग्रलग संख्या कितनी है; ग्रीर
- (ग) इन कारखानों में से प्रत्येक की ग्रिधिकतम उत्पादन क्षमता क्या है ग्रौर प्रत्येक का वास्तविक उत्पादन कितना है ?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) 59।

(ख) 59 फैक्ट्रियों में से 47 फैक्ट्रियां सहकारी क्षेत्र में, 6 फैक्ट्रियां सिर्वजितक क्षेत्र में ग्रीर 6 ज्वाइंट स्टाक फैक्ट्रियां हैं।

राज्यवार आंकड़े परिशिष्ट 1 में दिए गए हैं [ग्रन्थालय में रखा गया। देखिये संख्या एल० टी० $667^{1}77$]।

 (η) सूचना परिशिष्ट—2 में दी जाती है । [ग्रंथालय में रखा गया। देखिये संख्या एल० टी० 667/77] ।

इवेत ऋान्ति

- 3119. श्री रामानन्द तिवारी: नया कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
 - (क) क्या 'देश में श्वेत कांति' के लिए सरकार का कोई समयबद्ध कार्यक्रम है; ग्रौर
 - (ख) यदि हां, तो उसके मुख्य तथ्य क्या हैं?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला) : (क) जी हां।

(ख) 1973-74 में 232 लाख मीटरी टन के ग्राधार स्तर से दूध का उत्पादन पांचवीं योजना के ग्रन्त तक 286 लाख मीटरी टन तक बढ़ाने की योजना है ।

राज्य सरकारों को इमारतों के नक्शे पास करने संबधी मार्गदर्शी निर्देश

- 3120. श्री रामानन्द तिवारी: क्या निर्माण ग्रीर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रीर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या केन्द्र सरकार ने कानून के अन्तर्गत नियत सीमा से अधिक खाली भूमि पर इमारतों के नक्शे पास करने के बारे में राज्य सरकारों को कोई मार्गदर्शी निर्देश जारी किए हैं; ग्रीर
 - (ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है ?

निर्माण और स्नावास तथा पूर्ति स्नौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बख्त): (क) तथा (ख) जी हां; निर्माण स्नौर स्नावास मंत्रालय के दिनांक 31-12-1976 के परिपत्न सं० 1/50~76-यू० सी० यू० के साथ जारी निर्देशनों की एक प्रति संलग्न है। (ग्रंथालय में रखा गया। देखिये संख्या एल० टी० 668/77)।

कुलाची हंसराज माडल स्कूल, श्रशोक विहार, नई दिल्ली को प्लाट का श्रावंटन

- 3121. श्री दुर्गाचन्द: क्या शिक्षा, समाज् कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध सिमिति, नई दिल्ली ने दिल्ली विकास प्रधिकरण से कुलाची हंसराज माडल स्कूल, अशोक विहार, नई दिल्ली के साथ संलग्न प्लाट के आवंटन हेतु अनुरोध किया है;
 - (ख) यदि हां, तो उक्त समिति की मुख्य मांग क्या है ;
 - (ग) उक्त स्कूल में कितने छात हैं ग्रौर स्कूल भवन की भूमि का क्षेत्रफल कितना है ; ग्रौर
- (घ) क्या सरकार ने स्कूल भवन के साथ वाला प्लाट स्कूल को ग्रावंटित करने का निर्णय किया है यदि हां, तो तत्सम्बन्धी तथ्य क्या है ?

शिक्षा, समाज कल्याण और संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) जी, हां।

- (ख) सिमति की मुख्य मांग लगभग 3 एकड़ ग्रातिरिक्त भूमि के न्त्रावंटन के बारे में है।
- (ग) स्कूल के छात्रों की संख्या 2215 बताई गई है ग्रौर स्कूल के भवन की भूमि का क्षेत्रफल 1.46 एकड़ है।
 - (व) जी, नहीं।

नर्मदा सिचाई परियोजनाम्रों की प्रगति

- 3122. श्री श्रहमद एम० पटेल: क्या कृषि श्रीर सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) नर्मदा जल के संदर्भ में मंजूर की गई छोटी श्रौर बड़ी सिंचाई परियोजनाश्रों का मुख्य ब्यौरा क्या है ;

- (ख) क्या इन परियोजनाम्रों पर कार्य स्नारम्भ हो गया है ; स्रौर
- (ग) यदि हां, तो क्या प्रगति हुई है ?

कृषि और सिंचाई मंत्री (श्री मुरजीत सिंह बरनाला): (क) नर्मदा जल विवाद के सम्बन्ध में नर्मदा जल विवाद न्यायाधिकरण का फैसला हो जाने तक ग्रौर न्यायाधिकरण के समक्ष पक्ष राज्यों के दावों पर प्रतिक्ल प्रभाव डाले बिना, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र ग्रौर राजस्थान के पक्ष राज्यों के दीच मार्च, 1975 में यह सहमित हुई थी कि भारत सरकार द्वारा परि-योजनाग्रों की सामान्य समीक्षा किए जाने ग्रौर मंजूरी दिए जाने पर गुजरात करजन, सुखी, हिरेन ग्रौर रामी परियोजनाग्रों का ग्रौर मध्य प्रदेश कोलार, बिचिया, सुक्ता तथा बिठुग्रा-लितया परियोजनाकों का निर्माण शुरू कर सकता है। योजना ग्रायोग द्वारा गुजरात ग्रौर मध्य प्रदेश की ग्रब तक मंजूर की गई परियोजनाग्रों का स्थूल व्यौरा नीचे की सारणी में दिया गया है:——

परियोजना	का नाम	Г		मंजूर की गई ग्रनुमानित लागत (लाख हपए)		
गुजरात :						
रामी				61.00	1.323	
सुखी				2311.00	21.25	
कर ज न		•	•	3720.00	61.97	
मध्य प्रदेश :						
बिचिया				124.00	2.00	
सुक्ता				493.00	19.00	

इसके ग्रलावा, नर्बदा बेसिन में मध्य प्रदेश की निम्नलिखित दो वृहद परियोजनायें नर्मदा जल-विवाद न्यायाधिकरण के स्थापना से पहले योजना ग्रायोग द्वारा मंजूर की गई थों :---

परियोज	ाना का	नाम		ग्रनुमानित लागत (लाख रुपए)	लाभ (हजार हैक्टेयर)
तवा बर्ना				7928.00 1297.00	332.00 63.20

⁽ख) ग्रौर (ग). यद्यपि, गुजरात की सुखी ग्रौर करजन परियोजनाग्रों पर निर्माण-कार्य गुरू नहीं किया गया है, रामी सिंचाई परियोजना के लिए मिट्टी का बांध बनाने का कार्य किया जा रहा है । रामी परियोजना के पांचवीं योजना के ग्रन्त तक पूर्ण हो जाने की सम्भा-

वना है । बिछुग्रा ग्रौर सुक्ता परियोजनाग्रों का निर्माण-कार्य ग्रभी हाल ही में शुरू किया गया है ।

तवाः बंध का निर्माण-कार्य शिखर (क्रेस्ट) तक पूरा हो गया है ग्रीर ग्राशा है कि उमड़ मार्ग (स्पिल-वे) फाटक ग्रगले साल तक लग जायेंगे। नहर प्रणाली के निर्माण-कार्य प्रौढ़ा-वस्था में है।

वर्ना: निर्माण-कार्य प्रौढ़ावस्था में है । ग्राशा है कि उमड़-मार्ग पुल कें फाटक तथा 4 स्पैन लगाने का काम जुलाई, 1977 के ग्रन्त तक पूरा हो जाएगा ग्रौर सारी परियोजना 1977-78 तक पूरी हो जाएगी ।

ग्रनाज का ग्रायात

3123. श्री एम० रामगोपाल रेड्डी: श्री सी० के० चन्द्रप्पन: श्री एस० ग्रार० दामाणी:

क्या कृषि स्रोर सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार का चालू वर्ष में खाद्यान्नों का स्रायात करने का विचार है ;
- (ख) यदि हां, तो कितनी मात्रा में खाद्यान्न का स्रायात करने का प्रस्ताव है स्रौर इस बारे में किन देशों से बातचीत की जा रही है ; स्रौर
 - (ग) स्रायात के क्या कारण है ?

कृषि श्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) से (ग). स्टाक की स्थिति सुगम होने के संदर्भ में सरकार का चालू वर्ष के दौरान खाद्यान्नों का श्रायात करने का इरादा नहीं है। तथापि, योरोपीय श्राधिक समुदाय श्रौर बेल्जियम से उनके 1975-76 खाद्य सहायता कार्यक्रम के प्रति सहायता के रूप में लगभग 1.8 लाख मीटरी टन गेहू, जो कि पिछले वर्ष सप्लाई नहीं किया जा सका, का चालू वर्ष के दौरान लदान होने श्रौर प्राप्त होने की सम्भावना है।

दिल्ली विकास प्राधिकरण में पंजीकृत व्यक्तियों के नाम

- 3124 श्री शंकरसिंह जी बाघेला: क्या निर्माण ग्रीर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रीर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) दिल्ली विकास प्राधिकरण में फ्लेंटों तथा भूमि के ब्लाटों के ग्रावंटन के लिए विभिन्न श्रेणियों ग्रर्थात निम्न, मध्यम तथा उच्च ग्राय वर्ग में कितने लोगों का नाम पंजीकृत है;
- (ख) विभिन्न श्रेणियों में पहले व्यक्ति का नाम दिल्ली विकास प्राधिकरण में कब से पंजीकृत हैं ग्रौर उसे फ्लैट ग्रथवा प्लाट न दिये जाने के क्या कारण है;
- (ग) पंजीकरण के समय फ्लैंट का मूल्य क्या था विभिन्न श्रेणियों के फ्लैंटों के मूल्य इस समय क्या है ग्रौर किन विशेष कारणों से इतने ऊंचे मूल्य निर्धारित किये गये ; ग्रौर

(घ) शीघ्र ही फ्लैट ग्रथवा प्लाट ग्रावंटित करके पंजीकृत व्यक्तियों की सूची निप-टाने के लिए क्या विशेष कदम उठाने का विचार है ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) प्लाटों के ग्रावंटन के लिए विकास प्राधिकरण के पास विभिन्न वर्गों के ग्रन्तर्गत पंजीकृत व्यक्तियों की संख्या इस प्रकार है:—

मध्यम ग्राय वर्ग	23868
निम्न स्राय वर्ग	20866
जनता .	19273
	64007

(ख) बने बनाये फ्लैटों के ग्रावंटन के लिए पहली योजना वर्ष 1969-70 में ग्रारम्भ की गई थी ।

पुराने पंजीकृत व्यक्तियों को फ्लैटों का ग्रावंटन न करने के कारण, ग्रन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित है :--

- (i) फ्लैटों के ग्रावंटन के लिये डाली गई लाटरी में पंजीकृत व्यक्ति भाग्यशाली नहीं रहे हैं;
- (ii) कुछ मामलों में ग्रलाटमेंट इस कारण नहीं ली गई क्योंकि जिस क्षेट्र की पेशकश की गई है वह पंजीकृत व्यक्ति को पसंद नहीं ग्राई ।
- (ii) कुछ मामलों में ग्रलाटमेंट इस कारण लौटा दी गई वयोंकि मंजिल उनके पसंद नहीं थी ।
- (ग) प्रथम पंजीकरण के समय निम्न ग्राय वर्ग तथा मध्यम ग्राय वर्ग के फ्लैटों का घोषित किया गया सम्भावित मूल्य इस प्रकार था :--
 - (i) निम्न ग्राय वर्ग 12500 ह०—22000/- हपए
 - (ii) मध्यम ग्राय वर्ग . . 25000/- रु० तथा 30,000 रु० के बीच

निम्न स्राय वर्ग स्रौर मध्यम स्राय वर्ग फ्लैटों का मौजूदा मूल्य इस प्रकार है :--

- (i) निम्न ग्राय वर्ग . 44300 ह० ग्रीर 50400 ह० के बीच
- (ii) मध्यम ग्राय वर्ग . 61700 रु० से 79500 रु० के बीच

मूल्यों में वृद्धि श्रमिकों की मजदूरी, भवन सामग्री की लागत और भूमि की लागत में वृद्धि के कारण हुई हैं। (घ) दिल्ली विकास प्राधिकरण ने यह निर्णय किया है कि उन ध्यक्तियों को प्राथक्मिकता तथा वरीयता दी जाएगी जिन्होंने प्रथम तथा दितीय पंजीकरण योजना में स्रपना पंजीकरण करवाया है। स्रतः यह स्राशा है कि पिछली सूची एक वर्ष या उससे कुछ स्रधिक स्रविध के स्रन्दर समाप्त हो जाएगी।

राज्यों में निर्माणाधीन सिंचाई परियोजनायें

3125. श्री सी० के० चन्द्रप्पन: क्या कृषि ग्रीर सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या गत 25 वर्षों से राज्यों की बहुत सी सिचाई परियोजनायें निर्माणाधीन हैं;
- (ख) यदि हां, तो ये परियोजनायें कौन-कौन सी हैं ग्रौर उनके निर्माण किस स्थिति में हैं;
- (ग) क्या सरकार ने इन परियोजनाओं को किसी निर्धारित समय के अन्दर पूरा करने का कोई निर्णय किया है; और
- (घ) वर्ष 1977 में केरल में किन नई सिचाई परियोजनाम्रों को शुरू किया जायेगा स्रौर वर्ष 1980 तक किन्हें पूरा कर लिया जाएगा ?

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) से (ग). योजना-पूर्व ग्रथवा प्रथम योजना ग्रविध में हाथ में ली गई निम्नलिखित परियोजनाग्रों पर कार्य चल रहा है --

- 1. कोसी बराज तथा पूर्वी कोसी नहर (बिहार)
- 2. माही चरण--एक (गुजरात)
- 3. ककड़ापार (गुजरात)
- 4. भद्रा (कर्नाटक)
- 5. चम्बल चरण--दो (मध्य प्रदेश तथा राजस्थान)

इन परियोजनाम्रों के बारे में स्थिति नीचे दी गई है --

कोसी परियोजना: बराज पूरा हो गया है। 4.34 लाख हैक्टेयर की म्रन्तिम शक्यता की तुलना में लगभग 3.0 लाख हैक्टेयर सिंचाई शक्यता सृजित की जा चुकी है। नहर प्रणाली पर निर्माण-कार्य चल रहे हैं।

माही एवं ककड़ापार : ये परियोजनाएं काफी हद तक पूरी हो गई हैं। माही पर कडाना बांध तथा तापी पर उकई बांध को निर्माण होने के बाद, नहर प्रणालियों में अपेक्षित ग्रतिरिक्त निर्माण-कार्य किये जा रहे हैं।

भद्राः यह परियोजना काफी हद तक पूरी हो गई हैं। इस परियोजना के ग्राकार में कुछ ग्रितिरिक्त कार्यों को शामिल कर लिया गया है जिनमें कमान क्षेत्र में जलाशयों का निर्माण करना शामिल है। इन पर कार्य चल रहा है।

चम्बलः यह परियोजना काफी हद तक पूरी हो गई है। बहरहाल, जल-जमाव एवं घासः पात उगने की समस्यात्रों के कारण ब्रावश्यक कुछ सुधार कार्य किये जा रहे हैं।

इन परियोजनात्रों को पांचवीं योजना के अन्त तक पूरा करने का प्रस्ताव है।

(घ) सात निर्माणाधीन बृहत् सिंचाई स्कीमों के ग्रितिरिक्त, केरल में वर्तमान वित्तीय वर्ष के दौरान निम्नलिखित 3 नई बृहत् ग्रौर 3 नई मध्यम सिंचाई स्कीमों को कार्यान्वित किया जाएगा।

बृ हत्

मध्यम

1. भ्वाध्पुझा

1. कारापुझा

2. चिमनी

2. ग्रटटापाडी

3. इदम त्यार

3. मीनाचिल

वर्तमान संकेतों के ग्रनुसार निम्नलिखित निर्माणाधीन परियोजनात्रों के 1980 तक पूर्ण होने की संभावना है:--

- 1. चिन्तुरपुझा
- 2. कुटिटयाडी

उपर्युक्त 6 स्कीमों में किसी के भी 1980 तक पूर्ण होने की संभावना नहीं है।

स्कूलों में बीच में शिक्षा छोड़ने वाले बच्चे

3126 श्री सी० के० चन्द्रप्पन: क्या शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) गत तीन वर्षों में 5-16 वर्ष की आयु वर्ग के कितने स्कूल जाने वाले बालकों भीर बालिकाओं ने माध्यमिक शिक्षा पूरी की है;
- (ख) गत तीन वर्षों में स्कूलों से इसी भ्रायु वर्ग के कितने बालकों तथा बालिकाम्रों ने शिक्षा बीच में ही छोड़ दी है;
 - (ग) गत तीन वर्ष में कितने बालकों ने तकनीकी शिक्षा चुनी थी: ग्रौर
 - (घ) इनमें से कितनों ने उसे पूरा किया?

शिक्षा, समाज कल्याण तथा संस्कृति मंत्रो (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) यह मतालय स्कूल जाने वाले बच्चों के नामांकन संबंधी आंकड़े एकत्र करती है। उपलब्ध सूचना के अनुसार 1974–75, 1975–76 और 1976–77 के दौरान I-V कक्षाओं में (6--11 आयु वर्ग) कमशः 650.73; 663.55 और 684.79 लाख के लगभग बच्चे अध्ययन कर रहे थे। इस अविध के दौरान VI-VIII कक्षाओं में (11--14 आयु वर्ग) नामांकन संख्या कमशः155.63, 161.95 और 172.12 लाख थी।

(ख) पिछले तीन वर्षों की ग्रपेक्षित सूचना उपलब्ध नहीं है। तथापि कुछ समय पहले किये गये ग्रध्ययन के ग्रनुसार कक्षा I में नामांकित छात्रों में से केवल 40 प्रतिशत के लगभग कक्षा V में ग्रौर 25 प्रतिशत कक्षा VIII में पहुंचते हैं।

- (ग) उपलब्ध सूचना के अनुसार 1974-75, 1975-76 और 1976-77 के दौरान कमशः 47,291; 48,769 और 50,270 छात्र तकनीकी संस्थाओं के डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में दाखिल किये गये थे। तकनीकी तथा औद्योगिक पाठ्यक्रमों में 1970-71,1971-72,1972-73 के लिए दाखिला संख्या कमशः 103,958; 137,742 और 135,388 थी।
- (घ) 1974-75, 1975-76 ग्रौर 1976-77 के दौरान, ऋमशः 16,887; 20,141 ग्रौर 25,145 छात्रों ने तकनीकी डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरे किए। 1970-71, 1971-72 ग्रौर 1972-73 के लिए मा० प्रौ० सं० ग्रौर स्कूल स्तर की ग्रन्य संस्थाग्रों से उत्तीर्ण संख्या क्रमशः 27,346; 34,437 ग्रौर 33,750 थी।

पूर्व पाकिस्तान के विस्थापितों के लिये बृहत योजना

- 3127. श्री सौगत राय: क्या निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या सरकार का विचार पूर्व पाकिस्तान के विस्थापितों के लिए पिष्टिम बंगाल की पिछली सरकार द्वारा तैयार की गई श्रीर केन्द्रीय सरकार को वर्ष 1973 में प्रस्तुत की गई बृहत् योजना को पूरी तरह से लागू करने का है; श्रीर
 - (ख) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी ब्यौरा क्या है ?

निर्माण तथा ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) ग्रौर (ख). माननीय सदस्य का ध्यान श्री प्रिय रंजन दास मुंशी द्वारा 6-3-1975 को पूछे गये लोक सभा ग्रतारांकित प्रश्न संख्या 2544 के उत्तर की ग्रोर ग्राक्षित किया जाता है। जैसा कि उत्तर में बताया गया है, पश्चिमी बंगाल में पुनर्वास की ग्रविशिष्ट समस्याग्रों के विभिन्न पहलुग्रों का ग्रध्ययन करने के लिए सिचव, पुनर्वास विभाग की ग्रध्यक्षता में 2-7-75 को एक कार्यकारी-दल की स्थापना की गईथी। इस कार्यकारी-दल ने 10-3-76 को रिपोर्ट दे दी थी ग्रौर इसकी प्राय: सभी सिफारिशें सरकार द्वारा स्वीकार कर ली गई हैं जिनका व्यौरा नीचे दिया गया है:--

- (1) पांचवीं योजना में पहले से सम्मिलित तथा चालू पुनर्वास योजनाएं जारी रहनी चाहिए। ऐसी पांच योजनाएं हैं जिन पर लगभग 6 करोड़ रुपये व्यय होंगे।
- (2) लघु कृषक विकास एजेन्सी सीमान्त कृषक तथा कृषि श्रम योजनाम्रों के मधीन 9 जिलों में लगभग 3 लाख कृषक परिवारों के लिए 6 करोड़ रुपये [ऊपर(1) में दी गई राशि के म्रतिरिक्त] के म्रतिरिक्त संसाधन पांचवीं योजना में उपलब्ध किए जाने चाहिए।
- (3) रिपोर्ट में उल्लिखित विस्थापित व्यक्तियों को 1,008 कालोनियों के विकास के लिए अपेक्षित निधि उपलब्ध की जाएगी।
- (4) 31 दिसम्बर, 1950 से 25 मार्च, 1971 तक स्थापित की गई प्रवासी अनिध-वासियों को विशिष्ट कालोनियों का नियमन स्वीकार किया जाना चाहिए और ऐसे अनिधवासियों को भूमि के अधिकार व हक प्रदान किए जाने चाहिए (इससे 175 कालोनियों के 15 हजार परिवारों को लाभ पहुंचेगा)।

- (5) ऋण जैसे भूमि खरीदने, गैर-ग्रंशदायी गृह निर्माण, कृषि तथा लघु व्यवसाय के लिए दिये गये 'टाइप' ऋणों को माफी की योजना की ग्रोर ग्रंधिक उदार बनाया जाए ताकि यह सुनिश्चित किया जाये कि वे इन ऋणों के भार से पूर्णतया मुक्त हो जाएं। इसका ग्रंथ यह होगा कि 6.38 करोड़ रुपए की माफी ग्रौर इससे लगभग 2 लाख परिवारों को लाभ पहुंचेगा।
- (6) 337 गैर-तपेदिक शय्याम्प्रीं, 103 तपेदिक शय्याम्प्रीं म्रौर 2 चेस्ट बलीनिको पर होने वाले व्यय को पूरा करने तथा नये प्रवासियों को चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने के लिए 1.52 करोड रुपये के व्यय की व्यवस्था की जानी चाहिए।

भ्रन्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह में पुनर्वास कार्यक्रम

- 3128. श्री मनोरंजन भक्त: क्या निर्माण ग्रीर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रीर पुनर्वास मही यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या सरकार का ग्रण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह में कोई पुनर्वास कार्यक्रम है; यदि हां, तो तत्सम्बन्धी मुख्य प्रस्ताव क्या है;
- (ख) कोम्पबैल की खाड़ी में एक भूतपूर्व सैनिक को बसाने के लिए कुल कितना खर्च हुआ; और
 - (ग) अण्डमान में पूर्व बंगाल के एक प्रवासी परिवार को बसाने में कुल कितना खर्च हुआ ?

निर्माण और स्रावास तथा पूर्ति सौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) जी, हां। यह अनुमान था कि पांचवीं योजना के दौरान भूतपूर्व पूर्वी पाकिस्तान से स्राये प्रवासियों सौर श्री लका के प्रत्यावासियों (बराबर अनुपात में) के 2200 परिवारों को लिटिल अण्डमान में बसाया जाएगा सौर भूतपूर्व सैनिकों के 400 परिवारों को ग्रेट निकोबार में बसाया जाएगा। तथापि, भूमि उद्धार का कार्य लगभग 2 वर्ष के लिए स्थगित कर दिया गया था क्योंकि तत्कालीन प्रधान मंत्री ने चाहा था कि अण्डमान तथा निकोबार द्वीपों में आगे वन साफ करने के कार्य को हाथ में लेने से पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ द्वारा पारिस्थितिक सम्बन्धी पहलुओं की जांच की जानी चाहिए।

चालू वित्तीय वर्ष में लगभग 60 प्रवासी/प्रत्यावासी परिवारों के पुनर्वास के लिए लिटिल अण्डमान में 415 एकड़ भूमि तथा भूतपूर्व सैनिकों के 50 परिवारों के पुनर्वास के लिए ग्रेट-निकोबार में 525 एकड़ भूमि उद्धार के लिए दी गई है ।

(ख) ग्रौर (ग). चूंकि उनके पुनर्वास तथा इन्हें विभिन्न ग्राधारभूत सुख सुविधाएं प्रदान करने के लिए ग्रभी भी व्यय किया जा रहा है, इसलिए प्रति प्रवासी प्रत्यावासी तथा भूतपूर्व सैनिक परिवार पर किया गया व्यय बताना सम्भव नहीं है।

ग्रण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में शिक्षकों को सेलेवशन ग्रेड

- 3129. श्री मनोरंजन भक्तः क्या शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या सरकार ने कोठारी ग्रायोग की उस सिफारिश की पूरी तरह से कार्यान्वित किया है जिसमें ग्रण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के शिक्षकों को सेलैक्शन ग्रेड देने की व्यवस्था की गई

- है। यदि हां, तो ग्रण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में, वर्गवार, कितने पी० जी० टी०, जी० टी० टी० तथा वरिष्ठ शिक्षकों को सेलैक्शन ग्रेड दिए गए थे ; ग्रौर
- (ख) क्या कुछ पी॰ जी॰ टी॰, जी॰ टी॰ टी॰ तथा वरिष्ठ शिक्षकों को ग्रभी तक सेलैक्शन ग्रेड नहीं दिए गए है हालांकि वे इसके हकदार हैं; ग्रीर वर्गवार उनकी संख्या कितनी है ग्रीर इसके क्या कारण हैं ?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री (डा॰ प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) तथा (ख). ग्रेपेक्षित सूचना एकत्रित की जा रही है तथा उसे यथासमय सभा पटल पर रख दिया जाएगा।

"एनोमेलीज इन साइंटिस्ट इन्डक्झन्स इन टु ए० ग्रार० एस०" शीर्षक से प्रकाशित समाचार

3130. श्री बसन्त साठे: क्या कृषि ग्रीर सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार का ध्यान दिनांक 14 जून, 1977 के "द टाइम्स ग्राफ इंडिया" में "एनोमेलीज इन साइंटिस्ट इन्डक्शन्स इन टुए ग्रार एस" शीर्षक से प्रकाशित समाचार की ग्रोर दिलाया गया है ; ग्रीर
- (ख) यदि हां, तो उस में की गई विभिन्न टिप्पणियों पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है श्रौर इस बारे में क्या कार्यवाही की गई है, करने का विचार है ?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला) : (क) जी हां, श्रीमान्।

্(ভা) भारतीय कृषि ग्रनुसंधान परिषद् द्वारा निर्धारित क्रियाविधि के ग्रन्तर्गत, विभिन्न संस्थानों में कार्य करने वाले वर्तमान विज्ञानियों को कृषि ग्रनुसंधान सेवा में प्रवेश के लिए कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल द्वारा निर्धारित फार्म में अपना जीवन वृत्त तथा दूसरे विवरण देने अपेक्षित थे। चूंकि कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल द्वारा मांगी गई अधिकांश सूचनाएं भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के तत्कालीन निदेशक ने कुछ भिन्न रूप में पहले ही ग्रपने संस्थान के विज्ञानियों में प्राप्त कर ली थी, ग्रत: कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल ने, ग्रारम्भ में संस्थान में प्राप्त सूचना के ग्राधार पर, कृषि ग्रनु-संज्ञान संस्थान के विज्ञानियों के प्रवेश के लिए सहमित दी थी। बाद में यह पता चला कि कुछ मामलों में, निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा प्राप्त सूचना के श्राधार पर विज्ञानियों का प्रवेश कराना मण्डल के लिए सम्भव नहीं था। ग्रत: दिसम्बर, 1976 में यह निश्चय किया गया कि जो विज्ञानी ग्रारम्भिक चरण में प्रवेश नहीं पा सके उन्हें कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल द्वारा निर्धारित फार्न में ग्रयना जीवन-वृत्त दोबारा भर कर देना चाहिए। इस शर्त को पूरा करने वाले ग्रधिकांश विज्ञानी इस सेवा में 1-10-1975, जो कि सेवा के ख्रारम्भिक गठन की तारीख थी, से प्रविष्ट किये जा चु है हैं। जिन विज्ञानियों ने, ग्रब तक, निर्धारित फार्म में ग्रपना जीवनवृत्त पेश नहीं किया है, जैसे ही वे कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल द्वारा मांगी गई पूरी सूचना उपलब्ध करायेंगे, तभी प्रविष्ट कर दिया जायेगा । कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल, संघ लोक सेवा स्रायोग की कार्य प्रणाली के स्राधार पर काम करता है स्रौर स्रपनी सिकारिशों के स्राधार के विषय में भारतीय कृषि स्रनुसन्धान परिषद् को सूचित नहीं करता। भारतीय कृषि ग्रनुसंधान परिषद् के विज्ञानियों को कृषि ग्रनुसन्धान सेवा में प्रवेश सम्बन्धो सभो सिकारिशें कृषि तथा सिचाई मंत्री द्वारा स्वीकार कर ली गई है है जोकि परिषद् के ग्रध्यक्ष होने की हैसियत से इस सेवा के नियंत्रण करने वाले ग्रधिकारी है।

दिल्ली में फेन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों के लिए सरकारी स्रावास

3131. डा० वसन्त कुमार पंडित: क्या निर्माण और भ्रावास तथा पूर्ति और पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) दिल्लो में केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों की कुल संख्या कितनी है और उनमें से कितने क चारियों को सरकारी स्रावास दिये गए हैं ;
- (ख) कितने सरकारी कर्मचारियों के पास निजी मकान है ग्रौर हाल ही के तथा पहले के ग्रादेशों के ग्रनुसरण में कितने कर्मचारियों को सरकारी ग्रावास मिला है ; ग्रौर
- (ग) क्या सरकार निकट भविष्य में कोई योजना बनायेगी जिससे दिल्ली में दस वर्ष की सेवाविध हो जाने पर सरकारी कर्मचारी सरकारी ग्रावास पाने के हकदार हो जाएं ग्रीर यदि हां तो तत्संबंधी मुख्य बातें क्या है ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) दिल्ली नई दिल्ली में सामान्य पूल वास के लिए पात केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों की संख्या 1,00,/87 है। इनमें से 41,522 को मकान ग्रावटित किए जा चुके हैं।

- (ख) 1553 निजी मकान वाले कर्मचारी ग्रब सरकारी वास के दखल में हैं।
- (ग) ग्राने वाले 20 वर्षों के दौरान, दिल्ली, नई दिल्ली में 80% पात्र कर्मचारियों को वास उपलब्ध कराने का सरकार का इरादा है। दिल्ली में प्रत्येक वर्ष 1700 मकान **ष**नाने का एक भावी प्लान तैयार किया गया है बशर्ते कि इस कार्य को पूरा करने के लिए निधियां उपलब्ध हों। 31 मार्च 1977 को 3,713 क्वार्टर निर्माणाधीन है, 1977-78 के दौरान 3,098 क्वार्टरों का निर्माण ग्रारम्भ करने का प्रस्ताव है।

संसदीय सौध

- 3132. डा० वसन्त कुमार पंडित: क्या निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) संसदीय सौध के निर्माण पर कुल कितनी लागत ब्राई है ब्रौर उसे बनाने का निर्णय किसने लिया था ;
- (ख) यह भवन बनकर कब पूरा हुम्रा था, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग को कब सौपा गया था ग्रौर उसके रख रखाव पर प्रति वर्ष कितना खर्च ग्राता है।
- (ग) क्या सरकार को इसके निर्माण में हुए गबन के बारे में शिकायतें मिली है ग्रौर यदि हां तो क्या इस बारे में जांच कराई गई है ग्रौर शिकायतें सही पाई गई हैं ?
- (घ) क्या यह भी सच है कि इस भवन की बेसमेंट से पहली मंजिल तक की मंजिलों में वातानुकूलन की व्यवस्था है ग्रौर शेष मंजिलों को जिन में कर्मचारी बैठते हैं, वातानुकूलित नहीं किया गया है, ग्रौर
- (ङ) पूरी इमारत कब तक वातानुकूलित बनाने का प्रस्ताव है ग्रौर यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं ?

निर्माण और आवास तथा पूर्ति और पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क)मार्च 1977 के अन्त तक निर्धारित व्यय 3,73,29,506 रुपये है। (इसमें विभागीय प्रभार शामिल है)। तथापि, कुछ बिल अभी भी बकाया है। इस कार्य पर कुल 3,75,00,000 रुपये खर्च होने की आशा है। लोक सभा सचिवालय ने अपने पत्न संख्या 9/1/68—डब्ल्यू० जी० दिनांक 19-8-74 के द्वारा इस राशि की स्वीकृति दी थी।

(ख) यह भवन 15 दिसम्बर, 1975 को तैयार हो गया था। इसके अनुरक्षण पर वार्षिकः व्यय निम्नांकित है:---

सिविल

1,38,800 रुपये

बागबानी

70,000 रुपये

बिजली

1,82,706 रुपये

- (ग) जी, नहीं।
- (घ) जी, हां।

ز٠

(ङ) केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के मुख्य इंजीनियर (बिजली ने भवन के ऊपरी भाग को वातानुकूलित करने के लिए 39.71 लाख रुपये के ग्रतिरिक्त ग्रनुमान सरकार को स्वीकृति के लिए भेजा है। इसकी जांच की जा रही है।

Hire-Purchase Price of Slum Tenements

- 3133. Shri Mahi Lal: Will the Minister of Works and Housing and Supply and Rehabilitation be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 1189 on the 23rd August, 1976 regarding price of slum ten ments and state:
- (a) whether the DDA wing has since taken a decision in regard to the hire-purchase price of slum tenements;
- (b) if so, the prices fixed colony-wise, particularly the price fixed for Ranjit Nagar Colony; and;
- (c) if the reply to part (a) be in the negative, the reasons for delay when a decision to allot these tenements on hire-purchase basis has already been taken?

The Minister of Works and Housing and Supply and Rehabilitation (Shri Sikander Bakht):

- (a) Yes, Sir, in some cases.
- (b) Price has not yet been fixed for Ranjit Nagar Colony. Information is being collected for those colonies where the prices have been fixed.
 - (c) Fixation of price depends on various factors and is in progress for other colonies.

चावल की भूसी से खाद्य तेल का उत्पादन

- 3134. श्री जी० वाई० कृष्णन्: क्या कृषि ग्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि: ृ
- (क) क्या चावल की भूसी से भारत में खाद्य ग्रेड के तेल के उत्पादन को बढ़ावा देने संबंधी योजना के लिए कोई प्रस्ताव भारतीय खाद्य निगम के विचाराधीन है ;

- (ख) क्या यह भी सच है कि मैसूर स्थित केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान ने चावल की भूसी को बदब्दार होने से रोकने के लिए एक प्रक्रिया का विकास किया है; और
- (ग) यदि हां, तो क्या सरकार उसके कार्यक्रम से सन्तुष्ट है ग्रौर यदि हां, तो इस बारे में सरकार का क्या ग्रौर कार्यवाही करने का प्रस्ताव है ?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) जी हां।

- (ख) जी हां।
- (ग) राइस ब्रान स्टेबलाइजर स्थापित कर, भारतीय खा । निगम ग्रपने सेम्बनारकोइल सालवेंट प्लांट में कम फी फैटी एसिड तत्व से ब्रान ग्रायल का उत्पादन करने में सफल हुग्रा है। यह तेल वनस्पति उद्योग की प्रीमियम मूल्य पर बेचा गया था जोकि ग्रौद्योगिक ग्रेड ग्रायल के मूल्य के तुलनात्मक था। इस विधि को बढ़ावा देने के लिए ग्रौर ग्रानुसंधान विकास तथा विस्तार संबंधी कार्य करने की योजना बनाई जा रही है।

New Policy Regarding Allotment of Transferred DDA Flats

- 3135. Shri Ram Naresh Kushwaha: Will the Minister of Works and Housing and Supply and Rehabilitation be pleased to state:
- (a) whether after allotment of the DDA Flats, the allottees compelled with circumstances have gone out of Delhi by transferring the flats in the name of other persons;
- (b) if so, whether Government are making arrangements to allot the flats transferred in such circumstances to the persons residing there at present by laying down a new policy; and
 - (c) if not, the reasons therefor?
- The Minister of Works and Housing and Supply and Rehabilitation (Shri Sikander Bakht):

 (a) Under the D.D.A. Rules, the transfer of DDA's built-up flats to the family members of the original allottee is permissible, and when the allottee has no family of his own, to the legal heir as defined in the Hindu Succession Act, 1956. The D.D.A. has permitted transfer in such cases.
 - (b) No, sir.
 - (c) Government do not consider it necessary to depart from the existing policy.

राजस्थान नहर परियोजना

- 3136. श्री सतीश श्रग्रवाल: क्या कृषि ग्रीर सिचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) राजस्थान नहर परियोजना कब तक पूरी हो जाएगी ग्रौर इसकी कुल ग्रनुमानित लागत कितनी होगी ;
 - (ख) इसकी धीमी प्रगति के क्या कारण हैं ;
- (ग) क्या फांस ग्रथवा ईरान की सरकारों ने इस परियोजना पर धन लगाने का प्रस्ताव किया था ; यदि हां, तो इन प्रस्तावों का क्या परिणाम निकला है ; ग्रौर
- (घ) क्या सरकार को इंजीनियरों तथा ठेकेदारों द्वारा इस परियोजना की धनराणि का घोर दूरुपयोग करने की जानकारी है ग्रौर क्या सरकार का विचार उसकी जांच कराने का है ?

कृषि ग्रौर सिचाई मंत्री (श्री मुरजीत सिंह बरनाला): (क) राजस्थान नहर परियोजना के इंजीनियरी निर्माण-कार्यों को, धनराशि उपलब्ध होने पर, 1983-84 तक पूरा करने का कार्यक्रम है। इस परियोजना की ग्रनुमानित लागत 1975 के मूल्यस्तर के ग्राधार पर 396 करोड़ रुपए है।

- (ख) साधनों की तंगी के कारण, प्रारम्भिक चरणों में इस परियोजना की प्रगति धीमी रही है। ग्रब स्थिति ऐसी नहीं है। चौथी पंचवर्षीय योजना से पहले की पांच वर्ष की ग्रवधि में हुए 4.6 करोड़ रुपए के ग्रौसत वार्षिक व्यय ग्रौर चौथी योजना के दौरान हुए लगभग 9.5 करोड़ रुपये के ग्रौसत वार्षिक व्यय की तुलना में पांचवीं योजना के पहले तीन वर्षों में वार्षिक व्यय लगभग 21 करोड़ रुपये हुग्रा ग्रौर चालू वर्ष के लिए 28 करोड़ रुपये का परिव्यय रखा गया है।
- (ग) इस परियोजना की वित्त-व्यवस्था के लिए फ्रांस सरकार से कोई प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुग्रा है। लेकिन, ईरान ने राजस्थान नहर परियोजना के चरण-दो के लिए सहायता देने में दिलचस्पी दिखाई है ग्रौर इस प्रस्ताव पर भारत ग्रौर ईरान के बीच विचार-विमर्श हो रहा है।
- (घ) राजस्थान सरकार ने सूचित किया है कि उन्हें इंजीनियरों या ठेकेदारों द्वारा इस परिस् योजना पर धन के घोर दुरुपयोग की कोई जानकारी नहीं है ।

राजस्थान नहर के जल का मार्ग बदलना

3137. श्री सतीश ग्रग्रवाल: क्या कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या सरकार को राजस्थान नहर परियोजना के जल का मार्ग बदलने ग्रौर उसे जैसलमेर जिले के रामगढ़ तक शहर के निर्धारित ग्रन्तिम छोर तक न पहुंचने के किसी प्रस्ताव की जानकारी है ;
- (ख) राजस्थान नहर के जल से उठाऊ सिचाई योजना को शुरू करने के लाभ क्या हैं ; ऐसी कितनी योजनास्रों पर कार्य हो रहा है स्रौर उनकी प्रगति क्या है ; स्रौर
- (ग) क्या सरकार के विशेषज्ञ इस जल के मार्ग बदलने की क्षमता से आश्वस्त हैं ; क्या इससे मरुस्थल में सिचाई की मूल योजना में विलम्ब होते हुए दोहरे प्रयास नहीं करने पडेंगे ?

कृषि ग्रीर सिचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): (क) से (ग) राष्ट्रीय कृषि ग्रायोग ने 1974 में रेगिस्तान विकास विषयक ग्रपंनी ग्रन्तरिम रिपोर्ट में ग्रपेक्षाकृत ग्रधिक घनी ग्राबादी (लगभग 10-40 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर) वाले ग्रौर विकसित समतल भूमि वाले 3.1 लाख हैक्टेयर क्षेत्र की ग्रावश्यकताग्रों को लिफ्ट सिंचाई द्वारा पूरा करने के लिए राजस्थान नहर परियोजना के चरण-दो को फिर से तैयार करने का सुझाव दिया था तािक ग्रधिक से ग्रधिक लोगों को बार-बार पड़ने वाले सुखे से होने वाले विनाश से बचाया जा सके ग्रौर 'ग्रेक्टि।" प्रवाह द्वारा रोवित ग्रौर विरल ग्रावादी वाले (लगभग 3 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर) 2.10 लाख हैक्टेयर के ग्रनुपयुक्त क्षेत्र को चरण-दो के कमान क्षेत्र से निकाल दिया जाए। इस सुझाव पर विचार करने के लिए राजस्थान सरकार ने विशेषज्ञों की एक समिति गठित की थी ग्रौर परियोजना के लिए एक विस्तृत (कार्यप्रणाली) एप्रोच रिपोर्ट तैयार कराई थी। जल ग्रौर विद्युत विकास सलाहकारी सेवाएं लि० (वापकोस) ने, जिसको उपर्युक्त समिति के मार्ग दर्शन में सर्वेक्षण कार्य करने एवं परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का कार्य सौंपा गया था, 1976 के ग्रन्त में ग्रपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की थी, जिसमें इस परियोजना के चरण-दो में 5 लिफ्ट स्कीमों को शामिल करने की सिफारिश की गई थी।

राजस्थान सरकार ने इस रिपोर्ट पर एवं विभिन्न आर्थिक तथा अन्य पहलुओं पर, जिसमें रोजगार के लिए अधिक से अधिक अवसर प्रदान करना भी शामिल है, विचार करने के पश्चात् तथा भारत सरकार के परामर्श से यह फैसला किया कि इस परियोजना के चरण-दो के अन्तर्गत प्रवाह द्वारा 5 लाख हैक्टेयर एवं 60 मीटर तक की अधिकतम लिफ्ट के साथ 5 लिफ्ट स्कीमों द्वारा 2.6 लाख हैक्टेयर क्षेत्र को शामिल किया जाए जबिक मूल परियोजना रिपोर्ट में प्रवाह द्वारा 6 लाख हैक्टेयर की सिंचाई करना शामिल था। लेकिन, राजस्थान मुख्य नहर जैसीकि मूल योजना थी, जैसलमेर जिले में रामगढ़ तक निर्मित की जाएगी। राजस्थान नहर परियोजना के चरण-दो की संशोधित परियोजना रिपोर्ट की भारत सरकार द्वारा जांच की जा रही है तथा इन पांच लिफ्ट स्कीमों के सर्वेक्षण कार्य किए जा रहे हैं।

अब राजस्थान नहर को धन उपलब्ध हो जाने पर; 1983-84 तक पूर्ण किये जाने का कार्यक्रम है। सिंचाई के विकास से, जैसािक अब प्रस्तावित है, प्रयासों में दोहरापन आने की संभावना नहीं है और इसके कारण रेगिस्तान में सिंचाई की मूल योजना के कियान्वयन में देरी होने की संभावना नहीं है।

D.A.P. and Insecticide

3138. Shri Surendra Bikram: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:

- (a) whether he is aware that Di-Ammonium Phosphate which is supplied to the farmers, is an imported one, and was imported 5 years ago and has now no potentiality and if so, the reasons for doing so; and
- (b) whether arrangements are being made to ensure availability of fertilizers and insecticides to small farmers in time and if so, when?

The Minister for Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala): (a) Di-Ammonium Phosphate (D.A.P.) is indigenously manufactured as well as imported. It is a popular and fast moving fertiliser and both imported and indigenously D.A.P. is supplied to the farmers. Imported D.A.P. is allotted to the State Governments who in turn reallot to institutional agencies. These agencies get supply from Food Corporation of India, and or Central or and State Warehousing Corporations, who were instructed as early as 1970 to turn-over old stocks prior to issue of fresh stocks. Moreover, at the end of January, 1975, there was no stock of imported fertilisers, either with Food Corporation of India or with Warehousing Corporations on behalf of the Pool. The question of supply of 5 year old stocks of imported DAP by the Government to the distribution agencies, who get reallotment from the States, therefore, does not arise.

- (b) In order to make fertiliser available to farmers (including small farmers) in time, the following steps have been taken:—
 - (i) Estimates of requirements are made and supply plans finalised well before each main season, mainly kharif and Rabi.
 - ;(ii) Buffer stocks of fertilisers are being maintained at more than 600 centres in the country to meet emergent demands.
 - (iii) About one lakh retail outlets sell fertilisers to farmers. Further, efforts are being made to increase the retail points in the interior.
 - (iv) Movement of fertilisers by rail is being done on priority basis.
 - (v) Credit to the farmers is being arranged for purchase of fertilisers and other inputs.

As for *insecticides*, the State Governments and institutional agencies have opened a number of depots and they have a wide net-work of distribution points (about 52,000 in number) in the country. The Government of India are also implementing a scheme, under which 50 per cent

of the production and import of some important pesticides (Technical grade materials) rhe allotted directly to the State Governments for the purpose of formulation and supply to the farmers. In case of some of the important commercial crops subsidy for ground aerial spray of pesticides is being given.

पाठ्य पुस्तकों के रूप में बीस सूत्री ग्रौर पांच सूत्री कार्यक्षम सम्बन्धी पुस्तकें

- 3139. श्री ग्रनन्त दवे: क्या शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) देश के विभिन्न स्कूलों ग्रौर कालेजों में पाठय ग्रथवा संदर्भ पुस्तकों के रूपमें भूतपूर्व प्रधान मती इंदिरा गांधी के बीस सूत्री कार्यक्रम ग्रौर संजय गांधी के पांच सूत्री कार्यक्रम पर कितनी ग्रौर कौन कौन सी पुस्तक रखी गई थी; ग्रौर
 - (ख) तत्सम्बन्धी तथ्य क्या है ग्रीर इसके बारे में सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

शिक्षा, समाज कल्याण तथा सस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय में उपलब्ध सूचना के अनुसार, 20 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम तथा 5 सूत्री कार्य कम पर "प्रगति के पथ पर" शीर्षक पुस्तक दिल्ली प्रशासन द्वारा दिसम्बर 1976 में दिल्ली के स्कूलों की कक्षा 9 और 10 के लिए अनुपुरक पाठ्य पुस्तक के रूपमें प्रकाशित तथा निर्धारित की गई थी।

(ख) मूलत: दिल्ली प्रशासन द्वारा आदेश जारी किए गए थे कि 5 ग्रंकों के प्रश्न इस पुस्तक में से रखे जाएं। परन्तु बाद में दिल्ली प्रशासन द्वारा 24 मार्च, 1977 को उक्त आदेश वापस ले लिए गए थे।

गुजरांवाला गृह-निर्माण सहकारी समिति, दिल्ली के विरुद्ध शिकायतें

- 3140. श्री राम कंवार बेरवा: क्या निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) क्या सहकारी सिमितियों, दिल्ली के रिजस्ट्रार को कोई शिकायत प्राप्त हुई है कि गुजरांवाला गृह निर्माण सहकारी सिमिति, दिल्ली इस सिमिति के बाकी सदस्यों जिन्हें अभी प्लाट दिये जाने है और जिनके लिये सरकार ने सिमिति को अतिरिक्त भूमि आवंटित कर दी है, के नामों की सूची में फेरबदल कर रही है; और
- (ख) यदि हां, तो किस प्रकार की शिकायतें प्राप्त हुई है ग्रौर बाकी सदस्यों को जो गत 18 वर्षों से प्लाटों के ग्रावटन के लिए प्रतीक्षा कर रहे है, के हित की सुरक्षा के लिए क्या उपाय किये जा रहे है ग्रथवा किये जाने का विचार है ?

निर्माण ग्रौर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रौर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त):(क) जी, हां।

- (ख) दिल्ली प्रशासन ने जांच की है। कानून के ग्रनुसार उचित कार्यवाही की जाएगी।
 Indian Wild Life Council
- 3141. Shri Surendra Bikram; Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to-state:
 - (a) when the Indian Wild Life council is proposed to be reconstituted;
- (b) whether it is proposed to give more powers to this Council to ensure proper preservations of wild life; and

(c) if so, the facts thereof?

The Minister for Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala): (a) There is no Indian Wild Life Council. There is an Indian Board for Wild Life which was reconstituted with effect from July 4, 1974 for a period of 4 years, and is therefore due for reconstitution from July 4, 1978.

- (b) There is no such proposal under consideration in respect of the Indian Board for Wild Life which is an advisory body.
 - (c) Does not arise.

म्राई० म्राई० टी०, दिल्ली द्वारा क्रिटेन में प्रशिक्षण हेतु भेजे गए व्यक्ति

- 3142- डा० रामजी सिंह. क्या शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) क्या आई० आई० टी०, दिल्ली प्रशासन द्वारा दो व्यक्ति प्रशिक्षण हेतु ब्रिटेन भेजे गये थे और यदि हां, तो किस प्रकार के प्रशिक्षण के लिये; और
- (ख) क्या आई० आई० टी० के छात्रों को विदेशों में प्रशिक्षण दिलाने का काम भी आई० आई० टी० का ही है ?

शिक्षा, समाज कल्याण ग्रौर संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र): (क) ग्रौर (ख) भारत सरकार के इंग्लैंड की सरकार के साथ भा० प्रौ० स० दिल्ली के विकास के लिए सहयोगी प्रबन्ध है। शुरू, में सहयोग की योजना तीन वर्ष ग्रर्थात् 1968-70 के लिए तैयार की गई थी ग्रौर बाद में इसका ग्रप्रैल 1971 से मार्च, 1974 तक की ग्रौर ग्रिधिक ग्रविध के लिए नवीकरण किया गया। ग्रप्रैल 1974 में इस करार को मार्च, 1976 को समाप्त होने वाली दो वर्ष की ग्रौर ग्रिधिक ग्रविध के लिए बढ़ाया गया। सहयोग का वर्तमान करार एक ग्रप्रैल, 1976 से शुरू होता है ग्रौर यह पांच वर्ष की ग्रविध के लिए वैद्य है।

सहयोग का उद्देश्य अनुसंधान और विकास की परियोजनाओं के जरिए भारत सरकार की योजनाओं में परिभाषित भारतीय उद्योग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भा० प्रो० सं० को सहायता करना है। यह सहयोग भा० प्रौ० स० की अपनी शैक्षिक भूमिका विकसित करने में सहायता करने के लिए भी है।

1-4-1976 से लेकर ग्रब तक, विश्वविद्यालय प्रशासन ग्रौर एन० सी० मशीने चलाने में प्रशिक्षण देने तथा ब्रिटिश ग्रिधिकारियों के साथ विचार विमर्श करने के लिए इस करार के ग्रन्तर्गत भ्रमणों की व्यवस्था का उपयोग करके सात व्यवितयों को इंग्लैंड भेजा गया।

डी० डी० ए० के फ्लैटों की पट्टेदारी समाप्त करने के बारे में ग्रन्तिम निर्णय

- 3143. चौधरी बलबीर सिंह: क्या निर्माण श्रीर श्रावास तथा पूर्ति श्रीर पुनर्वास मंत्री डी०डी०ए० फ्लैंट्स की पट्टेदारी समाप्त करने के बारे में दिनांक 13 जून, 1977 के श्रतारांकित प्रश्न सं० 89 के उत्तर के बारे में यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) डी० डी० ए० फ्लैटों की पट्टेदारी को समाप्त करके उन्हें 'फी होल्ड' बनाने के बारे में ग्रन्तिम निर्णय कब तक ले लिया जाएगा ; ग्रीर

(ख) वया इन फ्लैटों के मूल्य संबंधी नीति डी॰डी॰ए॰ द्वारा दिसम्बर, 1976 ग्रौर जनवरी, 1977 में बेचे गए केवल फ्लैटों पर लागू होगी या उन फ्लैटों पर भी लागू होगी जो इससे पहले के वर्षों में बेचे गये है ?

निर्माण ग्रीर ग्रावास तथा पूर्ति ग्रीर पुनर्वास मंत्री (श्री सिकन्दर बस्त): (क) इसर बारे में कोई निर्णय नहीं लिया गया है ग्रीर कोई समय-सीमा बताना संभव नहीं है।

(ख) अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया गया है।

Breakup of Price Charged for DDA Flats

- 3144. Chowdhry Balbir Singh: Will the Minister of Works and Housing and Supply and Rehabilitation be pleased to state:
- (a) the price charged by the DDA for the MIG Flats and LIG and Januara flats sold in December, 1976 and January 1977 in various colonies such as Rajouri Garden Extention (Mayapuri) Prasad Nagar, Wazir Pur and Katwaria Sarai;
- (b) the break up of this cost e.g. cost of land, developmental charges, price paid to the contractors, supervision charges etc.;
- (c) whether the cost of the flats includes any amount for the maintenance of the flats; if so, the period for which flats will be maintained by the DDA and the items which will be covered under this maintenance; and
- (d) the prices of MIG flats sold by the DDA is atmost double the prices on which the flats are sold by the Housing Board, Bombay and if so, the reasons thereof?

The Minister of Works and Housing and Supply and Rehabilitation (Shri Sikander Bakht) (a) to (d) Information is being collected.

Check on Sale of Skins of Animals

3145. SHRI SURENDRA BIKRAM:

Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:

- (a) Whether after killing the animals their skins are being sold to the foreigners through Nepal for thousands of rupees: and
- (b) if so, the steps taken to check it and if no steps have been taken the reasons therefor?
- The Minister for Agriculture and Irrigation: (Shri Surjit Singh Barnalat (a) No such instance has come to the notice of the Government.
- (b) Does not arise.

Birds sent Abroad

- 3146. Shri Surendra Bikram: Will the Minister of Agriculture and Irrigation be pleased to state:
- (a) whether many birds caught by bird-catchers are being sent abroad by a firm of Calcutta with the result that many birds which are most beneficial for crops etc. are disappearing; and
 - (b) the reasons for not imposing restrictions thereon.?

The Minister for Agriculture and Irrigation (Shri Surjit Singh Barnala): (a) and (b). About eight lakh birds of all types are reported to be exported from Calcutta annually by 4 main exporters. Detailed export statistics are being collected since January 1977 for assessing the magnitude of the problem. The Schedules to the Wild Life (Protection) Act, 1972 are proposed shortly to be amended to bring such exports under control.

सभा पटल पर रखे गए पत्र

PAPERS LAID ON THE TABLE

वर्ष 1977-78 के लिए नौवहन ग्रौर परिवहन मंत्रालय को ग्रनुदानों की विस्तृत मांगें

प्रधान मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : मैं वर्ष 1977-78 के लिये नौवहन ग्रौर परिवहन मंत्रालय के अनुदानों की विस्तृत मांगों (हिन्दी तथा ग्रग्नेजी संस्करण) की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं। [ग्रन्थालय में रखा गया देखिए संख्या एल०टी०648/77]

खाद्य निगम (दूसरा संशोधन) नियम, 1977

कृषि ग्रौर सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला): मैं खाद्य निगम ग्रिष्ठिनियम, 1964 की धारा 44 की उपधारा (3) के ग्रन्तगंत खाद्य निगम (दूसरा संशोधन) नियम, 1977 (हिन्दी तथा ग्रंग्रेजी संस्करण) की एक प्रति, जो दिनांक 25 जून, 1977 के भारत के राजपत्न में ग्रिधसूचना संख्या सा० सां०नि० 413(ङ) में प्रकाशित हुए थे, सभा पटल पर रखता हूं। [ग्रन्थालय में रखा गया। देखिए संख्या एल०टी० 649,77]

सीमाशुल्क ग्रधिनियम, 1962 के श्रन्तर्गत ग्रधिसूचनायें

वित्त ग्रौर राजस्व तथा बैंकिंग मंत्री (श्री एच० एम० पटेल): मैं सीमाशूलक ग्रिधिनियम 1962 की धारा 159 के ग्रन्तर्गत निम्नलिखित ग्रिधिसूचनाग्रों (हिंदी तथा ग्रंग्रेजी संस्करण) की एक-एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं :---

- (एक) सा०सां०नि० 427(ङ) जो दिनांक 1 जुलाई, 1977 के भारत के राजपत्न में प्रकाशित हुई थी तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।
 - (दो) सा०सां०नि० 428(ङ) जो दिनांक 1 जुलाई, 1977 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुई थी तथा एक व्याख्यात्मक ज्ञापन।

[ग्रन्थालय में रखा गया। देखिये संख्या एल०टी० 650/77]

श्री ज्योतिर्मय बसु (डायमंड हार्बर): मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। निदेश 2 के उप-पैरा 2 के ग्रधीन जब तक ग्रध्यक्ष महोदय किसी विशेष ग्रवसर पर ग्रन्यथा निदेश न दें, सभा पटल पर पत्न रखने से पूर्व विशेषाधिकार भंग का प्रश्न लिया जाना चाहिए। मैंने नियम 222 ग्रौर 223 के ग्रधीन विशेषाधिकार भंग की सूचना दी हुई है। ग्रतः सभा पटल पर पत्न रखे जाने से पूर्व मुझे इसे उठाने की ग्रन्मति दी जानी चाहिए।

उपाध्यक्ष महोदय: जब मैंने सभा पटल पर पत्र रखने के लिए कहा, तब ग्राप खड़े नहीं हुए । ग्रीर ग्रब खड़े हो गए । ग्रब ग्राप इसके पश्चात् ग्रपना मामला उटा सकते हैं ।

राजनियक तथा कौंसिलीय श्राफिसर (फीस) संशोधन नियम, 1976 श्रौर राजनियक तथा कौंसिलीय श्राफिसर (फीस) संशोधन नियम, 1976 के श्रन्तर्गत श्रिधसूचना।

विदेश मंत्री (श्री भ्रटल बिहारी वाजपेयी) : मैं सभा पटल पर निम्नलिखित पत्न रखता हूं ---

(1) राजनियक तथा कौंसलीय म्राफिसर (शपथ तथा फीस) म्रिधिनियम, 1948 की धारा 8 के म्रन्तर्गत जारी किये गये राजनियक तथा कौंसलीय म्राफीसर (फीस)

[श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी]

संशोधन नियम, 1976 (हिन्दी तथा ग्रंग्रेजी संस्करण) की एक प्रति जो दिनांक 15 ग्रक्त्वर, 1976 के भारत के राजपत्न में श्रिधसूचना संख्या सा०सां विव 817(ङ) में प्रकाशित हुए थे। ग्रन्थालय में रखा गया। देखिये संख्या एल व्टी व 651/77]

(2) राजनियक तथा कौंसलीय ग्राफिसर (फीस) संशोधन नियम, 1976 के ग्रन्तर्गत जारीकी गयी ग्रिधिसूचना संख्या सा०सां०नि० 922(ङ) (हिन्दी तथा ग्रंग्रेजी संस्करण) की एक प्रति, जो दिनांक 16 दिसम्बर, 1976 के भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुई थी। ग्रन्थालय में रखा गया। देखिये संख्या एल०टी० 652/77

जमुनादास माधवजी एण्ड कम्पनी, बम्बई के श्री किशोर जे० तन्ना के विरुद्ध विशेषाधिकार के प्रश्न

QUESTION OF PRIVILEGE AGAINST SHRIKISHORE J. TANNA OF JAMNA DASS MADHAVJI AND CO. BOMBAY

श्री ज्योतिर्मय बसु: नियम 222/223 के ग्रधीन मैं सभा के विशेषाधिकार भंग का प्रश्न उठाने की ग्रनुमित मांगता हूं। मामले से सम्बन्धित तथ्य इस प्रकार है :---

जमुनादास माधवजी एण्ड कम्पनी, बम्बई के, जिस पर बड़े गम्भीर ग्राथिक ग्रपराध ग्रौर कदाचार के ग्रारोप लगाए गए है, श्री किशोर के विद्या के सम्पादक के नाम एक पत्र लिखा है जो कि ग्राज के ग्रंक में छपा है। उसमें लिखा है कि यद्यपि हम ग्रपने विरुद्ध किसी भी जांच को बुरा नहीं मानते हैं परन्तु ग्रारोप सिद्ध होने से पहले सरकार द्वारा हमारा नाम प्रचारित करना गलत है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक तुच्छ राजनीतिक हथकड़ा है।

मैंने लोक सभा ग्रौर मंत्री महोदय को एक सूचना दी थी कि तेल से सम्बन्धित 13 फर्मों द्वार। लगभग 600 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा के घों शले के बारे में पूरे च्यौरे प्राप्त करें। नामों की सूची में इस फर्म का नाम भी देखा जा सकता है।

इस पत्न में जो स्रकारण स्रालोचना की गई है स्रौर स्रारोप लगाए गए है उससे निश्चय ही सभा का विशेषाधिकार भंग हुस्रा है। इस गम्भीर कु कृत्य के लिए इस पत्न के लेखक को शीन्न दण्ड दिया जाना चाहिए स्रौर एसा तभी हो सकता है जब कि यह मामला विशेषाधिकार समिति को सौंप दिया जाए, स्रत्यथा यह बिना किसी शर्त के क्षमा मांगे स्रौर उसे लगातर तीन दिन तक इस पत्न की तारीख से 15 दिन के भीतर छपवायें।

उपाध्यक्ष महोदय : मुझे मामले की जानकारी है । मुझे ग्रभी ग्रभी कागजात मिले है ग्रौर मैं उन पर विचार कर रहा हूं ।

श्री ज्योतिर्मय बसु: महोदय, मैंने सूचना दी है (व्यवधान)

उपाध्यक्त महोदय : सूचना देने का मतलब यह नहीं है कि ग्राप एकदम खड़े हो जायें।

श्री ज्योतिर्मय बसु: ग्रन्त (ष्ट्रीय कृष्ण चेतना सोसाइटी ग्राश्रम से सम्बधित व्यक्ति सी० ग्राई० ए० के एजेन्ट हैं। कुछ लोगों से देश से चले जाने के लिए कहा गया था परन्तु वे ग्रभी भी यहां हैं। ग्राश्रम में गोलीकांड हुग्रा जिसमें 24 व्यक्ति घालय हो गए। च्रिक विदेश मंत्री यहां हैं, इसलिए वह इस पर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं।

उणाध्यक्ष महोदय: हम इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

श्रनुदानों की मांगें, 1977-78--जारी

DEMANDS FOR GRANTS, 1977-78 - Contd.

उद्योग मंत्रालय--जारी

उपाध्यक्ष महोदय : हम उद्योग मंत्रालय के सम्बन्ध में स्रनुदानों की मांगों पर चर्चा शुरू करेंगे। श्री जार्ज फर्नानडिज।

उद्योग मंत्री (श्री जार्ज फर्नानिडस): उपाध्यक्ष महोदय, मुझे खुशी है कि मैंने जो बातें कहीं हैं, उन पर सभा के सभी वर्गों की सहमित मिली है। वादिववाद में भाग लेने वाले सभी माननीय सदस्यों ने हमारी श्रौद्योगिक नीति को जो समर्थन दिया है, उससे मुझे काफी प्रोत्साहन मिला है।

कांग्रेस दल के कुछ माननीय सदस्य भी मेरी इस बात से सहमत हैं कि तीन दशकों से हमारी अर्थ व्यवस्था को नष्ट किया जाता रहा है। इस बात से कोई इन्कार नहीं करता है कि कांग्रेस के शासन के दौरान देश ने प्रगति की है। परन्तु बात इतनी ही है कि कोई से कैसे देखता है। अंग्रेजों ने इस देश में 150 वर्षों तक शासन किया और इन 150 वर्षों में उन्होंने प्रति वर्ष लगभग एक हजार किलोमीटर रेल लाइनें बनाई जबकि कांग्रेस ने अपने 30 वर्षों के शासन के दौरान प्रति वर्ष केवल लगभग 100 किलोमीटर रेल लाइनें बनाई। अब देश में अंग्रेजों के समय में अधिक शीघ्र प्रगति की है या कि कांग्रेस के शासन में (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय: शांत। बीच में मत बोलिए।

श्री जार्ज फर्नानडिस: यदि प्रति वर्ष बेरोजगारों की संख्या में 28 लाख की वृद्धि को प्रगति कहा जाए तो उनके अनुसार बड़ा ही विकास हुआ है। खेद है कि मैं तो इसे प्रगति नहीं मानता। (व्यवधान) गत दस वर्षों में दालों की खपत प्रति व्यक्ति लगभग 60 श्रौंस से घटकर 35 श्रौंस रह गई है। यदि ग्राप कहें कि यह प्रगति का सूचक है तो हमारा प्रगति का स्तर इससे इकदम भिन्न है। इसी तरह कपड़े की प्रति व्यक्ति खपत भी 50 मीटर में घटकर 31½ मीटर रह गई है। गरीबी से नीचे के स्तर पर रहने वालों की संख्या बढ़ रही है। निरक्षरों की संख्या बढ़ गई है। यह तो आप लोगों का स्तर है। प्रगति के बारे में हमारी धारणा भिन्न है। हम तो अपने देश की प्रगित का अन्य देशों की प्रगति से मुकाबला करते हैं।

मैंने कहा था कि ग्रौद्योगिक क्षेत्र में 4 प्रतिशत वृद्धि हुई है। श्री वेंकट रमन ने कहा कि यह सही नहीं है ग्रौर इस देश ने सभी देशों की ग्रपेक्षा ग्रधिक प्रगति की है। मेरे पास विश्व बैंक की रिपोर्ट है। इस रिपोर्ट के ग्रनुसार 1965-76 के बीच विश्व के विकासशील देशों में 9 प्रतिशत प्रगति हुई है जबकि भारत में 4 प्रतिशत हुई है।

हमारे दल में भिन्न भिन्न विचार हैं। यह ठीक भी है। हमारा लोकतांतिक दल है। हम लोकतन्त्री सरकार चला रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि ग्रब कांग्रेसी सदस्य यह मांनेंगे कि एक ही व्यक्ति को सब कुछ समझ लेने से राजनीतिक ग्रान्दोलन ग्रौर सरकार कमजोर होती है। यदि हमारे बीच कोई मतभेद है तो उनका प्रभाव नीति निर्धारण पर नहीं पड़ता।

[श्री जार्ज फर्नानडिस]

ब्रौद्योगिक नीति के बारे में इस सभा में मैंने जो कुछ कहा है वह केवल मेरे ब्रपने विचार नहीं हैं ब्रपितु वह सम्पूर्ण सरकार के विचार हैं।

विरोधी पक्ष ने मुझ चेतावनी दी है कि इस नीति को ग्रमल में लाने में ग्रनेकों खतरें हैं। उन्होंने मुझे विशेषकर बड़े व्यापारिक गृहों ग्रीर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बारे में ग्रगाह किया है। मैं भी इन दोनों की शक्ति ग्रीर पहुंच को कम नहीं मानता। पर इन्हें हमारी चिन्ता बिल्कुल नहीं करनी चाहिए। हम इनके कार्य के तरीकों को भली भाति जानते हैं। ये समझते हैं कि पैसे से सभी को खरीदा जा सकता है। पर इस ग्रोर कोई भी नहीं खरीदा जा सकता ग्रीर वे भी इस तथ्य को ग्रन्छी प्रकार जानते हैं। फिर भी यदि कोई यह समझता हो कि पिछले 30 वर्षों की तरह ग्रब भी हेराफेरी की जा सकती है तो यह उसकी भूल होगी।

जहां तक बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का सम्बन्ध है, वे हार मान चुके हैं। इसलिए वे अब सरकार को प्रभावित नहीं कर सकते। क्योंकि इस प्रश्न का हल जनता ने इस वर्ष मार्च में कर दिया है। फिर भी बहुराष्ट्रीय कम्यनियों के साथ हुए कई सौदों का मुझे पता चल रहा है। मैं उनकी छान-बीन करने की कोशिश कर रहा हूं। इसमें कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो संसद् के ग्रीर मंत्रियों के चारों ग्रीर ग्रपना जाल बिछा देते हैं। ये लोग सरकारी कर्मचारियों को बदनाम करते हैं ग्रीर उन्हें प्रभावित कर ग्रपना उल्लू सीधा करने की कोशिश करते हैं। मैं इनका पता लगाने का प्रयास कर रहा हूं। मैं इस समय इतना ही कहना चाहता हूं कि हम उन्हें इस प्रकार का कार्य नहीं करने देंगे।

मेरे माननीय मित्र श्री उन्नीकृष्णन् ने बिड़ला बन्धुश्रों के विरुद्ध की जा रही जांच का उल्लेख किया है। इस सम्बन्ध में 'सरकार ग्रायोग' का गठन 1970 में किया गा श्रा श्रीर श्राज उसे काम करते श्राठ वर्ष हो चुके हैं। हमनें इस ग्रायोग पर डेढ़ करोड़ रुपया खर्च कर दिया है ग्रीर जांच ग्रभी भी चल रही है। ग्रभी तक जांच पूरी न होने का क्या कारण है ? इसका कारण यह है कि उसके निदेश-पद इस प्रकार बनाए गए कि एक ग्रोर तो इससे जनता को खुश किया जा सके ग्रीर दूसरी ग्रोर बिड़ला बन्धुश्रों को। इस ग्रायोग ने काफी काम पूरा कर लिया है। इसने उसे पेश की गई 11,000 फाइलों में से 9,000 फाइलों की जांच पूरी कर ली है। मुझे ग्राशा है कि इस ग्रायोग के निष्कर्षों के ग्राधार पर हम इस बड़े व्यापार गृह के कुकमों का पर्दाफाश कर सकेंगे। इसका ग्राभिप्राय यह नहीं है कि हम इसे काम नहीं करने देना चाहते ? हम चाहते हैं कि यह व्यापार गृह फले-फूँले इसका विकास हो। देश में ग्रिधिक उत्पादन हो। पर हम इसे कानूनों का उल्लंघन कर ग्रपना स्वार्थ सिद्ध नहीं करने देंगे।

श्री मधु लिमये ने ग्रपने भाषण में जयपुर सीमेंट उद्योग का उल्लेख किया है। यह उद्योग एक बड़ा सीमेंट उद्योग है जो 5 लाख टन से भी ग्रधिक सीमेंट तैयार करता है। पर ग्राज यह एक रूगण इकाई है। इसे ग्रब सरकार चला रही है। स्टेट बैंक के ग्रनुसार इसके रूगण होने के मुख्य कारण हैं लापरवाही के कारण इसका उत्पादन गिरा, इसके एकमात बिकी एजेंट द्वारा धनराणि की बड़ी माता में दूसरे कामों पर लगाना तथा क्रय ग्रीर विक्रय में प्रबन्धक का गोलमाल। हम इसकी जांच करेंगे ग्रीर उसके दूर-गामी परिणाम निकलेंगे।

श्री के० ए० राजन (तिचुर): 6000 कर्मकार बेकार हो गये हैं। श्री जार्ज फर्नानडीज: ग्रब संयंत्र पूरी क्षमता से काम कर रहा है। नेशनल रेयन्स के मामलों का भी उल्लेख किया गया है । यह बात बहुत गम्भीर है (व्यवधान) । इसके मामलों की भी जांच की जायेगी और उचित निर्णय लिए जाएंगे । मोदी रबड़ का नेशनल रेयान के साथ सम्बन्धों का भी उल्लेख किया गया है । मैं इस पूरे मामले की जांच कर रहा हूं और निष्कर्षों से सभा को जल्बी ही अवगत कराऊंगा (व्यवधान)

कोका-कोला के सम्बन्ध में दो बातें उठाई गई हैं। पहली लाइसेंस देने की और दूसरी रिश्वत की। मैं सभा को आश्वासन देना चाहता हूं कि इस फर्म को कोई लाइसेंस नहीं क्या गया है और यदि रिश्वत के रूप में धन दिये जाने का कोई मामला सामने आया और ठोस प्रमाण दिये गये तो हम असलता से उसकी जांच करेंगे।

श्री वेंकटरमन् ने सीमेंट का उत्पादन योजना श्रायोग द्वारा निर्धारित लक्ष्य से कम होने की बात कही है । योजना श्रायोग ने 235 लाख टन का लक्ष्य रखा श्रौर 1978-79 में वास्तव में 208 टन उत्पादन होगा। इस लक्ष्य की पूर्ति होगी पर मेरा कहना यह है कि यह लक्ष्य बहुत कम रखा गया है । इस वर्ष 20 लाख टन सीमेंट की कमी रहेगी। लक्ष्य श्रवास्तविक रखे जाने के कारण ही देश में सीमेंट की कमी है। वर्तमान सरकार इस कमी को दूर करने के लिए सभी प्रकार के प्रयास करेंगी।

श्री उन्नीकृष्णन् सरकारी क्षेत्र के प्रति सरकार के रुख से काफी चिन्तित प्रतीत होते हैं। मैं उनसे इतना ही कहना चाहता हूं कि हमारी धारणा है कि सरकारी क्षेत्र को देश की आर्थिक ग्रीर ग्रीद्योगिक प्रगति में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। सरकारी क्षेत्र में भी कुछ किमयां ग्रीर ग्रकुशलताएं हैं। हम इनको दूर करने का प्रयास करेंगे जिससे सरकारी क्षेत्र देश की ग्राधिक प्रगति में ग्रपनी समुचित भूमिका ग्रदा कर सके।

श्री जी • नरसिंह रेड्डी ने कहा है कि भारतीय सीमेंट निगम द्वारा तैयार की गई 5 परियोजनाश्रों में से केवल 3 को स्वीकृति दी गई है । मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि शेष परियोजनाश्रों के लिए भी स्वीकृति दी जा चुकी है। इन्हें तन्दूर ग्रौर ग्रदीलाबाद में लगाया जाएगा। इनके लिए मशीनों ग्रौर उपकरणों के क्रय ग्रादेश इस वर्ष सितम्बर ग्रौर ग्रक्तूबर में दिये जायेंगे।

यह प्रश्न उठाया गया है कि सरकार हाथ की घड़ियों का ग्रायात क्यों करती है । हम देश की ग्रावश्यकता की पूर्ति के लिए उनका ग्रायात करते हैं।

Shri Arjun Singh Bhadoria (Etawah): By what time shall we be able to achieve self sufficiency in watches?

Shri George Fernandes: I will tell this also.

ग्रभी तक हम ग्रपनी ग्रावश्यकता ग्रंशतः देश में बनी घड़ियों से ग्रौर ग्रंशतः विदेशों से मंगाई गई घड़ियों से पूरी करते हैं। घड़ियों के मामले में भारत को ग्रात्मनिर्भर बनाने के लिए इन वर्षों में कुछ नहीं किया गया। इसके विपरीत जो घड़ियां तस्करी से देश में लाते थे उनको बड़ी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा। ग्रब तक ग्रपनी एच० एम० टी० की क्षमता बढ़ाने का विचार रखते हैं। इस बीच हम 10 लाख घड़ियां विदेशों से मंगा रहे हैं। वास्तव में हम कई एकक स्थापित करने जा रहे हैं जिनमें घड़ियां एसम्बल की जायेंगी। घड़ियों के 11 कारखाने देश में खोले जाएंगे जो सिविकम, गोग्रा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश मेघालय, महाराष्ट्र, तिमलनाडु, पंजाब केरल, उड़ीसा ग्रौर ग्रांध्र प्रदेश में स्थापित किये जाएंगे। इन कारखानों से एच० एम० टी० की उत्पादन क्षमता 10 लाख से बढ़ कर 1980—81 में 30 लाख हो जायेगी। इस बीच हम एक

[श्री जार्ज फर्नानडिस]

शीघ्र निष्पादन कार्यक्रम चलना चाहेंगे, जिससे कि भारत ग्रगले तीन वर्षों में इस मामले में ग्रात्म-निर्भर हो सके । गुजरात में हिन्दुस्तान मशीन टूल्स परियोजना के बारे में प्रश्न उठाया गया है । गुजरात ग्रौद्योगिक विकास निगम, हिन्दुस्तान मशीन टूल्स लि० के सहयोग से एक प्रतिष्ठान स्थापित कर रहा है ।

गुजरात राज्य मशीन टूल्स कारपोरेशन में हिन्दुस्तान मशीन टूल्स के 25 प्रतिशत इक्विटी शेयर होंगे। परियोजना की लागत लगभग 11 करोड़ रुपये होगी। कम्पनी को गुजरात सरकार ने जमीन का कब्जा दे दिया है। निर्माण अगस्त, 1977 में आरम्भ होगा और जनवरी, 1979 में उत्पादन शुरू होगा। सरकारी क्षेत्र के विस्तार के बारे में सरकार की वचनबद्धता का यह प्रमाण है।

श्री विनोद भाई बी॰ सेठ (जामनगर): उत्पादन शुल्क के कारण लघु उद्योग समाप्त हो गये हैं।

श्री जार्ज फर्नानडिस: यह भिन्न प्रश्न है। विमको के लघु उद्योगों पर प्रभुत्व के बारे में प्रश्न उठाया गया है। यह कम्पनी इस देश में कई वर्षों से चल रही है। इसकी 50,000 लाख डिब्बियों की वार्षिक क्षमता है। 1970 से माचिसों का उत्पादन लघु उद्योगों के लिए ग्रारक्षित किया गयाथा। विमको का 30 प्रतिशत उत्पादन का हिस्सा है ग्रीर शेष 70 प्रतिशत लघु उद्योग क्षेत्र में होता है।

श्रीमती पार्वती कृष्णन (कोयम्बट्र) : प्रश्न यह है कि बहुत सी कम्पिनयों को मुलायम लकड़ी 5 रुपए प्रति टन के हिसाब से मिलती है जब कि लघु उद्योगों को 20 रुपए प्रति टन के हिसाब से मिलती है। यह रियायत बड़े उद्योगों को लाभ कमाने के लिए दी गई है।

श्री जार्ज फर्नांनिडिस: इस बात की जांच की जायेगी कि विमको को कैसे यह रियायत दी गई है। इस बजट में एक ग्रुस माचिस पर 55 पैसे के उत्पादन शुल्क की रियायत दी गई है। लघु उद्योगों के समक्ष पराफिन मोम की भी समस्या है इसके समाधान के लिए सरकार निर्यात करने की इजाजत दे देगी।

जहां तक लघु, ग्रामीण ग्रौर कुटीर उद्योगों का सम्बन्ध है उनके विकास पर विशेष जोर दिया गया है ग्रौर वर्ष 1977-78 के परिव्यय में वर्ष 1976-77 की ग्रपेक्षा 40 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। 1977-78 में यह 55.9 करोड़ रुपए है जब कि 1976-77 में 41.2 करोड़ रुपए था। इसके ग्रितिरक्त हस्तिशल्प, हथकरघा ग्रौर रेशम के कीड़े पालने के लिए 1976-77 की 13 करोड़ रुपये की राशि बढ़ा कर 1977-78 में 27 करोड़ रुपए की गई है। यह 100 प्रतिशत से भी ग्रधिक की वृद्धि है। बड़े ग्रौर मध्यम उद्योगों में कुल निवेश बढ़ा कर 1977-78 में 180.35 करोड़ किया गया है जब कि वर्ष 1976-77 में यह 127.99 करोड़ रुपए था। इसमें 12.45 करोड़ रुपए की कमी की गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में निर्मित ढांचे में सुधार करने के लिए परंच मार्गों सम्बन्धी कार्यक्रमों के लिए 20 करोड़ की ग्रौर पीने के पानी के लिए 40 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। वजट प्रस्तावों से इस सम्बन्ध में स्थिति ग्रौर भी स्पष्ट हो जायेगी। लघु उद्योगों के बारे में

भी यह ग्रालोचना की गई है कि वे कच्चा माल, काले बाजार में बेच देते हैं किन्तु इससे हमारी नीति में परिवर्तन नहीं होगा ग्रीर ऐसे ठोस कदम उठायेंगे कि जिससे कतिपय ग्रीर क्षेत्र चालू वर्ष में लघु उद्योगों के लिए ग्रारक्षित किये जायें।

श्री द्वार वेंकटारमन (मद्रास दक्षिण) : इस वर्ष वित्त विधेयक में 25 प्रतिशत निवेश की छूट कर दी गई है।

श्री जार्ज फर्नानिडस : जो भी रचनात्मक सुझाव होंगे उन की जांच की जायेगी ग्रौर उन पर कार्यवाही की जायेगी ।

श्रीमती पार्वती कृष्णन: हौजरी उद्योग एक लघु उद्योग है इसमें हजारों मजदूर काम करते हैं। इसमें उत्पादन शुल्क लगाया गया है। ग्रतः उन्हें कहां संरक्षण दिया गया है। जो बने बनाये कपड़े तैयार नहीं करते हैं उन पर उत्पादन शुल्क नहीं है। ग्रतः क्या मंत्री महोदय वित्त मंत्री से इस उद्योग तथा बीड़ी उद्योग पर से उत्पादन शुल्क हटाने का प्रयत्न करेंगे?

डा० मुशीलानायर (झांसी): मैं मंत्री महोदय का ध्यान लघु उद्योग की ग्रोर ग्राक्षित करना चाहती हूं। तांबे के चूरे पर उत्पादन शुल्क 45 प्रदिशत से बढ़ा कर 120 प्रतिशत किया गया है। इसका उपयोग कीटनाशी जैसे वस्तुग्रों के लिए किया जाता है जिसे देश में कृषि में प्रयोग किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप यह चूरा शुद्ध तांबे की ग्रपेक्षा 20 प्रतिशत महंगा हो जाएगा ग्रौर पूने स्थित 30 से 40 लघु उद्योग समाप्त हो जायेंगे। क्या मंत्री महोदय इस उत्पादन शुल्क को समाप्त करने का प्रयत्न करेंगे?

श्री जार्ज फर्नानिडस: मैं केवल यह कह रहा हूं कि ये सब बातें सम्बद्ध मंत्रालय की मांगों पर चर्चा के समय उठायी जा सकती हैं। माननीय सदस्यों ने बम्बई, बिहार, उत्तर प्रदेश ग्रीर तिमलनाडु ग्रादि की रुग्ण मिलों के बारे में कहा गया है। मैं ऐसे तत्काल कदम उठाने का प्रयत्न करूंगा जिससे इन मिलों में काम करने वालों की तथा उद्योग की ममस्याग्रों का समाधान हो सके। मैं यह भी कह सकता हूं कि यदि इन रुग्ण उद्योगों के मजदूर इन उद्योगों को ग्रपने हाथ में ले लें तो हम उन्हें सभी प्रकार की वित्तीय सहायता देने को तैयार हैं। हम उन्हें विशेष सलाह की भी व्यवस्था करेंगे। उनकी प्रवन्ध समिति में हम सरकार का एक प्रतिनिधि रख सकते हैं। मैं यह सुझाव इसलिए नहीं दे रहा हूं कि ये रुग्ण मिलें हैं ग्रीर किसी न किसी को उन्हें चलाना है। मैं उस स्थिति को देखना चाहता हूं जब मजदूर ऐसी मिलों को ग्रपने हाथ में लेकर यह सिद्ध करें कि वे उनके ग्रीधोगिक गृहों से ग्रधिक ग्रच्छी तरह से उन्हें चला सकते हैं।

श्री एत**ं श्रीकान्तन नायर** (क्विलोन) : केरल के काजू विकास निगम में केवल मजदूरों के ही प्रतिनिधि हैं ग्रीर वे बहुत ग्रच्छे चल रहे हैं ।

श्री कार्ज फर्नाडीज : इन रुग्ण उद्योगों में मजदूर संघ श्रागे श्रायें श्रीर श्रपने सुझाव दें।

श्री क्रिन्त नहाटा (पाली) : इस देश के मजदूर वर्ग ने हमशा यह चुनौती दी है कि मिलों की रूप में कुप्रवन्ध के कारण हैं श्रौर वे खुद प्रबन्ध कर सिद्ध कर सकते हैं। क्या मंत्री

[श्री ग्रम्त नहाटा]

महोदय यह बिचार करेंगे कि यदि किसी उद्योग के मजदूर किसी स्वस्थ मिल को अपने हाथ में लेकर चलाना चाहें तो वह उद्योग मजदूरों को दिया जाएगा ।

श्री जार्ज फर्नानडिस: यदि यह सुझाव है तो मुझे इसे मानने में कोई हिचिकचाहट नहीं है।

प्रो० ग्रार० के० ग्रमीन (सुरेन्द्र नगर): राज्य सरकारों ने रुग्ण मिलों के बारे में भिन्न-भिन्न नीतियां ग्रयनाई हैं। ग्रब समय ग्रा गया है कि राज्य सरकारें तथा केन्द्र सरकार सभी उद्योगों के बारे में एक सी नीति ग्रयनाये।

श्री जार्ज फर्नानडिस : इस बारे में एकरूपता लाना सम्भव नहीं है। यह सुझाव मेरा मजदूरों के लिए है। इस समय लगभग 100 रुग्ण मिलें हैं। साधनों का प्रश्न है। यदि मजदूर इन्हें अपने हाथ में ले सकते हैं तो हम उनकी हर प्रकार की सहायता करेंगे।

पूजीगत माल के स्रायात के बारे में भी कहा गया है । मैं सभा को यह स्राध्वासन देना चाहता हूं कि स्रायात उसी स्थिति में किया जायेगा जब हमारे उद्योग उसकी व्यवस्था करने की स्थिति में नहीं हैं । यदि ठीक समस्य पर तथा उचित मूल्य पर हमारे उद्योग मशीनों की व्यवस्था कर सकें तो स्थात कदापि नहीं किया जायेगा । किन्तु हमारे इद्योगों को हानि होने नहीं दिया जायेगा ।

Shri L.L. Kapoor (Purnea): Sir, Industrial Development Department had formulated a policy that in case Indians abroad want to purchase machinery with the foreign exchange with them they would be allowed to set up industries in the country but they have not been allowed to do so. I would, therefore, request that these persons should be allowed to set up industries here.;

Shri George Fernandes: These cases would be examined and decisions would be taken in regard to the furture policy in this regard.

बहुत से अन्य प्रश्न उठाइ गए हैं करन्तु उन बाब का उत्तर देशा भेरे किए सम्भन नहीं है। मैंने सभी बातों को सोट कर जिला है और इन बाबों पर जी औ विर्मंत्र जिए कारोंने उन्हें मैं सदस्यों को सूचित कड़ेगा।

यह सुझाव दिया है कि समस्त उत्तर-पूर्वी क्षेत्र को पिछड़ा क्षेत्र मान लिया जाए। विहार का उदाहरण में आफ समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूं। कारत सरकार ने विहार में सबसे अधिक धनराज़ि निविश की है। 31-3-1976 को यह राण 1882 करोड़ रुपए बी किन्तु फिर भी जिहार सबसे अधिक विछड़ा क्षेत्र है। मध्य अदेश में 1366 करोड़ रुपए का निवेश किया गया है फिर भी यह प्रवेश मिछड़ा हुआ है। यही स्थित उड़ीका की है इसमें 619 करोड़ निवेश किया गया है और यह तीसरा पिछड़ा क्षेत्र है। मेरे कहने का तार्म्म यह है कि बड़े उद्योगों में निवेश करने से बेरोजगारी और पिछड़ेपन की समस्या हल नहीं हो जाती है। हमें निवेश नीति बदलती होगी। हमारा अधिक जोर प्रामीण क्षेत्र, लघु उद्योग आर प्रामीण उद्योगों पर होगा। बड़े उद्योगों में निवेश करने से केवल थोड़े से लोगों को ही रोजगार मिलता है और स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता है। किन्तु उतना ही निवेश लघु उद्योगों में करने से अधिक स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता है। अतः लबु उद्योगों, प्रामीण क्षेत्रों तथा कुटीर उद्योगों में अधिक निवेश किया जाना चाहिए।

ग्रौद्योगिकीकरण की एक समस्या ग्रायोजन की है। ग्रौद्योगिक ग्रायोजन में एक छोटे से वर्ग का ध्यान रखा गया है। देश की बाकी ग्राबादी का ध्यान नहीं रखा गया है। ग्रब हम ऐसी नीति बनायेंगे जिससे खरीदने की शक्ति कुछ लोगों के हाथ में न रहे ग्रौर हर वर्ष 10 लाख ग्रथवा 15 लाख व्यक्तियों को ऊपर के स्तर पर उठाया जाए। जो करोड़ों लोग ग्रत्यधिक निर्धनता के स्तर पर हैं उनका स्तर उठाने का प्रश्न है। उनकी क्रय शक्ति बढ़ाने की बात है। हमारी ग्रौद्योगिक नीति में ग्रितिरिक्त रोजगार की गुंजाइश है तथा 60 करोड़ लोगों के लिए बाजार बनाने की बात नहीं है। ग्रतः ग्राने वाले वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों में लघु उद्योगों को बढ़ावा देकर यह किया जा सकता है।

जहां तक पिछड़ेपन का प्रश्न है मैं यह नहीं कहना चाहता हूं कि केवल कुछ राज्य हैं जो पिछड़े हैं । महाराष्ट्र में बम्बई भी है जहां भारत की ग्राधी सम्पदा है किन्तु इसका कोंकन क्षेत्र इतना पिछड़ा हुग्रा है जितना कि बिहार से ग्रत्यधिक पिछड़े क्षेत्र हैं।

मैं सदन को ग्राश्वासन देता हूं कि ग्रागामी दिनों में हम ऐसी नीति कियाविन्त करेंगे कि जिससे उस पिछड़ेपन ग्रौर निर्धनता को दूर कर सकें जो हमारे देश पर एक ग्रिभिशाप बना रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय: मैं सभी कटौली प्रस्ताव सभा के मतदान के लिए एक साथ रखता हूं।

उपाध्यक्ष महोक्य द्वारा सभी कटौती प्रस्ताव मतदान के लिए राष्ट्रे गये ख्रौर ग्रस्वीकृत हुए।

The Cut motions were put and negatived.

उपाध्यक्ष महोदय द्वारा उद्योग संत्रालय की निम्नलिखित मांगें मृतदान के लिए रखी गई म्रोर स्वीकृत हुई :

भीर्षक मांग अनुदान की मांग की राशि जो सभा द्वारा संख्या स्वीकृत हुई पूजी राजस्व रु० रु० उच्चोग मंत्रालय उद्योग मंत्रालय 62. 2, 11, 74, 000 उद्योग 63. 15,87,37,000 1,47,74,79,000 मामीण और सघु उद्योग . 64. 28, 42, 56, 000 25,85,55,000

The following demands in respect of Ministry of Industry were put and adopted

श्रम मंत्रालय

उपाध्यक्ष महोदय: यह सभा श्रव श्रम मंत्रालय से सम्बन्धित श्रनुदानों की मांग संख्या 68 और 69 पर विचार श्रीर मतदान करेगी जिसके लिए 6 घंटे नियत किये गये हैं। जो सदस्य इनसे

[उपाध्यक्ष महोदय]

सम्बन्धित अपने परिचालित कटौती प्रस्ताव प्रस्तुत करना चाहें, वे कटौती प्रस्ताव की ऋम संख्या दर्शाते हुए सभा पटल पर अपनी पर्ची पहुंचा दें।

श्री वसन्त साठे (ग्रकोला) श्रम मंत्रालय के पास ग्राज बेरोजगारी की समस्या की स्पष्ट तस्वीर सामने है ग्रीर यदि मंत्री महोदय स्वयं ग्रपने द्वारा घोषित कार्यक्रमों तथा नीतियों को क्रियान्वित कर सकें तो इस समस्या को हल करने के मार्गोपाय भी बिल्कुल स्पष्ट हैं। मंत्रालय के प्रतिवेदन, भाग 2, से स्पष्ट है कि सरकार के पास प्रशिक्षण के व्यापक कार्यक्रम हैं। जहां तक रोजगार का सम्बन्ध है हमें ज्ञात है कि संगठित क्षेत्र में मार्च, 1975 के ग्रन्त में रोजगार प्राप्त व्यक्तियों की संख्या 196.71 लाख थी जो 31 मार्च, 1976 को बढ़कर 202.07 लाख हो गई। सरकारी क्षेत्र में 128.68 लाख ग्रीर निजी क्षेत्र में 68.4 लाख व्यक्ति नियोजित हैं। प्रतिवेदन के ग्रनुसार रोजगार कार्यालयों के चालू र्राजस्टर में रोजगार इच्छुक व्यक्तियों की संख्या 5.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई है ग्रर्थात् ऐसे व्यक्तियों की संख्या दिसम्बर 1975 में 93.26 लाख से बढ़कर दिसम्बर 1976 में 98.13 लाख हो गई है। वर्ष 1976 के दौरान केवल 4.91 लाख व्यक्तियों को ही रोजगार दिलाया गया। शिक्षित बेरोजगारों की संख्या काफी बढ़ गई है। जून, 1975 में 43.42 लाख शिक्षित बेरोजगार थे जो बढ़कर जून, 1976 में 49.34 लाख पहुंच गई।

श्री सोन् सिंह पाटिल पीठासीन हुए। Shri Sonu Singh Patil in the Chair.

जहां तक अनुसूचित जातियों के व्यक्तियों का सम्बन्ध है, लगभग 13.3 लाख व्यक्तियों में से केवल 38,508 व्यक्तियों को ही रोजगार मिला है। इससे पता लगता है कि हमने तो रोजगार की समस्या को किचित मात्र भी हल नहीं किया है।

इस समस्या को वास्तिवक रूप से हल करने के लिए हमें संगठित क्षेत्र के बजाय ग्रामीण क्षेत्र ग्रीर लघु उद्योगों पर ध्यान देना होगा क्योंकि संगठित क्षेत्र में नियोजन चरम स्थिति पर पहुंच चुका है। यदि उद्योग ग्रीर श्रम मंत्रालय ग्रन्य मंत्रालयों के साथ मिलकर काम करें तो यह बेरोज-गारी की समस्या को हल करना ग्रसम्भव नहीं है। हम ग्रामीण क्षेत्रों में मूल उपभोक्ता वस्तुग्रों का उत्पादन बढ़ा सकते हैं। इस देश में संसाधनों की कमी नहीं है। मुर्गी-पालन, खाद्य-पदार्थों, सब्जियों, हाथ-करघा वस्तुग्रों ग्रादि का उत्पादन ग्रन्य कृषि ग्राधारित उद्योगों के उत्पादों के साथ-साथ बढ़ाया जा सकता है। लेकिन हमें इस सम्बद्ध में ग्राधिक बाजार की दृष्टि से भी विचार करना होगा। शहरी क्षेत्रों के बाजार तक क्रय-शक्ति सीमित है।

ग्रामीण क्षेत्रों या छोटे नगरों में स्थित लघु उद्योगों के सामने कच्चे माल की उपलब्धि ग्रौर उत्पादित वस्तुग्रों के विपणन की समस्या है। यदि हम ग्रावश्यक वस्तुग्रों के सम्पूर्ण राष्ट्रीय विपणन पर नियंत्रण कर सकें, तथा देश में बहुराष्ट्रीय ग्रौर एकाधिकारी उत्पादकों के साथ स्पर्धा समाप्त करें तो हम लघु उद्योगों के उत्पादों का विक्रय बहुत ग्रिधिक बढ़ा सकते हैं। चूकि देश में सरकार ही सबसे बड़ी केता है, इसलिए उसे ही ग्रपनी ग्रावश्यकता की वस्तुएं लघु उद्योगों से खरीद कर लघु उद्योग क्षेत्र को प्रोत्साहित करना चाहिए। यदि ग्रामीण क्षेत्रों में लघु उद्योग उत्पादन ग्रारम्भ करेंगे तो वहां लोगों के हाथों में क्रय-शक्ति ग्रायेगी ग्रौर इस प्रकार विपणन क्षेत्र भी वहीं उपलब्ध होगा।

हाथ-करवर कपड़ा अच्छी किस्म का बड़े पैमाने पर तैयार किया जा सकता है, यदि हाथ-करघा बुनकरों को कताई मिलें सूत उपलब्ध करें। सरकार हाथ-करघा उद्योग के प्रति सहानुभूति तो दिखाती रही है, परन्तु उन्हें म्रपने उत्पाद का विपणन करने के लिए बड़े म्रौद्योगिक प्रतिष्ठानों की प्रतिस्पर्धा पर छोड़ दिया जाता है। म्रतः विपणन की सुविधा देकर म्रावश्यक वस्तुम्रों के उत्पादकों को राहत पहुंचायी जा सकती है म्रौर बड़े पैमाने पर ोजगार उपलब्ध कराया जा सकता है।

यदि हम वास्तव में रोजगार उपलब्ध कराना चाहते हैं तो उपभोक्ता या स्रावश्यक वस्तुस्रों का उत्पादन लघु स्रौर ग्रामोद्योगों के लिए सुरक्षित करना होगा। सरकारी क्षेत्र में तो स्राधार वस्तुस्रों स्रौर इस्पात, कोयला, सीमेंट, उर्वरक, विद्युत ग्रादि कच्चे माल का उत्पादन होता, लेकिन मुनाफा देने वाली वस्तुस्रों का उत्पादन निजी क्षेत्र में है जो मुख्यतः बड़े पैमाने के उत्पादक हैं। ये उत्पादक केवल ऐसे वर्ग के लिए उत्पादन करते हैं जिसके पास क्रय-शक्ति है स्रौर इस प्रकार लाभ कमाते हैं। यह लाभ निजी क्षेत्र में कुछ ही हाथों में इकट्ठा होता जा रहा है। इस प्रकार धनी स्रौर स्रधिक धनवान बनता जा रहा है जबिक निर्धनता के स्तर से भी निचला जीवन बिताने वालों की संख्या, जो स्रब देश में 60 प्रतिशत तक हो गई है, बढ़ती जा रही है। इसका कारण यह है कि हमारी सम्पूर्ण स्रर्थ-व्यवस्था केवल 2 करोड़ लोगों के हाथ में ही है, भारत की 60 करोड़ जनता के हाथों में नहीं। हमें बेरोजगारी की समस्या हल करने के लिए भारत की 60 करोड़ जनता के संदर्भ में सोचना होगा। तभी हम स्रपने संसाधनों का समुचित उपयोग कर सकेंगे।

राष्ट्रीय सेवा कार्यक्रम के अन्तर्गत हमें अपने युवकों को राजस्थान नहर योजना, चम्बल घाटी योजना जैसी राष्ट्र निर्माण वाली परियोजनाओं में लगाना होगा। तभी हम लाखों नवयुवकों को काम पर लगा सकेंगे और इनके पूरा होने पर उन्हें रोजगार दे सकेंगे।

प्रशिक्षु योजना उन लोगों को रोजगार देने में ग्रसफल रही है जिन्होंने ग्रंपना प्रशिक्षु कार्यकाल पूरा कर लिया है। ऐसा क्यों है? क्योंकि रोजगार की उपलब्धता ग्रौर रोजगार तलाश करने बाले व्यक्तियों के बीच कोई समन्वय नहीं है।

सरकार को उन लोगों के लिए नियोजन की ग्रधिकतम ग्रायु सीमा बढ़ाने का विचार करना चाहिए जो रोजगार के चालू रिजस्टरों में पंजीकृत चले ग्रा रहे हैं। उन्हें उतने ही वर्ष की ग्रायु-सीमा में छूट दी जानी चाहिए जितने वर्षों से वे रोजगार कार्यालयों के रिजस्टरों में पंजीकृत है।

15 लाख महिलाओं में से, जो रीजगार की तलाश में हैं, केवल 58,000 महिलाओं को रोजगार मिल पाया है। सरकार को विशेषकर महिलाओं, समाज के निर्बल वर्गों तथा अनुसूचित जातियों एव जनजातियों के लोगों के लिए रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से ग्रामीण ग्रौर शहरी क्षेत्रों में स्वनियोजन वाले विभिन्न धंधे उत्पन्न करने होंगे।

हमें एक ही व्यापक श्रम कानून संहिता अपनानी चाहिए। इस समय श्रम कानून ऐसे हैं कि वे एक दूसरे कानून को निरस्त कर देते हैं। इनमें न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, मजदूरी संदाय अधिनियम, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, श्रादि ेसे विधान हैं कि सरकार जब किसी मामले में कोई एक निर्णय लेती है तो वह दूसरे मामले में विरुद्ध हो जाता है। अतः श्रम सम्बन्धी एक व्यापक कानून संहिता होनी चाहिए इससे अनेक समस्याए इल हो जायेंगी। इस संहिता में नियोजक तथा कर्मचारी सम्बन्ध भी शामिल किये जाने चाहिए।

हम रुग्ण मिलों का लाभ में चलने वार्ल मिलों के साथ वयों विलय करें। इसके बजाय हमें श्रमिकों को शेयरधारी बनने तथा रुग्ण मिलों के लाने की ग्रनुमित देनी चाहिए। उन्हें ग्रपनी [श्री वसन्त साठे]

भविष्य निधि को शेयर पूंजी के रूप में प्रयुक्त करने ग्रौर उस एकक को श्रमिकों की ग्रौद्योगिक एकक के रूप में चलाये जाने की ग्रनुमति देनी चाहिए।

इस देश में श्रिमकों के मन में सहभागीदारी की भावना पैदा करनी चाहिए। प्रबन्धक मण्डल में कम से कम एक तिहाई सदस्यता श्रिमकों के निर्वाचित प्रतिनिधियों को मिलनी चाहिए श्रीर एक तिहाई सदस्य वित्तीय संस्थाओं के होने चाहिए। सरकार निजी उद्योगों को 80 प्रतिशत धन देती है ग्रतः उनके प्रबन्धक मंडल में सरकार को एक-तिहाई प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। तभी हम निजी उद्योगों की उत्पादन गतिविधि को विनियमित तथा नियंत्रित कर सकेंगे और उन्हें वास्तविक लाभ छिपाने से रोक सकेंगे।

उत्पादकता या उत्पादन से जब बोनस को ग्रसम्बद्ध रखा जाता है तो वह स्थिति ग्रच्छी नहीं होती। बोनस उत्पादन पर निर्भर होना चाहिए। यह तभी हो सकता है जब श्रमिकों को प्रबन्ध व्यवस्था में भागीदार बनाया जाये।

रोजगार सांख्यकीय ब्यूरो का कार्यालय शिमला में है। इसे किसी केन्द्रीय स्थान जैसे कि नागपुर या हैदराबाद में स्थानान्तरित कर देना चाहिए।

हमारा मुख्य ध्येय यह होना चाहिए कि देश में अधिक से अधिक लोगों को अपने ही गृह-द्वार पर उत्पादक-कार्य मिले और समूची विपणन गतिविधि विपणन सम्बन्धी किसी राष्ट्रीय निगम के अधीन लाकर विनियमित की जाये।

श्रम मंत्रालय की मांगों के सम्बन्ध में निम्नलिखित कटौती प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए

मांग संख्या	कटौती प्रस्ताव संख्या	प्रस्तावक का नाम	कटौती का ग्राधार	कटौती की राम्नि
1	2	3	4	5
68 68	2	श्री शिब्बनलाल सक्सेना स्टेच	भृतपूर्व मंत्री स्वर्गीय श्री कुमार- मंगलम द्वारा दिये गये इस आप्रवासन को लागू करने में असफलता कि मोरखपुर श्रमिक दिपो कोयला खानों और अन्य उपक्रमों को श्रमिक उपलब्ध कराता रहेगा। गोरखपुर श्रमिक डिपो के दो अस्पताल वार्डों को उत्तर प्रदेश	राशि को कम करके 1 रुपया
			सरकार को दिये जाने के प्रस्ताव पर पुनिक्चार करने में ग्रसफलता जबिक श्रमिक डिपो को गम्भीर हालत वाले रोगियों के लिये उनकी ग्रत्यन्त ग्राव- ग्यकता है।	

20 आषाढ़, 1899 (शक)			अनुदानों की म	गंगें, 1977-78
1	2	3	4	5
68	3 %	ी शिब्बन लाल सक्सेना	खनकों ग्रौर उनके परिवारों के	राशिको कम करके एक रुपया किया जाये।
68	5	तदेव	महाबीर जूट मिल्स, सहजनवा, जिला गोरखपुर के एक हजार बर्खास्तश्रमिकों को पुनः बहाल करने में ग्रसफलता।	राशि में से 100 रुपये घटा दिये जाएं।
€9	14 ·	श्री पी० सजमोपाल नामङ्	श् रमि क कानूनों को लागृ करने में श्रसफलता ।	तदेव
69	15	त्त्देव	दिस्त्री में इण्डियन एक्स्फ्रेस के प्रबन्धकों को ग्रपनी फर्म बन्द करने से रोकने में ग्रसफलता।	तदेव़
69	16	त्देव	श्रौद्योगिक विवादों को हल करने में भारी विलम्ब ।	तदेव
€9	17	तदेव	स्नामीण क्षेत्रों में कृषि मजदूरों के लिये न्यूनतम सजदूरी देने की स्रावश्यकता।	तदेव
69	18	तदेव	खानों में दुर्घटनायें रोकने की स्रावश्यकता।	तदेव
69	19	'ब्रह्मेन'	ख़ान बचाव सेवाग्रों को ग्राधुनिक बनाने की ग्रावश्यकता।	तदेव
6.9	20	तदेव	श्रमिक कल्याण के लिये ग्रिधिक धन व्यय करने की ग्रावश्य- कता।	तदेव
69	21	तदेव	श्रधिनियम के उपबन्धों के श्रनुसार अगैद्योगिक संस्कानों में श्रमिक श्रधिकारी नियुक्त करने की श्रावक्यकता।	तदेव

1	2	4	5	5
69	22	श्री पी० राजगोपाल नायडू	कर्मचारी भविष्य निधि स्रधिनियम को सही ढंग से लागू करने की स्रावश्यकता ।	
69	23	तदेव	केन्द्रीय कोयला खान बचाव केन्द्र निधि को लाभकारी ढंग से व्यय करने की ग्रावश्यकता ।	तदेव
69	24	तदेव	रोजगार कार्यालय में कारीगरों ग्रौर कुशल मजदूरों जैसे राज- मिस्त्रियों का पंजीकरण किये जाने की ग्रावश्यकता ।	तदेव
69	25	तदेव	सभी कारखाना मजदूरों को मकान देने की ग्रावश्यकता ।	तदेव
68	26	श्री के० ए० राजन	स्रनिवार्य जमा योजना के स्रधीन श्रमिकों से लिये गये धन की पूरी राशि लौटाने में स्रसफलता	राशि को कम करके 1 रुपया किया जाए।
68 -	27	तदेव	देश के लिये नये श्रौद्योगिक संबंधों सम्बन्धी विधान के प्रश्न की जांच के लिये समिति गठित करने में विलम्ब ।	तदेव
68	28	तदेव	8.33 प्रतिशत न्यूनतम बोनस की अदायगी सुनिश्चित करने में असफलता।	तदेव
68	29	तदेव	सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों तथा रेलवे के सभी कर्मचारियों को बोनस का ग्रधिकार देने में ग्रसफलता।	तदेव
68	30	तदेव	कर्मचारी राज्य बीमा योजना को नई शक्ति प्रदान करने तथा प्रशासन ग्रौर चिकित्सा कर्म- चारियों में कदाचार रोकने की ग्रावश्यकता।	रुपए घटा दिये
68	31	तदेव	छठी योजना पर चर्चा के सभी चरणों में श्रम श्रमिकों को सम्बद्ध करने की ग्रावश्यकता।	तदेव

1	2	3	4 5
68	32	श्री के० ए० राजन	भविष्य निधि की देय राशि लौटाने राशि में से 100 में विलम्ब न करने की स्राव- रुपए घटा दिये श्यकता। जाए।
68	33	तदेव	सभी स्तरों पर समझौता तथा तदेव श्रौद्योगिक सम्बन्ध तंत्र को चुस्त-दुरुस्त बनाकर श्रम संबंधी विवाद निपटाने के लिये कदम उठाने की श्रावश्यकता।
68	34	तदेव	गुप्त मतदान द्वारा श्रमिक संघों तदेव को मान्यता देने का तरीका निकालने की ग्रावश्यकता ।
· 69	36	तदेव	पूरी तरह बन्द पड़े, तालाबन्दी राशि को कम वाले या ग्रंशतः बन्द पड़े कार- करके 1 रुपया खानों के पुनः खोले जाने केलिये किया जाए। तथा कर्मचारियों को रोजगार की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये कदम उठाने में ग्रसफलता।
69	37	तदेव	उन सभी नियोजकों के विरुद्ध तदेव कानूनी कार्यवाही करने में ग्रसफलता जिन्होंने ग्रपने कार- खाने बन्द कर दिये हैं या उनमें तालाबन्दी कर दी है जिससे कि रोजगार ग्रौर उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।
··69	42	तदेव	देश भर में श्रमिक रोजगार कार्या- राशि में से 100 लयों में व्याप्त कदाचार रोकने रुपए घटा दिये की ग्रावश्यकता। जाएं।
68	94	तदेव 🖊	राष्ट्रीय मजदूरी नीति बनाने तथा राशि को कम ग्रावश्यकता पर ग्राधारित करके 1 रुपया न्यूनतम राष्ट्रीय मजदूरी सुनि- किया जाए। श्चित करने में विलम्ब।
68	95	तदेव	गैर-सरकारी तथा सरकारी दोनों तदेव क्षेतों में 8.33 प्रतिशत न्यून- तम बोनस देना सुनिश्चित करने में विफलता।

1	2	3	4	5
68	96	तदेव	जीवन बीमा निगम के प्रबन्धकों तथा कर्मचारियों के बीच हुए करार को मानने में विफलता	त देव ्
68	97	तदेव	बन्धक श्रमिकों को, जिन्हें छूट- कारादिलायागया है, रोजगार देने के लिये एक योजना बनाने में विफलता।	तदेव
68	98	तदेव	बन्धक श्रम पद्धति (उत्सादन) ग्रिधिनियम के कार्यान्वयन में तेजी लाने की ग्रावश्यकता।	राशि में से 100 रुपए घटा दिये जाएं।
68	99	तदेव	जयपुर उद्योग लिमिटेड के कर्म- चारियों के मामलों को तय करने में विफलता।	तदेव
68	100	श्री के० ए० राजन	कलर्कों ग्रौर विशेष सहायकों की पदोन्नति की नीति सम्बन्धी करार के बारे में पंजाब नेशनल बैंके कर्मचारियों की समस्याग्रों को हल करने में विफलता।	तदेव
68	101	तदे व	मजदूरों के कल्याण के लिये सभी ग्रौद्योगिक उद्यमों में सस्ते मूल्यों पर ग्रावश्यक वस्तुएं सप्लाई करने के लिये उचित मूल्य की दुकानें खोलने की ग्रावश्यकता।	तदेव
68	102	तदेव	कर्मचारी राज्य बीमा और कर्म- चारी भविष्य निधि की ग्रदा- यगी नियमित रूप से न करने वाले नियोजकों के विरुद्ध ग्रिधिक कठोर कार्यवाही करने की ग्रावश्यकता।	तदेव
68	35	श्रीमती पार्वती कृष्ण न ्	ग्लेवसो लिमिटेड, बम्बई के कर्म- चारियों की मांगें निपटाने और दंडित कर्मचारियों की बहाली के ग्रादेश देने की ग्रावश्यकता।	तदेव

1	2	3	4	5
68	92	श्री एनं० श्रीकान्तन नायर	श्रौद्योगिक विवादों को पंच फैसले के लिये सौंपने में सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों के कर्मचारियों के साथ भेदभाव-पूर्ण व्यवहार।	
68	93	तदेव	श्रम मंद्रालय जिन ग्रौद्योगिक विवादों को न्यायसंगत ग्रौर उचित समझता है उन्हें न्याय- निर्णय के लिए सौंपने के बारे में नियोजक मंत्रालयों तथा विभागों को पूर्ण निषेधाधिकार देना।	तदेव
68	103	श्री वयालार रवि	श्रौद्योगिक विवादों को न्यायाधि- करण को सौंपने में सार्व- जनिक क्षेत्र के कर्मचारियों के विरुद्ध भेद-भाव।	•
68	104	तदेव	जब भी श्रम मंत्रालय ठीक समझे ग्रौद्योगिक विवादों को न्याया- धिकरण को सौंपने सम्बन्धी किसी भी निर्णय को वीटो करने का पूर्ण ग्रधिकार सार्व- जनिक क्षेत्र के सम्बन्धित मंत्रालयों को देना।	तदेव
68	105	तदेव	सभी श्रमिकों को 8 ¹ 3 प्रतिशत बोनस की घोषणा करने में ग्रसफलता।	तदेवं
68	106	तदेव	बोनस को स्थगित वेतन के रूप में देने की घोषणा करने में ग्रसफलता।	तदेव
68	107	तदेव	कर्मचारी राज्य बीमा योजना श्रमिकों को स्वीकार्य बनाने में ग्रसफलता।	तदेव
68	108	तदेव	कर्मचारी राज्य बीमा योजना के मुकाबले में बेहतर चिकित्सा सुविधाएं देने में ग्रसफलता ।	नदेव

1	2	3	4	5
68	109	श्री वयालर रिव	कर्मचारी राज्य बीमा योजना का कार्यचालन ग्रौर श्रमिकों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं देने में इसकी ग्रसफलता ।	रुपये घटा दिये
68	110	तदेव	इंस्टुमेंटेशन लिमिटेड, पालघाट के श्रमिकों की कर्मचारी राज्य बीमा योजना से छूट देने सम्बन्धी मांग को स्वीकार करने में ग्रसफलता।	तदेव
68	111	तदेव	श्रमिकों में बढ़ रहे ग्रसन्तोष को दूर करने में ग्रसफलता ।	तदेव
68	112	तदेव	श्रम विवादों सम्बन्धी एक व्यापक विधान बनाने में ग्रसफलता।	तदेव

Shri Ram Dhari Shastri (Padrauna): Before Janata Party came into power emergency was clamped in the country. During this period of emergency the working class was most hit. The workers had suffered the most. The percentage of bonus was reduced from 8.33 to 4. Not only that the bonus was left to the discretion of the employers which they could deny in case their factories ran into loss. In some cases the dear-ness allowance of the employees of sugar mills was taken back. The result was that they were very much discontented. Now when the Janata Party has come into power it is the duty of the labour Ministry to restore confidence among workers. I hope that all the problems of the workers will be removed now by and by.

In the election manifesto the Janata Party had said "1. Janata Party's economic programme envisages deletion of property as a fundamental right. 2. Affirmation of the right to work and full employment strategy". The Government should now take effective steps to undertake the above mention work.

Shri Sathe has tried to prove with statistics that unemployment is increasing in our country. It is assuming alarming proportions. The number of persons who got their names registered in Employment Exchanges in 1950 was only 3.33 lakhs. This number increased to 6.92 lakhs in 1955, 16 lakhs in 1960, 25 lakhs in 1965, 34 lakhs in 1969, 82 lakhs in 1973, 84 lakhs in 1974, 93 lakhs in 1975 and 97.7 lakhs in 1976. Some immediate steps should be taken to solve this problem. We cannot depend on Cottage industries because it will take a long time to set up them. If immediate steps are not taken to solve this unemployment problem it will go out of our hands.

At present 34.20 lakhs persons are employed in public sector undertakings and 67.19 lakhs in private sector undertakings. Their capacity to provide employment is limited. Small scale and cottage industries should be developed in order to provide employment to the increasing population of the country.

I would also like to give one suggestion in this regard. At present a worker has to work for eight hours in a day in a factory. This period should be reduced from eight hours to six hours. In the past whenever any commission was appointed it always recommended that if working hours are reduced it would result in increased efficiency. The National Commission on Labour which had submitted its report in 1968 on the basis of the recommendation made by International Labour Organisation had also recommended that working hours should be brought down from 45 hours to 40 hours a week. In other countries the working hours are less than in India. There they range from 35 to 30 hours a week. In Australia the working hours are 35.8 per week while in Denmark the working hours are 33.4 per week. Thus our Government also should take steps to reduce working hours from eight to six in a day. It will have its impact on employment immediately. This step will immediately provide employment to one lakh persons.

Now I would like to say something on the issue of bonus also. First of all the bonus was paid to the workers as war bonus in the First World War. Then during the pre-emergency period it was paid at the rate of 8·33 per cent. During the emergency it was reduced from 8·33 per cent to 4 per cent. Not only that it was left at the mercy of the industrialists. I think that the bonus should be linked with production instead of with the profit. By adopting this policy we can do justice with the workers.

In India Ferozabad is a big centre of bangles. There are may factories in Ferozabad which manufacture bangles. But the condition of workers of these factories is far from satisfactory. There is need to make improvements in their working conditions. They should be provided housing facilities. Arrangements should be made for the education of their children. There is a provision in the Factories Act to provide these facilities to the workers. But factory owners do not implement these provisions. Our Government should do something in this regard. There are different labour laws in different States. All these laws should be codified.

The present position is that in case a worker is dismissed from his service he cannot make an appeal against his dismissal. He can make an appeal only with the permission of the factory owner. The workers should have a right to make an appeal even to the highest court.

The living standard of the workers is very low in our country. In cities like Kanpur and Delhi most of the workers are facing lot of difficulties. In order to know the difficulties of these workers Government should make a survey and on the basis of this survey steps should be taken to remove these difficulties.

Now I come to the point of equal pay for equal work. The Janata Government should take steps in this regard immediately. In all the big industries of the country there should be uniform wages. In banks also there should be uniformity in pay scales. Similarly in Government service also there should be national pay scale.

Our labour laws are in favour of employers. This is the reason that they are discipline breakers. During the period of emergency they were the first to break discipline. Thus I would request Janata Party Government to make labour laws labour-oriented. With these words I support the demands of labour Ministry.

Shri Ugrasen (Deoria): I rise to support the Demands for Grants in respect of the Ministry of Labour.

It has been observed from the reports and other publications of the Ministry that they contain only the statistical data about the various problems being faced by the country. I think, all the problems concerning millions of labourers in the country should be fully analysed and the steps which have already been taken and proposed to be taken in future by Government should also be mentioned in these reports etc. Unless this is done, we will not be able to make any useful suggestions in this regard.

To-day we find that purchasing power of labourers has decreased. It is because of our anomalous laws which are pro-capitalists and anti-labour. This is actually the result of the labour policy adopted by the previous Government in the past. Hon. Members Sarvashri Sathe and Shastri have rightly said that necessary changes should be brought about in order to protect the interests of the workers.

The big industrialists like Tatas, Birlas, Singhanias, Bajajs etc. have started shifting their machinery from big cities to other towns. The owners of the Delhi Cloth Mills are shifting their machinery to Dasna because here in Delhi wages are higher. Here the minimum wage of worker is from Rs. 350/- to Rs. 400'- whereas in Dasna it is in the range of Rs. 200!- to Rs 250/- As a result, the workers in Delhi are being removed from service on one or the other pretex t. This is happening in Delhi in spite of the assurances given by the various agencies like Congress party, Indian Labour Conferences, I.L.O. etc from time to time to the effect that the interests of the workers will be safeguarded. Even the Industrial Disputes Act, 1947 and the amendments made therein during 1976 have not provided necessary protection to the workers. As a matter of fact this Act protects the interests of industrialists. This is true keeping in view what is happening in textile and other mills.

It is said that these are sick mills and their number comes to about 120 including Textile and sugar mills. It is, therefore, suggested that all the big mills in our country should be nationalised and in case of those mills where the owners have earned huge profits, no compensation should be paid.

[Shri Ugrasen]

It is regretted that out of 91,642 bonded labourers freed during 1976, only 25 per cent out of them have been resettled. The remaining 75 per cent have started begging in the temples. They should be rehabilitated expeditiously.

It is strange that crores of agricultural workers have been deprived of the benefits of the Minimum Wages Act. In certain factories also minimum wages are not being paid to the workers. This should be looked into.

In 1976, man-days to the extent of 11.48 million were lost. The number of lockouts in public undertakings was 17 per cent in 1974 whereas in 1976 it was 79 per cent. Thus in emergency the number of lock-outs rose very high. All this was due to wrong policies of the previous Government.

Similarly the previous government enacted a law 1965 granting a minimum bonus of 8.33 per cent but the same was changed in 1976 and thus the workers were deprived of the bonus. It is good that the Government is going to review this question. Payment of bonus should be made obligatory both in public as well as private sectors.

So far as unemployment is concerned, I think, working hours in factories should be reduced from 8 hours to 6 hours. This will definitely help us to some extent.

It is correct that we have made progress. But on the other hand we find that there are as many as four crore unemployed persons. In 1952 only 38 per cent of the people were below the poverty line but now their number has increased to 78 per cent. Unless poverty is banished from the country, there can be no change in the condition of our country.

The amount of Rs. 250/- proposed to be paid to the families of the workers who died as a result of accidents in the Saunda and Sudamadih Collieries in 1976, is very meagre.

On the one hand there is resentment among the workers and on the other hand there is decrease in the production. It is, therefore, necessary that industrial relations should be improved. There should be one union in one industry. Active participation of workers in the management should be ensured. Minimum Wages Act should be strictly enforced. Industrial Disputes Act should be smended in the interest of the workers. Besides Labour Committees Should be formed at national and State levels.

Shrimati Ahilya P. Rangnekar (Bornbay North Central): It is good that Apex Body has been changed in order to give representation to all the unions. Previously there were representatives of only those unions which supported the Congress during emergency.

श्री एम० सत्यनारायण राव पीठासीन हुए Shri M. Satyanarayan Rao in the chair

Secondly, the circular issued by the Ministry to take all those workers who were detained under MISA during the emergency, is welcome. It is also good that a committee on industrial relations has been formed.

It has been accepted by the Janata Party in its manifesto that bonus is a deferred wage. There is great excitement among the workers on the question of bonus. I am, therefore, sure that the Minister will make an announcement about the Government's decision on bonus in the course of his reply.

The contention that if CDS money is refunded to the employees, there will be inflation in the country, is wrong. Because when the Government had impounded Rs. 1500 crores, even then the prices went on rising. In order to contain inflation and to control prices, it is necessary that operation of black money should be controlled. With holding of CDS money is not going to help us in this matter. This money should therefore be refunded to the workers.

In the report, which was perhaps prepared by the former Government, all the statistics have been given to highlight the activities of the mill-owners. There is no mention of the activities of the workers. There was a loss of 90 per cent of man-days during May, 1976 against a loss of 54 per cent of man-days during the whole year of 1973. Actually, the mill-owners were responsible for loss of such a high percentage of man-days. Industrialists and capitalists have actually taken full advantage of the emergency. It is therefore wrong to say that workers were responsible for bringing down production. There is an exaggerated praise of the 20 point

programme in the report. The Ministry should have either changed the report of the previous Government or a supplementary report should have been issued highlighting the misdeeds of the previous Government.

During the emergency, owners resorted to lock outs in contravention of the provisions of the Industrial Disputes Act but no action was taken against them. None of them was put behind the bars. Even now the same old policy is being persued by the present Government. Legal action should be taken against those who are still resorting to lock outs otherwise workers will not be able to get justice. It is regretted that no legal action has been taken against the lock-out in the Indian Express. Steps should be taken to end all those lock-outs which are still going on in the country.

In Rourkela about seven workers were retrenched six years back. They have not been able to get justice from the labour court. Even if any case is decided in favour of workers, the owners take such a case to the Supreme Court with the result that workers go on suffering during all these years. Moreover Labour courts and Labour Officers always help owners. Unless this machinery is changed, there will be no improvement in the industrial relations.

It has been said in the Ministry's report that there were 91,642 bonded labourers in the country out of which 90,704 have been freed. I think, the total figure given in the report is not correct. Actually their number is much higher. Even now there are bonded labourers in Dhulia and Thana district in Maharashtra. Dr Kirpa Shankar, a Research Professor in Varanasi, who i quired into the conditions of the bonded labourers in U.P. has come to the conclusion that there has been no improvement in the conditions of bonded labourers there. It is, therefore, wrong to say, as has been claimed in the report, that there is now no bonded labourer in the country.

It is regretted that the Minimum wages Act has not been made applicable to agricultural workers. As a result, an agricultural worker in the Union Territory of Dadra and Nagar Haveli gets only Rs. 2.34 per day as wage which is lowest in the country. Whereas a skilled worker is paid Rs. 4.50 per day. There should be some increase in the minimum wage of the agricultural worker. These who are unable to get any work, should be given some compensation. Otherwise there will be no improvement in their condition.

The mill owners are not contributing their share towards the provident fund of the workers even though they collect worker's share. As a result, a sum of Rs. 15 crores is due from them as arrear. So far no action has been taken by Government to recover this amount. The Minister should look into this matter.

According to the Inquiry Commission's report on Chasnala accident, which has recently been released, four officers have been found guilty of negligence. But so far no action has been taken against them. On the contrary, efforts are being made to save them. This matter should be looked into.

Contractors pay Rs. 5 to a worker against Rs. 9 which they get. In order to end this exploitation of workers, contract system should be abolished. A Bill to this effect should immediately be passed.

Recognition of Unions should be made by secret ballot system.

There is a great discrimination against women workers. They are not paid wages equal to men. This injustice against them should be ended.

Automation increases unemployment. We should not go in for it. We should make use of our man-power.

Anti-labour circulars issued during the emergency should be withdrawn. The agreement with the life Insurance corporation employees should be restored.

श्री जी० नरिसम्हा रेड्डी (ग्रादिलाबाद) : सभापित महोदय, हमारे जैसे विकासशील देश में ग्रौद्योगिक श्रमिकों ग्रौर प्रबन्धकों के बीच सम्बन्ध की बात है । इनके बीच सम्बन्ध ग्रच्छे नहीं हैं। इसीलिए श्रमिक हड़ताल करते हैं, जिसके फलस्वरूप उत्पादन में गिरावट ग्राती है। ग्रतः सरकार चाहे कोई क्यों न हो, उसका लक्ष्य श्रमिकों ग्रौर प्रबन्धकों के बीच ग्रच्छे सम्बन्ध कायम करना होना चाहिए।

[श्री जी० नरसिम्हा रेड्डी]

मैं ऐसा महसूस करता हूं कि हमारी श्रम नीति कुछ गलत है। कृषि श्रमिक संगठित नहीं है। यह सबसे बड़ा श्रमिक दल है। यदि ये श्रमिक संगठित होकर हड़ताल कर दें तो इस राष्ट्र का वया होगा? ऐसी स्थिति से बचने के लिए सरकार को हर सम्भव कार्यवाही करनी चाहिए। एक ही प्रकार के उद्योग में काम करने वाले श्रमिकों को समान मजदूरी मिलनी चाहिए।

बोड़ी उद्योग से देश के 20 लाख परिवारों को काम मिलता है। इस उद्योग में सबसे अधिक संख्या में महिलायें काम करती हैं। इस उद्योग से उत्पाद शुल्क के रूप में 150 करोड़ रुपये की आय होती है। हाल ही में श्रम उपकर भी लगाया गया है। इससे ही लगभग 5 करोड़ रुपये की आय हो रही है। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यह उद्योग ऐसा है जिसके लिए कोई कारखाना क्षेत्र नहीं है। वे पटरी पर या अपनी छोटी-छोटी झोंपड़ियों में बैठकर बीड़ी बनाते हैं। सरकार को उपकर के माध्यम से 5 करोड़ रुपये मिलते हैं। इसमें 5 करोड़ रुपये और मिलाकर एक आवर्ती कोष बनाया जाना चाहिए। इस राशि से बीड़ी मजदूरों के लिए आवासीय बस्तियां बनाई जा सकती हैं और किराया खरीद के आधार पर उन्हें मकान दिए जा सकते हैं। इस प्रकार हम बीड़ी कर्मकारों की मदद कर सकते हैं। इसी तरह उन्हें चिकित्सा, शिक्षा और अन्य सुविधायें भी प्रदान की जा सकती हैं।

ग्रंत में मैं यह कहना चाहता हूं कि देश में बड़ी कोयला खानें हैं। परन्तु दुर्भाग्य की बात यह है कि कुछ कोयला खानों में श्रमिकों के कल्याण हेतु एकत्र किया जा रहा उपकर स्कूलों की बड़ी इमारतें बनाने के काम में लगाया जा रहा है। उनमें बड़े-बड़े ग्रधिकाारियों के बच्चों को ही प्रवेश मिलता है। इन स्कूलों में श्रमिकों के बच्चों को प्रवेश मिलना चाहिए।

मेरा एक सुझाव यह भी है कि यदि ग्राप चाहते हैं कि उद्योगों का विकास हो ग्रौर कोई श्रमिक समस्या भी न हो तो जहां श्रेणी वार न्यूनतम मजदूरी निर्धारित की जाती है, वहां ग्रत्यावश्यक वस्तुग्रों की कीमतें भी निर्धारित की जानी चाहिएं। इस तरह से श्रमिक ग्रौर प्रबन्धक के बीच मधुर सम्बन्ध कायम किए जा सकते हैं। हमारे विकास कार्यक्रम भी निर्वाधरूप से चल सकते हैं।

Shrimati Chandravati (Bhiwani): Mr. Chairman, the greater the concentration of wealth in a few hands, the larger the extent of poverty in a society. The condition of an unorganised labour, expecially construction workers, kiln workers is very pitiable. They lead a nomadic life. There are no arrangements to provide medical treatment to them and they are thrown out of employment at the slightest pretext. There is no provision of any kind of security to factory workers, even if they are disabled during the course of their employment. Some thought must be given to this situation.

So far as labour courts are concerned, they should include such persons as are impartial and do not favour management.

Steps should also be taken to improve the standard of living of workers. They should be provided better working conditions and they should be given facilities of residential accommodation, medical care, etc. with a view to encouraging them to produce more. Similarly in order to save artisans from exploitation, marketing facilities should be provided to them so that they can sell their goods with a reasonable profit.

There are certain factories, such as cotton textiles and cement, where workers are very much prone to health hazards, but no adequate arrangements exist there for the medical treatment of workers. The management of these factories should be instructed to provide sufficient safeguards to workers. This production in factories will increase.

श्री पी० त्यागराजन (शिवगंगा) : खेतिहर मजदूरों को समुचित वेतन नहीं मिलता है। सरकार भी उनको संरक्षण नहीं देती है। उन्हें वर्ष में केवल 3 या 4 महीने काम मिलता है ग्रीर

शेष 8 महीने **ये बेकार रहते हैं। इस तरह वे ग्रपने बच्चों** को पढ़ा नहीं सकते हैं। वे ग्रपनी दैनिक ग्रावश्यकताएं भी पूरी करने में ग्रसमर्थ हैं।

खेतिहर मजदूरों को संरक्षण मिलना चाहिए । उनके कल्याण के लिए एक कार्यालय होना चाहिए ।

तिमलनाडु में ऐसे बहुत से खेतिहर मजदूर हैं जो बर्मा ग्रौर श्रीलंका से स्वदेश वापस ग्राए हैं। उन्हें न तो कृषि में ग्रौर न ही उद्योग में काम मिला है। देश उनके श्रम का उपयोग नहीं कर रहा है।

कताई ग्रौर बुनाई मिलों में मजदूरों को समुचित संरक्षण नहीं दिया जाता है। उन्हें ग्रावास ग्रौर चिकित्सा सुविधा नहीं दी जाती है। उन्हें न्यूनतम मजदूरी भी नहीं मिलती है। प्रबन्धक 'बदली' मजदूरों को किसी नोटिस या कानूनी कार्यवाही के बिना नौकरी से हटा देते हैं। ग्रधिकांश मजदूरों को ग्रधिक काम करने के लिए विवश किया जाता है। ग्रितिरक्त कार्य करने का उन्हें पैसा भी नहीं दिया जाता है। उन्हें ग्रावास सुविधायें भी उपलब्ध नहीं हैं। उन्हें मिलों में काम करने के लिए बहुत दूर से ग्राना पड़ता है।

सूती मिलों में काम करने वाले मजदूरों को श्रम ग्रिधकारी या प्रबन्धकों द्वारा कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाता है। यदि प्रबन्धकों से उन्हें कोई शिकायत होती है, तो उन्हें श्रम ग्रिधकारी के पास जाना पड़ता है जो प्रबन्धकों के गुमाश्ते होते हैं। ग्रतः श्रम ग्रिधकारी उनके कल्याण के लिए विचार ही नहीं करता है। ग्रीद्योगिक विवादों का निपटारा शीच्र व सही तरीके से नहीं होता है। श्रम न्यायाधिकरण भी उनके मामले शीच्र नहीं निपटाते हैं। इसके किए सरकार को विशेष वर्ग के न्यायाधीश नियुक्त करने चाहिएं। जिलास्तर के ग्रिधकारी भी नियुक्त किए जा सकते हैं। श्रम विवाद उच्च न्यायालय या कुठ ग्रन्य ग्रपीलीय न्यायालयों द्वारा निपटाए जा सकते हैं।

श्रमिकों के कल्याण के लिए जो भी ग्रधिनियम बनाए गए हैं उनसे श्रमिकों को कोई लाभ नहीं होता है इसके विपरीत प्रबन्धकों को उनसे फायदा होता है। मजूरी बोर्ड की सिफारिश प्रबन्धकों के लिए स्वीकार करना जरूरी नहीं है। श्रम मंत्री एक ऐसा कानून बनाएं जिसके ग्रंतर्गत सभी श्रेणियों के श्रमिक ग्रा जाएं।

Shri Y. P. Shastri (Rewa): I support the demands for Grants of the Labour Ministry with the belief that a revolutionary change has come in the attitude of present Government towards labour class. This Government have adopted a new attitude and the whole labour in the country has supported it, and it has created a new zeal among the labour.

The labour laws made by the previous Government could not protect the labour interest. I want the new labour Minister to bring radical changes in them. There is need for it since no affective machinery exists at present to give justice early to labour. The existing laws cannot compel the employers to implement the awards given by arbitrations. The Chief Labour Commissioner is also not competent to do anything in this regard. He can only forward some of the demands of the labour for adjudication. Then the case is referred to a tribunal and ultimately to supreme Court. This is a long process involving lot of expenditure which is is beyond the capacity of the labour to sustain. A provision should, therefore, be made for compulsary arbitration and the award thereof should be binding on both employers and employees. Only then the labour would be able to get justice.

The previous Government did great injustice to labour. The declaration of emergency affected them greatly. Their bonus was suddenly reduced from 8.33% to 4%. At the same time, it was stipulated that only profit earning concerns would pay this amount. Everybody is aware that no big industrialist would like to declare profit as this involves payment of various taxes. They would not like to pay these taxes.

[Shri Y. P. Shastri]

The payment of bonus has been accepted as a principle of deferred payment of wages. In fact, this is the wage they have earned during the past 12 months.

It is said that payment of bonus will 1 ad to inflation. I say this theory is not correct. No body tries to go deep into this question. The labour class is always hand-to-mouth. They can purchase with this money the articles of his minimum needs. He cannot hoard things and earn profit out of it.

On the other hand, the payment of bonus will provide an incentive to the labour. They would work with added interest. The production will go up. This will check inflationary trends. It has been proved that production cannot increase by suppressing the rights of labourers. I want the Labour Minister to announce the payment of bonus immediately.

The money to be paid to the employees on account of compulsory deposit has been transferred to the G.P.F. account of the employees. This is injustice, because it is a payment to be made to them to neutralize the effect of rising prices. But even half of that amount is not being paid to them. Now the amount is being forcibly credited to G.P.F. account of workers. This amount should be paid to workers.

Now I want to invite your attention to the pitiable plight of the workers of unorganised sector who are unable to raise their voice, to ventilate their grievances. The previous Government did not do anything for them. We expect the new Government to do something in this behalf. You would be surprised to know the wages the e workers are getting. In Madhya Pradesh, a P.W.D. labourer gets a wage of Rs. 2.40 per day. A work-charged labourer still gets Rs. 30 per month, a wage decided as early as 1947. Can any one in the world believe this? The previous Government talked much about fixation of minimum wage for agricultural labour. They fixed Rs. 3 to Rs. 4 for this class of labour. As against this the Government department is paying a wage of Rs. 2.43 This is injustice, explaitation. The Janata Party has made promises in their election manifesto. It is hoped that they would take effective steps to stop this kind of expl itation of workers. The Gajendragadkar Commission had recommended in 1974 that minimum need based wage should not be less than Rs. 314. Since then, prices have gor e up considerably. I wish the Janata Government to pay attention to this problem.

Much had been said by the previous Government about abolition of bonded labour. In fact nothing has been done to free their labourers from the clutches of landlords. Their plight is more pitiable now. They do not even have the shelter of Jhuggis as landlords do not allow them to live in their land. Attention should be paid to this question.

It is said that there are about 98 lakhs unemployed people. These are the figures maintained by the employment exchanges. But I feel this figure is not correct. If we make a survey of villages, the number of unemployed persons would not be less then 7 crores.

The problem of unemployment in the country is becoming serious and urgent measures are required to be taken to tackle it, otherwise the position will become explosive. In order to solve their problem, the right to work should be granted as a fundamental right to the youth of this country and even the Constitution may be amended to give this right to them. A provision should be included to grant them unemployment allowances till they are provided with jobs. This will be a historic step and the coming generation will remember the Janata Government for ever.

The previous Government had created unions in factories and production centre which had no influence on the workers. These unions had consided with employers. Only that demand used to be conceded which had the Governmental approval. The workers who used to fight for their right were suppressed. Only INTUC was given recognition. It was said that joint committees would be formed to achieve workers participation in industry at shopfloor and other floor levels. But their committees also included those yesmen only. Now time has come to include in these Committees only those persons who represent workers in a true sense. Only the real representatives of workers should be nominated to these Committees.

There was a discussion here this morning about the sick mills. How these mills become sick? The proprietors eat up all the profits, sell everything and declare mills as sick to get compensation therefor and the responsibility for running these sick mills is passed on to Government. The operation of such mills should be entrusted to workers.

श्री वयालार रिव (चिर्रायकील) : माक्सवादी सदस्य श्रीमती रांगनेकर ने 20-सूत्री कार्यक्रम के कुछ सूत्रों पर ग्रापित जाहिर की है। मैं नहीं समझ सका कि वह बन्धुग्रा मजदूरों की मुवित

कृषि मजदूरों के लिए न्यूनतम मजदूरी ग्रौर कर्मकारों की प्रबन्ध व्यवस्था में भागीदारी जैसे विषयों पर क्यों ग्रापत्ति उठा रही हैं। उनकी पार्टी दो बार बंगाल ग्रौर केरल में सत्ता में रही है, पर वह इन समस्याग्रों का समाधान करने में ग्रसफल रही है। इसके विपरीत 20—सूत्री कार्यक्रम के ग्रन्तर्गत 99,000 बन्धक मजदूरों को मुक्त किया गया। जनता सरकार को लोगों के सामने ये तथ्य रखने चाहिए। (व्यवधान)

इस देश के कर्मकार ग्रन्य लोगों से ग्रधिक जिम्मेदार हैं। इस वर्ग ने ग्रापातस्थित के दौरान बड़ी जिम्मेदारी से काम किया। उन्होंने देश की ग्रर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पर खेद है कि समाचारपत्नों ग्रौर एकाधिकारी नियोजकों द्वारा उन्हें बदनाम किया जाता है। इन लोगों ने ग्रपना दायित्व नहीं निभाया। उन पर पिछली सरकार भी काबून पा सकी।

मंत्रालय के प्रतिवेदन के अनुसार 219 लाख मानव-दिवसों की हानि हुई। 54 से 90 प्रतिशत तक तालाबन्दी के कारण ये मानव-दिवस गंवाए गए। आपात के पिछले एक वर्षके दौरान मालिकों, ने मजदूरों के लिए अधिक से अधिक कठिनाई पैदा करने की कोशिश की। यद्यपि कर्मकारों ने बड़ी जिम्मेदारी से काम किया किर भी निरोजकों ने उन्हें समाचारपत्नों आदि के माध्यम से बदनाम किया। आज उन मजदूरों की हालत खराब है। मैं मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि वे औद्योगिक विवाद अधि-नियम पर पुनर्विचार करें, और उसमें दूरगामी परिवर्तन करें।

इस ग्रधिनियम में विभागीय जांच सम्बन्धी एक उपबन्ध है। इसके ग्रनुसार मालिक ग्रपना ही वकील कर लेते हैं, जांच करवाते हैं ग्रीर कर्मचारियों को बर्खास्त कर देते हैं। ग्रधिनियम में दूसरी कमी यह है कि मालिक के लिए यह ग्रनिवार्य नहीं है कि वह बातचीत के लिए तैयार हो। इसे ग्रनिवार्य किया जाना चाहिए। सरकार को एक कानून बनाना चाहिए जिसके ग्रन्तर्गत नियोजकों को तालाबन्दी, छंटनी करने या जबरी छुट्टी देने से रोका जा सके।

दूसरी बात हड़ताल में पुलिस के हस्तक्षेप से सम्बद्ध है। श्री ज्योतिर्मय बसु ने कहा है कि वह कर्मकारों के विरुद्ध पुलिस इस्तेमाल करेंगे।

श्री रवीन्द्र वर्मा : क्या उन्होंने ऐसा कहा ?

श्री वयालार रिव : जी हां। पुलिस कानून ग्रीर व्यवस्था के नाम पर हस्तक्षेप करती है। प्रत्येक श्रमिक ग्रान्दोलन के पीछे एक पुराना इतिहास है। ग्रभी हाल में जब मार्डन बेकरी, इर्नाकुलम में हड़ताल हुई, तो पुलिस ने हस्तक्षेप किया। मैं भी एक मजदूर संघ का प्रधान हूं। पुलिस ने हस्तक्षेप किया है। वे कहते हैं कि दिल्ली से ग्रनुदेश मिले हैं कि सरकारी क्षेत्र की रक्षा की जानी चाहिए। सरकारी क्षेत्र को एक उदाहरणीय नियोक्ता होना चाहिए। किन्तु स्थिति ऐसी नहीं है।

प्रधान मंत्री ने कहा है कि वे सरकारी कर्मचारियों की संख्या में 10 प्रतिशत कटौती नहीं कर रहे हैं किन्तु वे 10 प्रतिशत रिक्त स्थानों को नहीं भर रहे हैं। ग्रतः इसका ग्रर्थ भी 10 प्रतिशत संख्या कम करना ही है। इसके पीछे क्या नीति है ?

कांग्रेस सरकार ने वित्तीय कठिनाइयों के कारण ग्रनिवार्य जमा योजना चालू की थी ताकि धन की सप्लाई कम हो । ग्रब श्री एच० एम० पटेल भी वही कह रहे हैं क्योंकि वे भी नहीं चाहते कि मजदूरों को पैसा मिले । इस कानून के ग्रन्तर्गत यह योजना जून तक चलती है ग्रौर जुलाई में ब्याज

[श्री वयालार रवि]

सिंहत पांचवा हिस्सा वापस किया जाना है किन्तु कहा गया है कि वित्तीय कारणों से वे यह रकम वापस नहीं कर सकते । ग्रतः कांग्रेस ग्रीर जनता सरकार में क्या ग्रन्तर रह जाता है ?

जहां तक बोनस का सम्बन्ध है, मंत्री महोदय यहां बैठे हैं ग्रौर उन्होंने वायदा किया था कि बोनस ग्रिधिनियम में संशोधन किया जायेगा। ग्रतः उन्हें बोनस ग्रिधिनियम के निरसन का विधेयक लाना चाहिए ग्रौर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि मजदूरों को $8\frac{1}{3}$ प्रतिशत बोनस मिले।

मजदूरों के प्रबन्ध में भाग लेने के बारे में ग्राशा है कि मंत्री महोदय शीघ्र कार्यवाहीं करेंगे।

कर्मचारी राज्य बीमा योजना में 52 लाख कर्मचारी आते हैं। इस योजना में ऐसी संस्थाएं आती हैं जिनमें 20 से अधिक कर्मचारी हैं। संगठित श्रमिक यह योजना बिल्कुल नहीं चाहते हैं क्योंकि वे मालिकों के साथ किये गये समझौते के माध्यम से अच्छी चिकित्सा सुविधाएं प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि यदि वे इस योजना को नहीं चाहते हैं तो हमें उन पर यह योजना थोपनी नहीं चाहिए। मेरा मंत्री महोदय से निवेदन है कि इस योजना को उन प्रतिष्ठानों पर लागू किया जाये जिन में 20 से कम व्यक्ति हैं क्योंकि वहां मजदूरों को अपने नियोजकों से कोई चिकित्सा सहायता नहीं मिलती है। जहां तक कर्मचारी भविष्य निधि का सम्बन्ध है, हम जानो हैं कि नियोक्ता बकाया राशि का भुगतान करने का प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन अभी भी बकाया राशि, जो कि 18 करोड़ रुपये है, बहुत अधिक है। यह कहा जा रहा है कि भविष्य निधि आयुक्त के पास पर्याप्त कर्मचारी नहीं है। भविष्य निधि कार्यालय को स्वायता संस्था बना दिया जाना चाहिए ताकि उनके अधिकारों एवं प्राधिकारों में वृद्धि हो।

देश में 1 करोड़ 10 लाख बेरोजगार हैं लेकिन सरकार के पास उन्हें रोजगार देने की कोई व्यवस्था नहीं है। इन युवकों के लिए बेरोजगार बीमा योजना शुरू की जाये।

मजदूरों में भारी ऋगग्रस्तता है। मंत्री महोदय से मेरा निवेदन है कि ग्रौद्योगिक मजदूरों की ऋगग्रस्तता को समाप्त करने के लिए कुछ कदम उठाये जायें।

पत्तन कर्म चारियों ने हड़ताल की घमकी दी है। मंत्री महोदय को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह हड़ताल न हो प्रौर ग्रर्थव्यवस्था को किसी प्रकार की क्षति न पहुंचे।

श्रन्त में मेरा मंत्री महोदय से यह निवेदन है कि उन्होंने मजदूरों को जो श्राश्वासन दिया है कि उनकी शिकायतों की जांच की जायेगी और उनकी हालत में सुधार किया जायेगा। किन्तु मजदूरों का हमेशा शोषण किया जाता है श्रीर मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनका शोषण किया जाता रहेगा क्योंकि सताधारी पक्ष हमेशा विजयी रहता है। सताधारी पक्ष के हाथ में समस्त प्रचार साधन श्रीर सारा तंत्र होता है श्रीर सताधारी पक्ष हमेशा मजदूरों का शोषण करने का प्रयत्न करता है। मैं मंत्री महोदय को श्राश्वासन देता हूं कि जब वह मजदूरों के हितार्थ विधान लायेंगे तो हम उनका समर्थन करेंगे।

Prof. Shibban Lal Saksena (Maharajganj): I congratulate the Hon'ble Minister for his efficient handling of the labour problems during the last 3½ months. The settlement of the Indian Express dispute was really something very comm nuable. I am happy that he has been successful in solving it.

I would now draw his attention to the telegrams that I sent regarding Gorakhpur Labour Depot. This Labour Depot was set up in 1940 and went on functioning well up to 1973. Till then about 30,000 labourers were sent from there to work in the local units every year.

But after the nationalisation of Coal mines in 1973. This was stopped. Then I had advised the then Hon'ble Minister to continue this system but it was stopped. This is good Scheme and he should see that the old practice is continued.

We had set-up 6 big health centres in eastern U. P. with the unclaimed funds in the Labour Welfare fund. These centres are much helpful and should be continued. I invite him to Gorakhpur Depot and see himself the work done by us there for the workers.

The Government has reinstated the railway workers who had been dismissed during the emergency. But there are many institutions where this has been done. For example 1000 workers of Mahabir Jute Mills, Sahjanwa had been thrown out of employment for participating in the strike. Similarly 300 workers of Deoband Sugar Mill had been turned out. The Minister should use his good offices and see that these workers are reinstated.

In 1930 I had organised a united Sugar Mill Workers' Federation in 1930 which was later on named as All India Sugar Workers Federation. We made efforts to increase the wages of the workers from Rs. 5 to Rs. 30 at that time. It is a matter of regret that the minimum wages in the Sugar industry are very low even though it is a foreign exchange earner industry. Whereas the minimum wage in coal mines is Rs. 430, in Sugar factories it is on ly Rs. 240. He should see that justice is done to the workers of Sugar factories and their minimum wages are increased, which may be fixed at Rs. 400 per month. There is also need for having a national policy for fixing minimum wages in various industries so that these is a balanced development.

The post of Director General of Safety in Mines is lying vacant at Dhanbad for the last three years. It should be filled immediately so that the safety of the workers is ensured.

The workers of sugar industry have been demanding that they should be paid 50 per cent wages during the off-season. The Hon'ble Minister should pay attention to their demand.

It is also necessary that the bonus reduced during emergency is restored to $8\frac{1}{3}$ per cent and the amount of C. D. S. of the workers is paid to them.

The demand for nationalisation of sugar industry is being made for a long time but it has not yet been acceded. The capacity of the new industries should be increased to at least 2000 tonnes. This should be done without further delay and no compensation should be made to the mill owners.

Shri Ahsan Jafri (Ahme labad): The condition of labourers in the country is still deplorable. Justice has not been done to them even today. Measures should be taken to improve their living and working conditions. It is due to the labour of these workers that production takes place in the country but the actual producers are starving.

We have not so far evolved any policy in regard to a national minimum wage. The workers in the unorganised sectors are still being exploited. The agricultural labourers are not receiving even a subsistence wage. Government should state what they propose to do in this direction of fixing a minimum wage for these crores of agricultural labourers.

In the report a mention has been made of the bonded labour. It has been stated that in 10 states in the country there is bonded labour. It is not known as to how it has been concluded that other states do not have it. Whenever there are landlords there is bonded labour. In Gujarat there is bonded labour. I have got the names of such labourers who had taken some Rs. 200 or Rs. 400 some 15, 20 years ago. Still they are working with the landlord.

The workers in Gujarat contribute to E. S. I. Scheme about 11 lakhs of rupees but the expenditure that is incurred on them is only Rs. 7 lakhs. Hundred of workers are working in factories in the area adjoining to Surendernagar, Bhadoch and Ahmedabad but E. S. I. Scheme is not applicable to them. The arrangements for the medical treatment of workers and their families existed only at 9 E. S. I. Centres out of 14 working in Gujarat. In rest of these Centres the families of the workers do not get medical treatment.

The system functioning of labour courts have to be radically changed to that labour disputes may be decided more expeditiously. The Labour laws should contain provisions to ensure that in case a worker is thrown out of employment by an employer, whether in the public sector or private sector, be continues to get his pay till his case is decided by a competent Court.

[Shri Ahsan Jafri]

If it is not ensured, then the laws are nothing but the laws of the jungle. If any worker is turned out of the mill, he has to fight his case for 3-4 years. If he does not win his case, his condition becomes worse. Even if he wins his case, he looses his precious 3-4 years. Now I hope this will not happen under the rule of the new Government.

We have been telling the workers to increase the efficiency, but we have not paid any attention towards giving them facilities. As the big industries and sky scrapers are emerging in the country, the number of slums are also increasing. These slums are not fit for animals what to say of human beings. There are certain slums in Ahmedabad which are worse than hell. Out of 18 lakh population of Ahmedabad, 5 lakhs are living in slums without any sanitary conveniences and public, amenities. I would request the honourable Minister that some schemes should be chalked out to remove these insanitary slums from the country. A mention has been made in his report that 66 thousand houses were constructed from 1-1-76 to 31-12-76. If we constructed the houses at this speed, how can we expect to provide dwellings to the workers living in the slums?

We formulated a scheme for the agricultural labourers. Even to-day, in Surat the agricultural labourers are sitting before the office of the collector because the houses given to them by the Panchayat there in May have been dismantled. If these Jhuggi dwellers cannot be given good houses, why their jhuggies are demolished? I hope that Government would ensure that the labourers are not treated like this in future. I also request that codified labour laws should be made for the whole of the country. The unemployed should be given unemployment allowance and schemes should be formulated to ameliorate the lot of the labourers of the country and fulfil their aspirations.

Shri Manohar Lal (Kanpu): Mr. Chairman, Sir, I stand up to support the Demands for Grants of the Labour Ministry.

It seems that there are still some people who have not learnt any lesson from the fact that in spite of the many obstacles and hurdles, the masses of the country have confined the Indira Government and its Sanjay caucus under the debris, routed the Congress and gave the Janata Party an opportunity to form Government. I want to say that the Labour Minister should see to those officers of his ministry who had never favoured the workers and considered them as helpless and immature creatures. But they are not helpless and immature and they have understood the value of their vote. If rights given to them under our Constitution are not protected, these officers would snatch them. I hope the hon'ble Minister would take note of such officers.

Some body has rightly said "Indira is paying the price for its return to democracy in the form of labour unrest." It is absolutely correct because during the period of 19 months of emergency, the labour rights and interests were destroyed. For example, the right to bonus was taken away, compulsory deposit scheme was introduced, because of this, about two lakh workers resorted to strike upto the middle of May after the Janata party formed Government.

Shri Sathe was shedding crocodile tears and was talking about 60 crores of people. He said that Janata Party was formulating policies which would be only for the 2 crores of labourers who would be provided with employment. But I want to ask that who is responsible for the present deplorable situation. The Government and the officers have been destroying their rights during the last 30 years. It is that Government which is responsible for the increased unemployment in the country. But according to Government statistics, though these are incorrect statistics, 56 lakhs 15 thousand persons got themselves registered with the employment exchanges from January to December, 1976 and only 4 lakh 90 thousands got employment. It happened in 1976 when the Emergency was on and everybody was under the impression that very good work was being done. If the Janata Party also do not do anything, they will meet the fate of Congress because the people have become conscious of their rights and might—if the present prevailing conditions are not improved, the people will never forgive the Janata Party.

For the progress of any country, labour, capital and the production are the three important factors. If the labour relations are harmonious, capital is invested properly and the production is increased, a country can make tremendous progress. But unfortunately, the manpower has not been exploited during the last 30 years. That is why the country could not make any progress.

After the Janata take-over, the people of the country hope that their legitimate needs would be fulfilled and they would get employment and houses. But if they fail to get this, then the slogan that in the new era only the earner would eat and the exploiter would be uprooted, would prove a hallow slogan. So the honourable Minister should put checks on the capitalists who have amassed wealth of the country. He should reduce the working hours of the workers and ensure equal wages for equal work. The workers' religion is only to work hard. There is labour unrest in the country because equal wages for equal work have not been ensured. The main reasons for the labour unrest are the long standing wage disputes, rising prices, bonus issue, victimisation of workers and the old labour laws. If Government effect some improvements in this regard, the labour unrest will end. If there will be no labour unrest, the production will increase and that will reduce the inflation. It is said that if the instalment due on account of compulsory deposit scheme is paid to the workers, that will help in escalating the inflation. It is a strange race between the prices and inflation. But if the labour relations are improved, that will increase the production. The increased production will have effect on the inflation. A demand has been made that the workers should be associated with the management so that they may feel that they have a share in the industry. This will help in increasing production.

I want that bonus issue should be settled at once. Moreover, in spite of the repeated assurances, the workers turned out during emergency have not been taken back so far.

The labour courts are also not able to provide justice to the workers. In 1975, 63 thousand cases were submitted to the Labour Courts. Only 16 thousand cases were decided. The Labour Courts were constituted with a view to provide justice to the workers. But when the cases are not decided, how the workers can get justice? The mill owners can afford to linger on the cases for ten years as they are rich persons, but how can the workers, who are unable to arrange means for making their both end meet, fight the cases for long period. So, measures should be taken for the speedy disposal of these cases.

श्री के० ए० राजन (तिचूर): भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा एक सर्वेक्षण में कहा गया है कि वर्ष 1972-73 श्रीर 1973-74 के दौरान उत्पादन लागत तो बराबर ही रही है लेकिन इस श्रवधि के दौरान मुनाफे में भारी वृद्धि हुई है। 1973-74 में मजूरी, महंगाई भत्ता श्रौर बोनस इत्यादि के रूप में कर्मचारियों का भाग 1952 की तुलना में 63.6 प्रतिशत से घटा कर 38.2 प्रतिशत रह गया। कर्मचारियों की वास्तविक मजदूरी में कमी हुई है। लेकिन मूल्य वृद्धि श्रौर उत्पादन संकट के लिये भी ही उन पर ही इलाजाम लगाया जा रहा है। एक समेकित मजदूरी श्राय श्रौर मूल्य नीति बनाते समय हमें इन तथ्यों का ध्यान रखना चाहिये।

मजूरी नीति के सम्बन्ध में कई ग्रायोग बिठाए गए, जांच कराई गई ग्रौर मध्यस्थ निर्णय भी हुए। ग्रतः बातचीत के लिए ग्रधिक मजूरी बोर्डों, विपक्षीय वार्ताग्रों, मध्यस्थ निर्णयों ग्रथवा ग्रायोगों की ग्रावश्यकता नहीं है। इसका निपटारा द्विपक्षीय वार्ता द्वारा उद्योग-वार किया जाना चाहिये। प्रबन्धक वर्ग ग्रौर कर्मचारियों को मिल कर ग्रपने उद्योग के कार्यकरण के ग्रनुसार बैठ कर द्विपक्षीय बातचीत करनी चाहिये।

सरकार को 1957 के भारतीय श्रम स्रायोग के सिद्धान्तों के स्रनुरूप संगठित क्षेत्र के कर्मचारियों के लिये राष्ट्रीय न्यूनतम मजूरी और स्रावश्यकतास्रों पर स्राधारित मजूरी सुनिश्चित करनी चाहिये। संगठित क्षेत्र में न्यूनतम मजूरी 300 रुपये प्रति माह होनी चाहिये।

जहां तक कर्मचारियों को प्रबन्ध में भागीदार बनाने का सम्बन्ध है, ग्रापने 20 सूत्रीय कार्यक्रम में से एक सूत्र यह भी रखा था। भागीदार बनाने के लिये तो पूरे ढांचे में परिवर्तन करने की ग्रावश्यकता है। सभी कर्मचारियों को केवल उत्पादन में ही नहीं बल्कि प्रबन्ध में निचले स्तर से लेकर निदेशक स्तर तक भाग लेना चाहिये। उनकी भागीदारी प्रत्येक नीति में, चाहे वह मूल्य नीति हो, विक्रय नीति हो ग्रथवा क्रय नीति हो, सभी में हों सारे कार्य के संचालन में उनकी ग्रावाज होनी चाहिये। [श्री के० ए० राजन]

दूसरी बात यह है कि ग्राप किस प्रकार की ग्रौद्योगिक नीति बनाने जा रहे हैं। हम सुन रहे हैं कि ग्राप एक नई ग्रौद्योगिक नीति ला रहे हैं हम इसका स्वागत करते हैं। किन्तु मैं यही कहना चाहता हूं कि एक सुदृढ़ ग्रौद्योगिक सम्बन्ध तंत्र के तीन मुख्य ग्राधार होते हैं यथा, संगठन का ग्रिधकार, सामूहिक बातचीत का ग्रिधकार ग्रौर हड़ताल का ग्रिधकार। हड़ताल के ग्रिधकार को प्राप्त करने के लिए कर्मचारियों ने संघर्ष किया ग्रौर उन्हें यह ग्रिधकार प्राप्त भी हुग्रा। यह बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि यूनियनों की विविधता ग्रौर यूनियनों में ग्रापसी दुश्मनी के कारण कर्मचारी वर्ग पर बुरा ग्रसर पड़ता है। ग्रतः गुप्त मतदान के ग्राधार पर किसी यूनियन को मान्यता प्रदान की जानी चाहिये। मान्यता प्राप्त यूनियन को ही समूचे उद्योग के लिये एक मात्र बातचीत करने वाली एजेन्सी होना चाहिये।

कर्मचारी वर्ग में बहुत ही ग्रसन्तोष है। ग्रगर ग्राप देश की यात्रा करें तो ग्रापको प्रदर्शन, सत्याग्रह, हड़तालें, तालाबन्दी ग्रौर शोषण ही देखने को मिलेगा। हमारे राज्य में मार्डन बेकरी के कर्मचारी ग्रौर एच०एम०टी० के कर्मचारी हड़ताल पर हैं। पूनालूर पेपर ग्रौर डालमिया कम्पनी भी बन्द पड़ी हैं। मैं ग्राशा करता हूं कि सरकार इन एकाधिकारियों ग्रौर बड़े उद्योगपितयों ग्रौर लालची लोगों को कर्मचारियों का शोषण नहीं करने देंगी। मुझे ग्राशा है कि सरकार देश की ग्रर्थ-व्यवस्था को पूजीवादी ग्रौर बड़े एकाधिकारियों के कहने पर बरबाद नहीं होने देगी।

मेरा नम्प्र निवेदन है कि एक सुदृढ़ श्रौद्योगिक सम्बन्ध नीति बनाई जानी चाहिये श्रौर श्रावश्यकता पर श्राधारित न्यूनतम मजूरी नीति होनी चाहिये। प्रबन्ध में श्रमिकों की साझेदारी की व्यवस्था में सुधार किया जाना चाहिये श्रौर श्रमिकों को ग्रपना उचित हक मिलना चाहिये। राष्ट्रीय संकट के समय श्रमिकों ने राष्ट्र का साथ दिया है जब कि सरकार से संरक्षण मांगने वाले दूसरे वर्ग ने राष्ट्र-संकट की घड़ी में श्रपनी वफादारी साबित नहीं की है। बोनस के लिये श्राप सिद्धान्त रूप में तो सहमत हो चुके हैं, उसके बारे में नीति घोषित की जानी चाहिये श्रौर विवादों को द्विपक्षीय बातचीत द्वारा हल किया जाना चाहिये।

श्री चित्त बसु (बारसाढ): मैं श्रम मंत्रालय के नियंत्रणाधीन ग्रनुदानों की मांगों का समर्थन करता हूं ग्रीर हमारे देश में श्रम के क्षेत्र में ग्राज हो रही कुछ गम्भीर नवीन घटनाग्रों की ग्रीर घ्यान देने का ग्रनुरोध करता हूं। विगत बीस महीनों में श्रमिक ग्रीर विशेष रूप से संगठित श्रमिक ग्रापातकाल की कठिनाइयों का शिकार हुए हैं। ग्रापातकाल में ग्रीद्योगिक सम्बन्धों का उद्देश्य उत्पादन ग्रीर उत्पादिता को बढ़ाना था। यह कहना निराधार है कि श्रमिक उत्पादन ग्रीर उत्पादिता बढ़ाना नहीं चाहते परन्तु प्रश्न यह है कि क्या उन्हें बढ़े हुए उत्पादन ग्रीर उत्पादिता से प्राप्त लाभ में उचित हिस्सा दिया जायेगा मेरा ग्राज विपक्ष में बैठे नेताग्रों पर ग्रारोप है कि उन्होंने श्रमजीवी वर्ग को इस न्यायोचित ग्रीर उचित हिस्से से वंचित रखा है। लेकिन श्रमजीवी वर्ग में वंचित किये जाने की भावना ग्राज भी व्याप्त है। मेरा श्रम मंत्री से ग्रनुरोध है कि नई श्रम सम्बन्धी नीति घोषित करते समय इस पहलू को ध्यान में रखें।

पहली सरकार की यदि कोई श्रम नीति थी, तो वह मजदूरी में वृद्धि पर रोक लगाने मान्न की नीति थी, जो उसने पश्चिम के विकसित प्जीवादी देशों से नकल की थी। इन पश्चिमी पूजीवादी देशों में मजदूरी में वृद्धि पर रोक के साथ-साथ मूल्यों में वृद्धि पर रोक की नीति भी ग्रपनाई जाती है जबकि भूतपूर्व सरकार ने मजदूरी में वृद्धि पर तो रोक की नीति ग्रपनाई परन्तु मूल्य वृद्धि पर कोई रोक नहीं लगाई । मजदूरी में वृद्धि पर रोक की नीति इस गलत सिद्धान्त पर ग्राधारित थी कि इससे मुद्रा स्फीति रुकती है। मैं इस बारे में विशेषज्ञों की राय बताना चाहूंगा। 8 जुलाई, 1974 को इकॉनामिक टाइम्स के अनुसंधान ब्यूरो के अध्ययन में कहा गया है कि श्रौद्योगिक कच्चे माल और निर्माण के क्षेत्र में रुख को देखते हुए पता चलता है कि मुख्य रूप से कच्चे माल और पूंजीगत उपकरणों के मूल्यों में मुख्य रूप से वृद्धि हुई है न कि मजदूरी में वृद्धि जैसा कि सामान्यतः समझा जाता है। वेतन वृद्धि पर रोक का सिद्धान्त वेतन-वस्तुएं-मुद्रास्फीति के गलत सिद्धान्त पर ग्राधारित था और यह सिद्ध हो गया है कि यह सिद्धान्त पूर्णतः गलत है।

इसके स्रतिरिक्त मजदूरी का भाग निरन्तर कम होता गया है। रिजर्व बैंक स्राफ इंडिया बुलिटिन के नवीनतम स्रांकड़ों के स्रनुसार कर्मचारियों को पारिश्रमिक का भाग 1973-74 में 15.5 प्रतिगत से 1975-76 में घट कर 14.8 प्रतिशत हो गया। स्रतः सरकार को भिन्न दृष्टिकोण से
मुद्रा-स्फीति का सामना करना होगा। श्रमिकों को वास्तविक मजदूरी कम हुई है।
1972 में वास्तविक स्राय सूचकांक 199 में था जो स्रब घटकर केवल 103 रह गया है।
वेतन वृद्धि पर रोक की नीति के लिये उत्तरदायी कौन था, नियोजक गूंजीपति, एकाधिकारी
स्रीर बहुराष्ट्रीय कम्पनियां, जिन्होंने भारी लाभ कमाया। उत्पादन में परिचालन
लाभ की प्रतिशतता 1973-74 में 5.7 से बढ़कर 1974-75 में 6.2 हो गई। रिजर्व बैंक
बुलेटिन में कहा गया है कि 1974-75 में कराधान से पूर्व लाभ 100 करोड़ से स्रधिक हो गया
स्रथित गत वर्ष की तुलना में 36.8 श्रतिशत की वृद्धि हुई। मैं मंत्री महोदय से स्रनुरोध करता
हूं कि वेतन वृद्धि पर रोक की इस नीति को उलटी दिशा में चलाना चाहिये, स्रनिवार्य जमा योजना
समाप्त की जानी चाहिये, बोनस स्रधिनियम बनाया जाना चाहिये, महंगाई भत्ते में मूल्यवृद्धि के स्रनुरूप
गा-ातिशन वृद्धि होनी चाहिये। तब ही भूतगूर्व सरकार की श्रमजीवी वर्ग-विरोधी नीति को
ठीक किया जा सकता है।

नई श्रम नीति का ग्राधार श्रमिकों को (1) ग्रानिवार्य जमा की पूर्ण राशि का एकमुश्त भुगतान (2) संशोधित बोनस ग्राधिनियम का निरसन ग्रौर पिंक्लिक सैक्टर सिंहत सभी श्रमिकों को 8.33 प्रतिशत न्यूनतम बोनस का भुगतान ग्रौर (3) क्रमिक रूप में ग्रावश्यकता पर ग्राधारित न्यूतम वेतन लागू करना, होना चाहिये।

मत्री महोदय ने श्रौद्योगिक सम्बन्धों का ढांचा बदलने के बारे में कहा इस बारे में मैं केवल इतना ही कहूंगा कि सरकार को इन मूल समस्याश्रों के बारे में श्रन्तिम निर्णय करना होगा, श्रथीत् (क) बढ़े हुए उत्पादन श्रौर उत्पादिता के लिये श्रमिकों को उचित प्रतिकर, (ख) सामूहिक बातचीत का श्रधिकार, (ग) शासन की विनियामक भूमिका सम्बन्धी सीमाएं श्रौर (घ) समझौता श्रिकरती (बार्गेनिंग एजेन्ट) का निर्धारण श्रौर मान्यता । इसके श्राधार पर ही श्रौद्योगिक सम्बन्ध नीति का नया ढांचा तैयार किया जाना चाहिये । श्रौद्योगिक सहयोग श्रौर शान्ति हासिल करने के लिए नई सरकार को श्रपना दृष्टिकोण बदलना होगा । श्रपना निर्णय बदलना होगा श्रन्यथा कार्यभार श्रपने न्यायोचित श्रधिकारों को मनवाना जानते हैं । सरकार को श्रौद्योगिक शान्ति कायम रखने के लिए एक नई मजदूर नीति श्रपनानी चाहिए श्रौर पिछली व्यर्थ प्रक्रिया को समाप्त करना चाहिए ।

सभापति महोदय : सभा 6.40 म० प० तक वैठेगी।

श्री रवीन्द्र वर्मा : शानिवार को हम इस बात से सहमत हुए थे कि यदि श्रावश्यक हुग्रा तो श्रम मंत्रालय की मांगों पर विचार करने के लिए सोमवार को हम 6 बजे बाद भी कुछ समय के लिए वैठेंगे। मैं विपक्ष के सहयोग का ग्रनुरोध करूंगा।

Shri Ram Awadesh Singh (Vikcamgai i): The present labour minister has devolved with a new responsibility. He has to maintain balance between labour and industrialists. This ministry has been under the influence of Capitalists and bureaucrats for the last thirty years. One is surprised to know that as many as two dozens of labour laws were made during the period of 1947 to 1957 but no relief has been provided to workers. The capitalist blocked the implementations of several provisions of these laws with the help of money. A number of labour laws enacted, provided for imprisonment or fine, if certain employer violated certain provisions thereof. Employers do not mind paying fines. If a provision is made for imprisonment only then the employer would be afraid of being jailed and would not dare to violate the laws.

There is Industrial Dispute Act which should have been the Industrial Relations Act. There are about seven stages in this act which r required to be passed through to reach a final settlement. But these stages breed new problems. This act should, therefore, be amended so as to have better and harmoneous relations between the employees and the employers. Similarly, Trade Union Act also needs amendment in the present context.

Now I wish to draw hon. Minister's attention towards the miserable plights of agriculture labour. Their condition is worse than that of the factory workers. They are not paid minimum wages. There are instances where labour is paid Rs. 8/- per day. They should be brought under the purview of minimum wages act. They have proper ho ses to live in. Men and animals live in the same jhopari. They have no monomal y to get medicines for their ill children. They get money on loan from landlords at a premium of 25 to 40 per cent interest. The educated labour with sound health in my district Bhojpur-Rohtas, who demanded wage according to the provisions of law was turned as Naxalite and shot dead by the police with the connivance of landlords. Wherever the agricultural labour rais their voice for his right, for protecting the modesty of his daughter, he is termed as criminal and shot dead. I shall request the Minister to have a study of the situation in Bhojpur-Rohtas district and stop atrocities on Harijans.

*श्री कें राममूर्ति (धर्मपुरी) : कई सदस्यों ने कहा है कि सारे देश में मजदूरों की हालत वड़ी दयनीय है । यह भी कहा गया कि वर्तमान मजदूर कानून मजदूरों के लिए लाभदायक सिद्ध नहीं उए श्रीर श्रब वे पुराने पड़ गए हैं। तिमलनाडु श्रीर श्रन्य दक्षिणी राज्यों में त्योहारों का मौसम नजदीक श्रा रहा है । यह स्वाभाविक है कि वहां के कामगार इस मौके पर श्रपना बोनस मांगेंगे। मैं मंत्री जी से श्रन्रोध करूंगा कि वे बोनस संशोधन विधेयक शीघ्र पेश करें।

मालिकों के लेखे की जांच चार्टर्ड लेखापालों द्वारा की जाती है । यह जांच ऊपरी होती है ग्रौर इससे पंजीवादी करोड़ों रुपये का काला धन बना लेते हैं जैसा कि ग्रापातकालीन स्थिति के दौरान स्वैच्छा से घोषित सम्पत्ति से स्पष्ट हो गया था । इस प्रिक्रिया को बदला जाना चाहिए ग्रौर मैं मंत्री जी से ग्रनुरोध करूंगा कि वे इस प्रकार की विधि निकालें जिससे मजदूर संघों को चार्टर्ड एकाउटेंटों द्वारा जांच किये लेखे की पुन: जांच करने का ग्रिधकार दिया जा सके ।

मजदूर संघों को चार्टर प्राप्त लेखाकारों द्वारा लेखा परीक्षित लेखों को पुनः लेखा परीक्षा करने का ग्रधिकार प्राप्त होना चाहिए ।

भूमि कानूनों से श्रमिकों को शीघ्र न्याय नहीं मिलता है ।

जनता दल के सदस्यों ने ग्रापातिस्थिति के दौरान श्रिमकों पर की गयी ज्यादितयों का उल्लेख किया है । परन्तु मेरा स्वयं का ग्रनुभव यह है कि श्रिमकों को ग्रापातिस्थिति में लाभ पहुंचा है । मेरे निर्वाचन क्षेत्र में उद्योगपितयों द्वारा श्रिमकों को न दी जाने वाली मजदूरी भारतीय रक्षा नियमों के ग्रधीन विना किसी विलम्ब के निर्धारित हो गयी।

^{*}तामिल में दिए गए भाषण के ग्रंग्रेजी ग्रनुवाद का संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर।

यह कहा गया है कि ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम के ग्रन्तर्गत विवाद के निपटारे के लिए सरकारी क्षेत्र के श्रीमक को न्यायालय में जाने सम्बन्धी ग्रिधिकार से वंचित किया जा रहा है । सरकारी क्षेत्र हो ग्रथवा गैर-सरकारी क्षेत्र प्रत्येक श्रीमक को किसी विवाद के निपटारे के लिये ग्रदालत में जाने का हक होना चाहिए । किसी मंत्रालय के किसी ग्रिधिकारी को उन्हें इस हक से वंचित करने का ग्रिधिकार नहीं होना चाहिए ।

कुछ राज्यों में खेतिहर मजदूरों की मजदूरी कानूनी तौर पर निर्धारित की गयी है। माननीय मंत्री जी से मेरा अनुरोध है कि वह मजदूरी का निर्धारण अखिल भारतीय आधार पर करायें। वर्तमान व्यवस्था पर्याप्त नहीं है। मेरा सुझाव है कि कृषिक न्यूनतम मजदूरी अधिनियम को कार्यान्वित करने के लिए प्रत्येक राज्य में एक सक्षम और सशक्त प्रशासनिक इकाई स्थापित की जाए। इसमें देरी नहीं की जाए।

तमिलनाडु में बीड़ी उद्योग, दियासलाई निर्माण उद्योग में लगे लाखों मजदूर कारखाना म्रिधिनियम, न्यूनतम मजूरी म्रिधिनियम के म्रन्तर्गत नहीं म्राते हैं। माननीय मंत्री जी उनकी शिकायतों पर ध्यान देकर कम से कम न्यूनतम मजूरी के लिए सांविधिक रूप से उनको संरक्षण प्रदान करें।

ग्रन्त में मेरी मांग यह है कि श्रम कानूनों में संशोधन किया जाए जिससे श्रमिकों की वास्तविक शिकायतें दूर की जा सकें। बोनस संशोधन विधेयक भी शीघ्र लाया जाए जिससे श्रमिकों को त्योहारों से पूर्व बोनस मिल सके।

Shri Harikesh Bahadur (Gorak! pur) In our country workers are exploited by capitalists in the private sec or and by bureaucrats in the public sector. The Government should, therefore, nationalise big industries. By doing it Government will be in a position to provide necessary security to workers and have under its control a siz able portion of capital.

The Government should restore the right of workers to get bonus which was taken away by the previous Government.

In regard to sugar mills I would like to say that in U.P. and Bihar these mills should be nationalised. In these mills condition of workers is very bad. They are being exploited by mill owners. The Government should take an early decision in this matter.

Condition of handloom workers is very bad. A number of workers have been thrown out of employment. Steps should be taken to improve the lot of these workers.

Electricity and roadways workers are harassed in many ways when they fight for their demands. They are suspended and transferred. I would, therefore, request the honourable Minister to pay attention to their grievances.

In Railways and L.I.C. casual workers are not being regularised though they have been working on daily wages for years together. These workers should be regularised.

There are so many persons who are without jobs even after getting training under the apprenticeship scheme in the Railways and Fertilizer Corporation. These people should be provided employment.

The Government should have a national wage policy because condition of agricultural workers is very bad.

There should be worker's participation in the management. The Government should take steps to achieve this goal.

श्री एन० श्रीकान्तन नायर (निवलोन) : कांग्रेस सरकार मजदूर वर्ग के साथ खिलावड़ करती रही। पहले तो 4 प्रतिशत बोनस को बढ़ाकर $8\frac{1}{3}$ प्रतिशत किया गया ग्रौर ग्रापात स्थिति में इसे समाप्त हो कर दिया गया। सरकार को बोनस नीति पर शीघ्रातिशीघ्र निर्णय लेना चाहिए।

[श्री एन० श्रोकान्तन नायर]

सरकारी क्षेत्र में एक-तिहाई संगठित मजदूर वर्ग को न्यायाधिकरण को ग्रपना मामला पेश करने का ग्रधिकार नहीं है । यह सभी विवादों की जड़ है । इस मामले पर शीघ्र निर्णय लिया जाना चाहिए ।

जिन कर्मकारों को जहां भी भविष्य निधि ग्रौर उपदान का कानूनी ग्रधिकार प्राप्त नहीं है, उन्हें वहां यह ग्रधिकार मिलना चाहिए।

सभापति महोदय: माननीय मंत्री जी कल इसका उत्तर देंगे।

तत्पश्चात् लोक सभा मंगलवार, 12 जुलाई, 1977/21 म्राषाङ, 1899(शक) के 11 बजे तक के लिए स्थिगत हुई ।

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the clock on Tuesday, July 12, 1977/ Asadha 21, 1899 (Saka)